गां
धी
जी

श्रद्धाञ्जलियाँ

२

सूची

❀

चित्र सूची

❀

प्रकाशकका वक्तव्य

बापूके चरणोंमें श्रद्धांजलियोंका दूसरा खण्ड समर्पित करते हुए हमें इस बातका सन्तोष है कि हमारे इस किंचित प्रयासका सारे देशने समुचित आदर किया है। 'ग्रंथमाला' का प्रथम खण्ड छपते ही समाप्त हो गया। उसकी पुनरावृत्तिका आयोजन हो गया है। देशके हर कोनेसे ग्रंथमालाकी माँग बराबर बढ़ती जा रही है। बापूकी वाणीको हर प्राणी तक पहुँचानेका हमारा प्रयास सफल होगा, ऐसी हमारा आशा है।

द्वितीय खण्डके प्रकाशनमें सामग्री संकलनमें कुछ विलंब हुआ। अब ऐसी व्यवस्था हो चुकी है कि एक महीनेके अन्तरपर एक खण्ड प्रकाशित हो सकें।

इस ग्रंथके संपादन तथा अनुवादमें सर्व श्री विद्यारण्य शर्मा, के० एस० सुन्दरम्, प्रकाशराव तथा पी० वी० शिवरामरावने अमूल्य सहायता दी है।

बापूके विचारोंके प्रसारमें हमें उत्साहवर्द्धक सहयोग देशसे मिल रहा है। आशा है भविष्यमें भी यह सहयोग मिलता रहेगा।

❀

आभार प्रदर्शन :

आल-इण्डिया रेडियो : नयी दिल्ली, मद्रास, पटना, जलन्धर, शिलांग — श्रद्धाञ्जलियोंके लिये

मिनिस्ट्री आफ इनफारमेशन एण्ड ब्राडकास्टिंग, नयी दिल्ली — चित्र तथा श्रद्धाञ्जलियोंके प्रकाशनकी अनुमतिके लिए

माननीय श्रीप्रकाश, पाकिस्तान स्थित हिन्दके हाई-कमिश्नर — मुख-पृष्ठके चित्रके लिये

श्री कमलकुमार, चित्रकार, दिल्ली — चित्रोंके लिये

श्री रामनाथ अग्रवाल, मालिक लक्ष्मी फोटो एनग्रेविंग कम्पनी, इलाहाबाद — सुन्दर ब्लाकोंके लिये

ईगल प्रिंटिंग वर्क्स, कलकत्ता — सुन्दर मुखपृष्ठकी छपाईके लिये

'हरिजन-सेवक' अहमदाबाद — श्री प्यारेलाल तथा डाक्टर सुशीला नायरके लेखोंके लिये

❁

आमुख

'गांधीजी' ग्रन्थमालाका दूसरा खंड हम प्रस्तुत कर रहे हैं। इस खंडमें भी श्रद्धाञ्जलियाँ हैं। श्रद्धाञ्जलियोंमें व्यक्तियोंने अथवा संस्थाओंने विवशता तथा वेदनाके आंसू ही नहीं गिराये हैं, बापूकी विशेषताओंका वर्णन भी है। इन श्रद्धाञ्जलियोंमें हम केवल बापूके भक्तोंकी सूची नहीं एकत्र कर रहे हैं, उनके व्यक्तित्वका प्रतिबिंब शब्दोंमें अंकित कर रहे हैं। इन्हें पढ़नेसे हम उस महान आत्माको स्मरण ही नहीं करते उसे अपने सम्मुख चित्रवत् देखते भी हैं।

आजसे शतियोंके बाद बापूके विचारोंपर जब लोग मनन करेंगे, उनकी शिक्षाकी गहराईका अनुभव करेंगे और उनके सिद्धांतोंकी सचाई समझेंगे तब इन श्रद्धाञ्जलियों द्वारा लोगोंपर प्रकट होगा कि उनकी शिक्षा मानवके कानोंमें पहुँच गयी थी किंतु मनुष्य अपनी दुर्बलताके कारण कर्तव्यके क्षेत्रमें उन्हें ला न सका। बापू पूर्ण थे, मानव अपूर्ण था ; उनकी सीमातक पहुँच न सका।

यदि हम उन सब श्रद्धाञ्जलियोंको स्थान देते जो लोगोंने अयाचित अर्पित की हैं और जिसके द्वारा लोगोंने अपने हृदयकी भावना, वेदना तथा भक्ति प्रदर्शित की है तो हमें इस ग्रन्थमालाका विस्तार और भी बढ़ा देना पड़ता। कहीं कहीं हमें संक्षेप भी करना पड़ा है, जिसके लिए हम विवश थे। विश्वका कौन ऐसा व्यक्तित्व था जिसने उनके लिये आँसू नहीं गिराये। उन्हीं आँसूकी बूँदे हमने एकत्र की हैं।

बापूकी शिक्षा तो लोगोंके जीवनके उत्कर्षके लिए है ही, एवं आँसूकी बूँदों द्वारा भी हमारे हृदयकी मलिनता धुल सकती है। जिस भाँति तथागत और उनके शिष्योंके संवादको पढ़कर आज भी बोधिसत्वकी विशालताका आभास

मिलता है, उसी भाँति इन्हें पढ़कर भी विश्वबंधुत्वकी भावनाका आदर्श या बलि-दान होनेकी क्षमताका चित्र हमारे समक्ष उपस्थित होता है। जिस प्रकार भगवानके गुण-गानसे हमारे मनके कल्मष धुल जाते हैं उसी प्रकार इन्हें पढ़नेसे भी हमारे हृदयमें सात्विक वृत्तियोंका उदय होता है। इसी भावनासे प्रेरित होकर इनका समुचित संकलन किया गया है।

इन श्रद्धाञ्जलियोंमें भी हमने भाषाकी नीति वही रखी है जो इस ग्रंथ-मालाके पहले खण्डमें थी। श्रद्धालुओंकी जो वाणी रही है वही रहने दी गयी है।

—संपादक मंडल

❀

राष्ट्र-पिता

आहत बापू दुर्घटना-स्थलसे तुरंत बिड़ला-भवन पहुँचाये गये। वहाँ भय, आशंका और विषाद भरे बापूके परिवारके सदस्यों और भक्तोंकी भीड़ लग गयी।

मद्रास

माननीय सर आर्चिबाल्ड नाय

[गवर्नर : मद्रास]

ऐसे शब्द ही नहीं हैं जिनके द्वारा कोई भी अपना शोक और इस नारकीय अपराधके प्रति घृणा प्रकट कर सके।

मुझे तो ऐसा ज्ञात होता है कि ऐसा नेतृत्व किसी देशको नहीं प्राप्त हुआ। आज अनेक राष्ट्र चाहते हुए भी ऐसे नेता नहीं पा रहे हैं। यह इस देशका ही सौभाग्य है कि उसे ऐसा विश्व-विख्यात व्यक्ति और महान चरित्रवाला पुरुष नेताके रूपमें मिला।

महात्मा गांधी सदैव संयम और सहिष्णुताका उपदेश करते रहे और सबके प्रति प्रेमभाव रखनेकी शिक्षा देते रहे ; और आज, जब भारतके सम्मुख कठिनाइयों और परीक्षाओंका अवसर है, इन्हीं सिद्धांतोंके प्रचारकी सर्वाधिक आवश्यकता है।

o o o

उज्ज्वल देश-भक्त, विश्व-नागरिक तथा मानवताके सच्चे सेवक महात्मा गांधीके निधनकी इस भयंकर विपत्ति बेलामें, हम उस मुक्तात्माकी स्मृतिमें अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते है। हम आज अपना दृढ़ निश्चय प्रकट करते हैं कि हम भारतके नागरिक अपनी समस्त शक्ति और लगनके साथ उस सहिष्णुता, सद्भाव और करुणाकी भावनाके प्रचार और प्रसारमें सदा सचेष्ट रहेंगे जो महात्माजीमें सर्वोच्च आदर्शकी भाँति प्रज्वलित थी तथा जिनकी साधनामें उन्होंने अपना जीवन होम कर दिया।

भारतीय जनताको महात्माजीके उन उपदेशोंका अक्षरशः अनुसरण करना चाहिये जिनका वे अपनी वाणी और कृतियों द्वारा सदा उपदेश देते रहे। उनके पथपर चलकर ही हम भारतको एक शक्तिशाली राष्ट्र बना सकते हैं। यद्यपि समस्त विश्वमें उनका नेतृत्व आदृत था तथापि संसारके कोने-कोनेसे समर्पित की जानेवाली श्रद्धाञ्जलियोंने उनकी वास्तविक महिमा और गरिमा प्रकट की। ऐसे महामानवका समकालीन होना सचमुच ही हमारा परम सौभाग्य था।

माननीय आर० बी० रामकृष्ण राजू

[अध्यक्ष : मद्रास कौंसिल]

गांधीजीका अवतार-कृत्य समाप्त हुआ। यों तो भारतमें अनेक अवतार हुए और उनका निर्वाण हुआ किन्तु हममेंसे किसीने यह नहीं सोचा था कि गांधीजी इस तरह चले जायँगे। कुछ लोगोंने कहा है कि गांधीका अर्थ है भारत और इसीसे प्रभावित होकर लोगोंने यह कल्पना की कि जबतक भारत है, तबतक गांधीजी रहेंगे। सत्य और अहिंसाके सिद्धांतोंकी प्रतिष्ठाके लिए ही ईश्वरमें अटल भक्ति रखकर वे मृत्युको भी यदाकदा आमंत्रण देते थे, उससे संघर्ष करते थे, और अंतमें उसपर विजय भी प्राप्त कर लेते थे। उनकी यह साधना तथा क्षमा-शक्ति एवं साहस देखकर ही लोगोंने उन्हें असाधारण मानव समझा और यह समझा कि कोई दैवी शक्ति उनमें वर्तमान है। उन्हें लोग मृत्युंजय भी समझने लगे थे। उनके इस क्रूर निधनसे ऐसी भावना होती है कि ईश्वरको भी उनके यशसे द्वेष हो गया था, इसीसे उनका अंत हुआ। फिर भी शोक क्यों करें, क्योंकि जिसका जन्म हुआ है, उसका निधन भी अवश्यंभावी है।

पहले उनका लक्ष्य था भारतवर्षको स्वतंत्र करना, किंतु बादमें क्रमशः उनके विचार विकसित हुए और उनका आदर्श हुआ सारे मानव-समुदाय और विश्वकी सुरक्षा तथा कल्याणके लिए प्रयत्न करना। सब राष्ट्रों, सब देशों और सब धर्मोंकी स्वतंत्रताके साथ ही उन्होंने भारतकी स्वतंत्रताके लिए भी आवाज उठायी। वह सदा यही कहते थे कि भारतकी स्वतंत्रतासे न केवल भारतका हित होगा, किंतु इससे ब्रिटेनका भी मान और महत्त्व बढ़ेगा। यही उसकी स्थितिके लिए आवश्यक भी है। वह अंग्रेजोंके भी मित्र थे।

० ० ०

आज सारा देश उस अनाथ बालककी भाँति रो रहा है जिसने अपने पिताको खो दिया हो। सारा संसार उस महापुरुषके अभावमें विलख रहा है। यदि आज सारी दुनिया पारस्परिक घृणा-द्वेषका अंत कर दे और एक परिवारकी भाँति रहे तो आज भी वे शहीद कहे जा सकते हैं। ईश्वर करे, आज विश्वके कोने-कोनेमें गांधीजीकी जो अस्थियां प्रवाहित हुई हैं उनसे दिव्य ज्योति प्रकट हो और क्रोध, लोभ, द्वेष आदि उन आसुरी शक्तियोंको, जिनके कारण मानवता पशुताकी श्रेणीमें आ गयी है, पराभूत करे। सर्वे जनाः सुखिनो भवन्तु। ओम् शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः।

❀

माननीय जे० शिवषण्मुखम् पिल्लै

[अध्यक्ष : व्यवस्थापिक-सभा मद्रास]

महात्माजीकी मृत्युसे हमारे देशका महान नेता और विश्वका श्रेष्ठ शांति-स्थापक उठ गया। उनका निधन केवल हमारे ही देशकी नहीं समस्त विश्वकी क्षति है। इस देशकी परस्पर लड़नेवाली विभिन्न जातियों और संप्रदायवालोंमें एकता स्थापित करते हुए उनका आपसी विरोध दूर करना, गांधीजीके जीवनका प्रधान लक्ष्य रहा है। उनके निधनसे हम सभी स्तब्ध हैं। इस आघातसे सभी ऐसे दुःखी हो रहे हैं जैसे उनके घरोंमें ही मातम हो। दूसरे शब्दोंमें, मद्रासके ईसाइयोंके हृदय इस शोक-समाचारसे इतने प्रभावित हैं, उनके मुखोंपर ऐसी उदासी छा गयी है मानों उनके घरके ही किसी प्राणीकी मृत्यु हो गयी हो। मेरा निवेदन है कि कमसे कम आजसे ही हम गांधीजीके उपदेशोंका पालन करें।

० ० ०

महात्माजी महान थे। उनका व्यक्तित्व उज्ज्वल था। अछूतोंके प्रति सवर्ण हिन्दुओंका हृदय परिवर्त्तन करानेमें और कोई दूसरा नेता सफल नहीं हो सकता था।

❀

माननीया श्रीमती सी० अन्नमराजा

[उपाध्यक्षा : व्यवस्थापिका सभा, मद्रास]

आज बाल-वृद्ध सभी शोकमग्न हैं। अब गरीबों और असहायोंका कौन सहायक रहा? अब कौन हमें प्रेम और अहिंसाका उपदेशामृत देगा? अब न हम उस दिव्य मूर्तिका दर्शन ही कर सकेंगे और न उसकी मधुर वाणी सुन सकेंगे। अब हमारा कौन पथ-प्रदर्शन करेगा? क्या ऐसा भी कोई मूर्ख हो सकता है जो जिस डालीपर वह बैठा हो उसे ही काटे। हम कितने अभागे हैं! हमने यह कभी सोचा भी न था कि विश्ववंद्य अजातशत्रु बापूकी इस क्रूर ढंगसे हत्या होगी। जो कुछ हो, सतका असत् शत्रु होता ही है।

इसे अपनी ही हानि समझकर आज सभी ऐसे रो रहे हैं, मानो उनके किसी घनिष्ठ मित्रका ही निधन हुआ हो। किन्तु शोक व्यर्थ है। हम सभीको यह शपथ लेनी चाहिये कि हम गांधीजीका पदानुसरण करेंगे। जो कुछ उन्होंने कहा उसे कर दिखाया। उन्होंने इसे प्रत्यक्ष कर दिखाया कि दुनियामें उच्चादर्श लेकर जीना कठिन नहीं है। यदि हम उनके सिद्धान्तोंपर चलें तो हम उनकी इच्छा-पूर्त्ति कर सकेंगे। यदि हम वस्तुतः गांधीजीको प्यार करते हैं तो प्रेम, सहिष्णुता,

और समताका प्रचार करना हमारा कर्त्तव्य है। तभी हम अपनी मातृभूमिको यशोमयी, सुखी, शान्त और समृद्ध बना सकेंगे।

❀

मानतीय ओ० पी० रामस्वामी रेड्डियर

[प्रधान मंत्री : मद्रास]

आज सारा राष्ट्र शोकमग्न हो गया है। कितने दुःखकी बात है कि इस युगके महापुरुषकी नृशंस हत्या उसी भूमिपर हुई, जहाँ उनका जन्म हुआ और जिसकी स्वतंत्रता-प्राप्तिमें उन्होंने आत्मार्पण कर दिया।

० ० ०

वर्ग-रहित समाजकी स्थापना ही वस्तुतः महात्माजीका सर्वश्रेष्ठ स्मारक होगा। दलित वर्गकी आर्थिक उन्नतिमें सारी शक्ति लगाना ही उस दीनबंधुके प्रति सबसे बड़ा आदर-प्रदर्शन है।

❀

श्री तङ्गुतुरी प्रकाशम्

[भूतपूर्व प्रधान मंत्री : मद्रास]

महात्माजीका निधन सुनकर साधारणतः किसीको विश्वास ही नहीं होता। जो उत्पन्न होता है यद्यपि वह अवश्य ही मरता है, तथापि मृत्युकी वेलामें जिसके हृदयमें कोई कामना नहीं रहती है उसका पुनर्जन्म नहीं होता है, वरन वह मोक्ष प्राप्त करता है। महात्माजीका जिस समय महाप्रयाण हुआ, उस समय वह सांसारिक इच्छाओंसे परे थे। हत्यारे द्वारा उनका वध यद्यपि दुर्भावनापूर्ण था तथापि उनका हृदय निर्विकार रहा और उन्हें अनन्त शान्ति प्राप्त हुई।

बापूने अपने आत्मबल द्वारा भारतको जागरित किया, उन्नत बनाया और अन्तमें उसे अपने असहयोग आन्दोलन द्वारा, जो सत्य और अहिंसाकी भित्तिपर स्थित था, स्वतंत्र किया। किसी भी देशमें, किसी भी कालमें ऐसे युग-निर्माताका अवतार नहीं हुआ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि महात्माजी जिस स्वतंत्रताका भार हमारे ऊपर छोड़ गये हैं, उनके न रहनेपर भी उसी नैतिकताके साथ प्रत्येक भारतवासी उसकी रक्षा करेगा।

मेरे और श्रीरामभद्रराजके भेंट करनेपर २८ जनवरीको जिस सहृदयताके साथ आंध्रके प्रति उन्होंने हमारी बातें सुनीं और स्नेह दिखाया उसे हम भूल नहीं सकते। हमारी सांस्कृतिक चेतनाकी प्रशंसा करते हुए आंध्रके आपसी फूटपर

उन्होंने दुःख प्रकट किया। उन्होंने यह भी कहा 'आंध्रके पृथक् प्रांत हो जानेपर यह प्रदेश अन्य प्रान्तोंसे आगे बढ़ जायगा, ।

अब जनताका यह कर्त्तव्य है कि वह महात्माजीके आदर्शोंपर चले। हमें उनके समकालीन होने और उनके नेतृत्वमें स्वातंत्र्य-संघर्ष करनेका गर्व होना चाहिये। उनके निधनसे हमें अकर्मण्य न हो जाना चाहिये। हमें अपने कर्त्तव्योंका, उनके उपदेशानुसार, पालन करना चाहिये।

० ० ०

गांधीजी ही ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने मानवताकी रक्षा की और जिस ढंगसे उन्होंने पददलित जातिको ऊपर उठाया वह किसी भी देशके इतिहासमें अभूतपूर्व घटना है। महात्मा गांधीका देहावसान हो गया, किंतु संसारके लोगोंका विश्वास है कि वे जीवित हैं और सर्वदा जीवित रहेंगे। अब राष्ट्र तथा उसके नेताओंका कर्त्तव्य है कि वे गांधीजीकी योजनाएँ कार्यान्वित करें और यह सिद्ध कर दें कि ईश्वर और उनकी आत्मामें कोई भेद नहीं है तथा विश्व उसीके द्वारा शासित होता है। भारतवासियोंको गर्व है कि उसने उनके नये मार्ग, नयी आर्थिक तथा राजनीतिक नीतिका अवलम्बन कर स्वतंत्रता प्राप्त की। उन्होंने ही भारतको एक राष्ट्रका स्वरूप प्रदान किया। अतएव यहाँके निवासियोंका कर्त्तव्य है कि उनके बताये मार्गपर निष्ठावान बने रहकर सबकी भलाईके लिए शांति, व्यवस्था तथा उन्नतिके पथका अवलम्बन करें।

❀

डाक्टर पी० सुब्बरायन

[भूतपूर्व गृह मंत्री : मद्रास]

बापू अब नहीं रहे, किंतु उनकी आत्मा और उनकी दी हुई शिक्षाएँ हमारे पास सदा विद्यमान रहेंगी। अब भारतका कर्त्तव्य है कि वह अन्य राष्ट्रों तथा संयुक्तराष्ट्र संघकी सहायतासे उनके अहिंसाके सिद्धांतोंको कार्यान्वित कर विश्वमें शांति और सद्भावना स्थापित करे। इसी अहिंसाके प्रचारार्थ दो सहस्र वर्ष पूर्व महात्मा बुद्धका प्रादुर्भाव हुआ था। गांधीजी अमर हैं और विश्वको महात्माजीकी महती शिक्षाओंको स्मरण रखना चाहिये तथा अहिंसाको, जिसे वे हमारी संपत्तिके रूपमें छोड़ गये हैं, आधार मान हमें अपनी समस्याओंका समाधान करना चाहिये।

गांधीजीके पास राजशक्ति नहीं थी, फिर भी जिस प्रकार वे जनताको अपने संकेतपर नचा सकते थे वैसा आजतक कोई भी अधिनायक नहीं कर सका है। इसका कारण था। गांधीजी यह कार्य प्रेमसे करते थे, पशु-बलसे नहीं।

उन्होंने घृणापर प्रेमसे विजय प्राप्त की थी। यही पाठ वे मनुष्य-मात्रको दे गये हैं और यदि मानवताकी रक्षा करनी है तो इसे चिरंजीवी रखना होगा।

❀

माननीय टी० एस० अविनाशि-लिंगम् चेट्टियार

[शिक्षा-मंत्री : मद्रास]

बापूके स्वर्गारोहणके समाचारने सब लोगोंका हृदय विकंपित कर दिया है। उनकी मृत्यु इस भाँति होगी, यह अनेक व्यक्तियोंको विश्वास नहीं था। वह सदैव कहा करते थे कि मैं १२५ वर्ष जीऊँगा। हम लोगोंको भी विश्वास था कि उनका कथन सत्य होगा। परंतु बात इसके विपरीत हुई। यदि उनकी स्वाभाविक मृत्यु हुई होती तो हम लोगोंको कुछ समाधान भी होता, पर यह बात नहीं हुई। एक खूनीकी गोलीसे गांधीजीका निधन हुआ, इस बातने हम लोगोंका हृदय विक्षुब्ध कर दिया है। 'मेरे प्राण मेरे हाथोंमें हैं; यदि मैं चाहूँ तो उसे फेंक सकता हूँ'—बापू सदैव यही कहा करते थे। यही नहीं, इसी मार्गको अपना लक्ष्य मानकर वे चलते भी थे।

यदि हम सच्चे और शुद्ध हृदयसे विचारें कि यह सब उपद्रव क्यों होता है, तो उत्तर मिलेगा 'केवल द्वेषसे।' इस द्वेषको मनुष्योंमें, जाति-जातिमें, धर्म-धर्ममें फैलाना सरल है, किंतु बड़े दैत्यके समान बढ़कर जब यह भयंकर रूप धारण कर लेता है तब रोकना असंभव हो जाता है। यदि हम अपने देशकी समुन्नति चाहते हैं, उपलब्ध स्वाधीनताको बचाना चाहते हैं तथा संसारको अपने सत्य मार्गपर चलाना चाहते हैं तो हमें गांधीजी द्वारा उपदिष्ट प्रेम-पथपर चलना चाहिये।

कुछ महीनोंसे हमारे देशमें चारो ओर जो द्वेष, पागलपन और लूट-पाटकी तथा मारकाटकी ज्वाला फैली हुई थी, संभवतः उसे शांत करनेके लिए ही महान बलिदानकी आवश्यकता थी। आज वह बापूके बलिदानसे शांत हो गयी। हम लोगोंको विश्वास था कि वे अपनी पूर्ण आयुका उपभोग करके ही संसारसे प्रयाण करेंगे, पर उनकी मृत्यु अप्रत्याशित हुई। हमारे देशकी स्वतंत्रता के महान कारण गांधीजी ही थे। हिमालयसे लेकर कन्याकुमारीतक कोटि-कोटि जन उनको केवल नेता ही नहीं, अपितु प्रत्यक्ष ईश्वर मानते थे। स्वतंत्रता प्राप्त करनेके छः मास अनंतर हमारे घरके ही शत्रु द्वारा उनका मारा जाना हमारे लिए लज्जाका विषय है। बापूने हमें प्रेम तथा सत्यका जो मार्ग दिखाया, वह देशमें शांति स्थापित करेगा। अहिंसा, सत्य और गरीबोंपर दया एवं उनकी सेवा ही उनका सिद्धांत था। इन्हीं सिद्धांतोंका हमें अनुगमन करना चाहिये।

माननीय कला व्यंकट राव

[माल-मंत्री : मद्रास]

पितृ-निधनके समाचारसे भी इतना अधिक आघात मुझे न लगता। विश्वका सर्वश्रेष्ठ पुरुष हमें अनाथ छोड़ गया है। उन्होंने हमें स्वतंत्रता दिलायी किन्तु दुःख है कि स्वतंत्रता प्राप्त हुए छः मास भी नहीं बीते थे कि वे चले गये। हमारी कामना थी कि उनके नेतृत्वमें हम भारतका निर्माण करते, किंतु अब ईश्वरसे प्रार्थना है कि वह गांधीजीके आदर्शोंके अनुसार भारतका नव निर्माण करनेमें हमारी सहायता करे।

o o o

यह हमारे राष्ट्र-पिताकी हत्या है। भारतकी स्वतंत्रताके इतिहासमें ऐसा अविनीत कार्य, ऐसा घोर और कुत्सित कर्म कभी नहीं हुआ। आज अपार दुख-सागरमें निमग्न करोड़ों व्यक्तियोंकी जो भी इच्छाएँ हों, पर महात्माजी पुनरुज्जीवित नहीं हो सकते। किन्तु यदि वस्तुतः उनके लिए हमारा स्वर आर्त है तो हमारा धर्म है कि उनके आदेश और उपदेशके अनुसार चलें।

गांधीवाद नव-ज्योतिर्मय पथ है। उसकी आधार-भूमि वे प्राचीन सिद्धांत हैं जो सब लोग जानते हैं। महापुरुषोंको जो श्रद्धा और ख्याति मिली, वह मृत्युके बाद ही मिली। किन्तु गांधीजी ही ऐसे पुरुष हैं, जिन्हें अपने जीवन-कालमें ही श्रद्धा, भक्ति, यश और महत्त्व मिला।

यमुना नदीके तटपर जिन लपटोंने गांधीजीके भौतिक शरीरका दाह किया, वे कभी शांत न होंगी। वे ज्वालाएँ हमारे हृदयमें सेवाधर्मकी भावना जगाकर हमारा जीवन सफल बनावें, यही कामना है। उन्होंने अपनी ज्ञान-सम्पत्तिको भक्तिमें परिवर्त्तित किया, भक्तिको सेवामें और सेवाके रूपमें निष्काम कर्मकी उपासना की एवं इस प्रकार अपने यशोदीपकी अमर ज्योति प्रज्ज्वलित की। यही ज्योति हमारे घनान्धकारपूर्ण तमोगुणका नाश करे और हमारा विकास करे, यही भगवानसे प्रार्थना है।

❀

माननीय के० माधव मेनन

[कृषि-मंत्री : मद्रास]

महात्माजीका इस जगतसे कल जो तिरोधान हुआ है उससे अधिक अहित हमारा कुछ नहीं है। बुद्धि और मन स्तब्ध हैं। अतः कुछ भी चिंतन करना

असंभव है। गांधीजीका निधन भारतकी ही नहीं, जगतकी भी अपूरणीय क्षति है। मद-मात्सर्य और स्वार्थोद्देश्योंसे परस्पर संघर्ष करते हुए जगतसे, शांति और स्नेहसे संवलित, प्रेम-करुणाका एकमात्र अवलंब पिस्तौलकी गोलीका निशाना बन गया। गांधीजीकी आत्माकी चिर शांति और निर्वृत्तिके हेतु प्रार्थना कीजिये। उनके उपदेशोंके अनुसार चलकर बुद्धि और मनको प्रेरणा दीजिये। महात्माजीके आदर्शोंके अनुसार चलिये।

इस राष्ट्रपर इससे भीषण संकट और क्या आ सकता था। गांधीजीकी आत्मा हमारा नेतृत्व करे। उनके प्रति अपनी श्रद्धा-भक्तिके स्मारक रूपमें इस क्षणसे समस्त देशमें शांति और सद्भावका उद्भव हो, यही हमारा प्रयत्न हो।

❀

माननीय श्री ० सीताराम रेड्डी

[उद्योग मंत्री : मद्रास]

कल पांच बजे संध्याको महात्माजीकी इह-लीला समाप्त हो गयी। हम लोगोंका शोक बहुत बढ़ गया। हम लोगोंको अब कौन राह दिखायेगा ? देशकी समस्याएँ कौन सुलझायेगा ? हमारे देशका महान दीपक बुझ गया। चारों ओर अंधकार है। हम लोगोंकी रक्षा कौन करेगा ? इस दुःखको हम कैसे दूर कर सकते हैं। हमलोगोंकी ही नहीं समस्त विश्वकी यही भावना है। जिन्होंने उन्हें देखा, जिन्होंने नहीं देखा, सभी उनकी भयंकर हत्याका समाचार सुनकर स्तब्ध हो गये हैं। सबने उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। मानवताके इतिहासमें इस प्रकार स्वाभाविक श्रद्धा, प्रेम, भक्ति तथा शोककी भावनाको व्यक्त करनेका कहीं और उदाहरण नहीं मिलता। करोड़ों व्यक्ति, सब जातिके, सब धर्मके, सब वर्णके लोग, स्वतंत्रताके इस प्रेमीके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं।

हम लोगोंने ऐसे व्यक्तिको खो दिया जो सत्यका पुजारी था। हमारे लिए लज्जाकी बात है कि हमी लोगोंमेंसे एक व्यक्तिने उनकी हत्या की। मुझे प्रतीत होता है यह कृत्य हमारी पाशव तथा नीच मनोवृत्तिका द्योतक है और जबतक हम सभी कुप्रवृत्तियोंका विनाश नहीं करेंगे, हमारे देशके लिए ही नहीं सारे संसारके लिए भय है।

वर्षोंसे यह दुर्भावना हम लोगोंमें फैलती जा रही है। और यदि हमने इसे समाप्त नहीं किया तो सारी सेवाकी भावना, नैतिक जीवन, सामाजिक जागरण और भलमनसाहत, सार्वजनिक जीवनसे समाप्त हो जायगी।

इस कठिन घड़ीमें महात्माकी मृत्यु संसारकी हानि है। हमें उनके जीवन तथा आदर्शोंका स्मरण करना और उन्हींपर चलना है। महात्माजी जीवनका रहस्य समझते थे। आज उनकी मुक्ति हो गयी।

हमारे नेता तथा अनुपम मित्रने अपना पार्थिव शरीर त्याग दिया। हम संसारके शिक्षक बन सकते हैं। यदि हम उनके जीवनका ढंग, उनका विश्व-प्रेम, उनकी शिक्षा अपना लें तो संसारके उपदेशक बन सकते हैं। ईश्वर उनकी आत्माको शांति दे।

❀

माननीय जे० चंद्रमौलि

[मंत्री : स्वायत्त-शासन-विभाग, मद्रास]

सत्य और अहिंसाके लिए आत्माहुति करनेवाले महात्माकी हत्या भारतकी ही नहीं समस्त विश्वकी दुःखद घटना है। पवित्र और आदर्शपूर्ण शांतिके मार्गपर चलकर भारतका स्वतंत्र होना गांधीजीकी तपस्याका ही फल है। किसीकी भी त्रुटिपर, अनुचित आचरणपर अथवा अपराधपर कुपित न होकर सहानुभूति दिखाना और स्वयं अपनी तपस्यासे उसका प्रायश्चित्त करना महात्माजीकी अलौकिक महत्ताका द्योतक है। इसीसे उनके विरोधी भी उनका सम्मान करते हैं। उनका समस्त जीवन शोषितों, पीड़ितों और हरिजनोंकी सेवामें ही बीता। उनका त्याग, उत्सर्ग, तपस्या और आदर्शमय जीवन दलित भारतके उत्थानका मूल कारण था। इसी कारण आज अपने सच्चे बापूके न रहनेपर भारत अनाथ बालक-सा रो रहा है।

भारत सदासे ऋषियों और मुनियोंका देश रहा है। धर्म और दर्शनके पथपर चलकर ही सदा इसकी उन्नति होती रही है। महात्माजीने उस आदर्श-सिद्धांतको अपने आचरणों द्वारा व्यावहारिक और सार्वजनीन बना दिया। वे सच्चे अर्थमें कर्मयोगी थे। निष्काम कर्मयोगका मार्ग प्रशस्त कर गीताको उन्होंने व्यावहारिक बना दिया। भारतके महापुरुषों और ऋषि-मुनियोंके सारे आदर्श उनके जीवनमें साकार हो उठे थे।

यदि हम भारतको सचमुच उन्नत और आधुनिक विश्वकी त्रुटियोंसे रहित बनाना चाहते हैं तो बापूके उपदेशोंपर चलना हमारे लिए अनिवार्य है।

❀

माननीय टी० एस० एस० राजन्

[खाद्य-मंत्री : मद्रास]

जन-समूह दुःखसे विकल है। हम बोलकर क्या करेंगे? आँसू बहानेसे क्या लाभ? चिल्लाना अथवा सभा करना हमारी दुर्बलताका द्योतक है। सैकड़ों वर्षोंसे पराधीनतामें पड़े हुए हम हिन्दुस्तानियोंको महात्माजीने स्वतंत्र बनाया। संसारके समक्ष भारतवर्षकी यह प्रतिष्ठा स्थापित करनेवाले महात्माजी ही थे।

यद्यपि उनका जीवन ७९ वर्षोतक ही इस भूमिपर था तथापि उनका कार्य ७९ हजार युगके लिए हुआ। दयाकी साक्षात् मूर्ति, सत्यका दीपक जो हमारे देशमें अबतक प्रज्ज्वलित रहा, दैव-दुर्विपाकसे अथवा हमारे दुर्भाग्यसे उसका प्रशमन हो गया। संप्रति गांधीजीका पार्थिव शरीर विद्यमान नहीं है; फिर भी उनकी आत्मा सर्व-व्याप्त है जो हमें उनके आदर्शोंका अनुगमन करनेकी सदैव प्रेरणा देती रहेगी। मनुष्यको ईश्वर समझ कर दया-दृष्टिके भावसे देखनेवाले महात्माको गोली नहीं मारी गयी अपितु हमारे देश तथा समस्त मानव-समाज-पर आघात किया गया है। क्या सत्यपरायण व्यक्तिके लिए स्वतंत्र देशमें स्थान नहीं? यदि ऐसा है तो यह स्वतंत्रता किस कामकी।

पूज्य बापूका रक्त तथा व्रणांकित शरीर अन्य शरीरोंकी भाँति ही यमुनाके राजघाटके तटपर चंदनकी चितामें भस्मसात् हो गया। परंतु देशकी प्राण-शक्ति, जिसे हम 'गांधीत्व' कह सकते हैं और जो आज भी वर्तमान है, कदापि नहीं मर सकती; क्योंकि वह अमर तथा अक्षय है। महात्माजी हम लोगोंको जो धन दे गये हैं, वह त्याग है। उसीसे हमारा देश स्वतंत्र हुआ है और उसी-पर हमें सदैव चलना चाहिये। उनकी स्मृतिमें हम रो-पीटकर अपनी दुर्बलता संसारके समक्ष प्रदर्शित न करें। कई वर्षोंसे सचाईके साथ उस ब्रिटिश साम्राज्यके साथ, जो संसारमें सबसे बड़ा साम्राज्य है, लड़कर उन्होंने विजय प्राप्त की। संसार जबतक रहेगा तबतक गांधीका नाम नहीं मिट सकता। गांधीजीने अपने प्रेमके बलसे तथा तपस्याके आकर्षणसे ही देशको बचाया है। हम लोग उन्हींकी संतति हैं। हमारे गांधीजी आज चले गये हैं। उन्होंने जो धन हमें प्रदान किया है हमें उसकी रक्षा करनी चाहिये।

❃

माननीय ए० बी० शेट्टी

[स्वास्थ्य-मंत्री : मद्रास]

स्वातंत्र्यके उदयके साथ ही साथ अनेक हृदयद्रावक घटनाएँ घटीं और उन्होंने कल्पित उदासीसे हमारा हृदयाकाश आच्छन्न कर दिया। महात्मा गांधीकी दुःखद मृत्युसे जो संकट हमारे ऊपर आ पड़ा है वह सबसे बड़ा है। हमारी यह हानि इतनी बड़ी है कि हम शीघ्र इसका समुचित मूल्यांकन नहीं कर सकते। 'बापू अब नहीं रहे'—इस क्रंदनसे आज देशका कोना-कोना व्याप्त हो रहा है। आज सारा राष्ट्र शोकमें निमग्न है।

गांधीजीका चरित और जीवन अनेक दृष्टियोंसे अतुलनीय था। वह जैसा सोचते थे वही कहते थे और जो उपदेश देते थे वैसा ही आचरण करते थे। सत्याग्रह उनकी युद्ध-कलाकी एक नवीन प्रणाली थी, जिसके द्वारा अनौचित्यकी

सविनय अवज्ञा करते हुए समस्त दुःखोंका वह स्वागत करते थे। यहाँतक कि आवश्यकता पड़नेपर मृत्यु भी उनको ग्राह्य थी। इस आध्यात्मिक अस्त्र द्वारा, बिना हिंसा और रक्तपातके, विजय प्राप्त करनेकी शिक्षाके लिए भारत ही नहीं, वरन समस्त विश्व बापूका चिरऋणी रहेगा। हमारी प्रार्थना है कि बापूकी आत्मा हमें वह शक्ति दे जिससे हम उनके बताये हुए पथपर बढ़ सकें।

❀

माननीय एम० भक्तवत्सलम्

[निर्माण-मन्त्री : मद्रास]

इस देशको छोड़कर अन्य किसी भी देशमें इतना महान व्यक्ति नहीं उत्पन्न हुआ, इस बातपर हमें तथा हमारे देशको गर्व था। किंतु आज हमारे देशके एक व्यक्तिके द्वारा गांधीजीके मारे जानेसे वह गर्व चूर चूर हो गया है। अबतक बापूने हमारी सेवा की तथा उनकी उत्कट अभिलाषा थी कि १२५ वर्ष जीकर भारतीयोंकी सेवा कर सकूँ। हमारी भी यही इच्छा थी कि वे १२५ वर्षतक हमारा पथ-प्रदर्शन करते, परंतु संभवतः गांधीजीका भूतलपर रहना उस परम पिता परमेश्वरको अभीष्ट न था। शायद स्वर्गमें सज्जनोंकी कमी हो रही थी। पागलके दुष्कर्मने हमारी आँखें खोल दीं हैं। अब हमें दुःख तथा क्रोध सहनकर उसे अमृतकी तरह पी जाना है। यद्यपि महात्माजीका शरीर संप्रति हम लोगोंके सम्मुख नहीं है तथापि उन्होंने जो मार्ग दिखाया है वह हमारे समक्ष है। हम लोगोंके उपकारके लिए बापूने जो महान त्याग किया है वह हम लोगोंके हृदयमें वृक्षकी जड़की भाँति दृढ़ हो गया है।

हमारा कर्त्तव्य है कि हम लोग अपने देशमें तथा विदेशोंमें भी गांधीवादका प्रचार करें और उसकी स्थापनामें अपना जीवन समर्पित कर दें। उनका मरना भी देशके लिए एक शिक्षा है। आज हमें अपने सम्बंधमें विचार करना चाहिये कि हममें क्या बुराइयाँ हैं तथा उनके निराकरणका उपाय क्या है। आज हमें उनके सिद्धांतोंको समझना है तथा उनकी आत्माको शांति प्रदान करना है। पारस्परिक द्वेष तथा छिद्रान्वेषणका परित्याग कर हमें बापू द्वारा प्रदर्शित मार्गपर चलना चाहिये जिससे अन्य व्यक्ति भी हमारे अनुगामी हो सकें। एक प्रमादीके कार्यसे भारतके मुखपर जो कालिमा पुत गयी है उसका प्रक्षालन इसी भाँति हो सकता है। यदि इस प्रकार नहीं कर सके तो हमने उनके जीवनसे क्या शिक्षा ग्रहण की? 'सत्यपर पूर्ण विश्वास करो तथा सत्य ही ईश्वर है'—यही सिद्धांत हम लोगोंको गांधीजीने बताया एवं उस सिद्धांतपर चलनेके लिए सबसे उत्तम अहिंसाका मंत्र उन्होंने हमें दिया है।

माननीय डेनियल टामस

[मंत्री : मद्यनिषेध-विभाग, मद्रास]

हमारा देश आज भीषण अंधकारसे आच्छन्न हो गया है। समस्त देशका हृदय और मस्तिष्क आज इस व्यक्तिगत और महान राष्ट्रीय क्षतिके कारण शून्यतासे व्याप्त हो गया है।

हमारा प्यारा बापू और सम्मानित नेता, वह नेता जो केवल भारतका ही नहीं विशाल विश्वका नेता था, आज चला गया। कदाचित् यही ईश्वरेच्छा थी कि शांति और प्रेमका देवदूत, जिसने अपने अहिंसा-सिद्धांतके उपदेश और प्रयोग द्वारा संसारको चकित कर दिया, एक हत्यारेके हाथसे अपनी जीवन-लीला समाप्त करे। ईसाके आदर्श चरित और उपदेशोंका भक्तिके साथ अनुसरण करनेवाले महात्मा गांधीके जीवनका अंत भी उन्हींकी भाँति हुआ।

प्यारे बापूकी मृत्युका दुःख देशके प्रत्येक नर-नारीके लिए अपने पिताकी मृत्युके समान ही शोकदायक जान पड़ रहा है। उनकी मोहक मुस्कान और स्फूर्त्तिदायक वाणी अब देखने और सुननेको न मिल सकेगी। किंतु हमारा कर्त्तव्य है कि हम आगे बढ़ें, अपने हृदयोंमें महात्माकी प्रेरणा, स्फूर्त्ति और आदर्शोंसे बल एकत्र करें और मातृभूमिकी सेवाके लिए अपना जीवन पुनः समर्पित कर दें। इस देशके विभिन्न संप्रदायोंमें शांति और सद्भावनाकी चेतना जागरित करते हुए समस्त विश्वमें बापूका संदेश प्रचारित कर दें।

बापू अपने जीवन-कालमें जनताके आशा-प्रदीप थे तथा विश्वकी आकांक्षाओंके केंद्र थे। आज उनके निधनसे भारत क्या, समस्त संसारको मृत्युकी कटुता और उदासीका अनुभव हो रहा है। किंतु वे मरे नहीं हैं। उनकी आत्मा सदैव एक सजीव स्फूर्त्ति बनी रहेगी और आकाश-दीपके समान इस देशकी जनताको वह पथ दिखलाती रहेगी जो महती भारतीय परंपराके अनुरूप होगा तथा जो स्वयं महात्मा गांधीके जीवन और मरणके उपयुक्त होगा।

श्रीमती रुक्मिणी लक्ष्मीपति

[मद्रासकी सुप्रसिद्ध नेत्री]

गांधीजी नित्यमें विलीन हो गये। संसारकी जानकारीमें इनसे बढ़कर कोई महापुरुष मानव समाजकी मुक्तिके लिए पैदा नहीं हुआ और न इस महा-पुरुषके समान किसीने दुष्ट शक्तियोंसे संघर्ष किया।

एक हत्यारेने उनकी हत्या की। उसने यह भी विचार न किया कि इस ईश्वर-भीरु एवं आध्यात्मिक तथा नैतिक शक्तियोंकी सजीव मूर्तिको नष्ट कर क्या पाऊँगा। निर्भय एवं अनासक्त भावसे वह अपने सिद्धांतोंके लिए जिये। उनकी महिमा सत्य, शांति एवं सौहार्दकी स्थापनाके लिए पर्वत-शिलाके समान दृढ़ रही। उन्हें अमर पद प्राप्त हुआ और अब आगामी संततिको इस कण्टकाकीर्ण मार्गपर चलना है।

० ० ०

हम लोग धन्य हैं जो गांधी-युगमें पैदा हुए। हम लोगोंने देखा कि किस प्रकार निर्भीकता एवं नैतिक बलके साथ उन्होंने आश्चर्यजनक काम किये। हमारे पापोंके प्रायश्चित्तके लिए ही उनका बलिदान हुआ।

❃

माननीय पी० वी० राजमन्नार

[प्रधान विचारपति : उच्च न्यायालय, मद्रास]

महात्मा गांधी चले गये। चारों ओर शोक तथा निराशाका वातावरण छा गया है। किंतु इने-गिने व्यक्ति ही इस महान क्षतिके दुष्परिणामकी कल्पना कर सकते हैं। हमारे राष्ट्रके इतिहासमें ऐसे अनेक अवसर आयेंगे जब हमें महात्माजीका अभाव खलेगा और हम लोग यह अनुभव करेंगे कि उनका पथ-प्रदर्शन और संरक्षण कितना आवश्यक रहा है। अभी उन स्थितियोंके संबंधमें कुछ नहीं कहा जा सकता। इस समय हम लोगोंकी दशा ठीक उस अबोध बालककी भाँति है जो अपनी माताकी मृत्युपर स्वभावतः रो रहा हो किंतु उससे होनेवाली क्षतिका उसे कुछ भी ज्ञान न हो।

इतने कठिन संघर्षके बाद अभी कुछ दिन पूर्व ही देशको स्वतंत्रता प्राप्त हुई। सौभाग्यवश इस स्वातंत्र्य-संग्रामका नेतृत्व ऐसे महापुरुषके हाथमें था, जिसमें राष्ट्रका नेतृत्व करनेकी क्षमता थी, आत्मबल था, व्यावहारिक बुद्धि और राजनीति-ज्ञता थी। किंतु संघर्षका वह युग समाप्त हो गया। अब हमारे सामने बिल्कुल नयी और ऐसी समस्याएँ आ खड़ी हुई हैं जिनका संघर्ष कालमें पता भी न था। ऐसे समयमें महात्माजी हमसे विदा हो गये। सचमुच इससे राष्ट्रको अपूरणीय क्षति पहुँची है।

यद्यपि अभी हमारे सामने अंधकार छाया हुआ है तथापि हमें साहस नहीं खोना चाहिये। हमारे अंदर किसी प्रकारकी दुर्बलता नहीं आनी चाहिये। अन्यथा यह गांधीजीके प्रति सच्ची भक्ति न होगी। ऐसे समय गांधीजीका हमारे लिए वही संदेश हो सकता है जो भगवान कृष्णने निराश अर्जुनको दिया था—'क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप।' यद्यपि महात्माजी अब नहीं हैं

तथापि इतने दिनोंतक उन्होंने हमारे राष्ट्रीय जीवनको इस प्रकार अपने आदर्शों और आचारोंसे ओतप्रोत कर दिया है कि उससे हमारे राष्ट्रको सदैव अन्तःप्रेरणा प्राप्त होती रहेगी। जबतक हम उसका अनुसरण करते रहेंगे, देशपर कोई संकट नहीं आ सकता। यदि हम गांधीजीके प्रति सच्चे रहे तो हिन्दका कभी अहित नहीं होगा।

❀

डाक्टर लक्ष्मणस्वामी मुदालियार

[कुलपति : मद्रास विश्वविद्यालय]

गांधीजी अब नहीं हैं। वह सत्य एवं अहिंसाकी प्रतिमूर्ति थे। इस युगके इस सर्वश्रेष्ठ ऋषिका अपने सिद्धांतोंके प्रति इतना अटल विश्वास और निष्ठा थी कि कट्टु प्रतिपक्षी भी उसकी प्रशंसा करते थे। उस महात्मापर ऐसा घृणित आघात जब वह प्रार्थना-स्थलपर जा रहे हों और वह आघात भी उस समय हो जब शान्ति, प्रेम, और सौहार्दके पुनीत कार्यके लिए उन्होंने अपना दुर्बल शरीर सङ्कटमें डाल दिया था। इस महा विपत्तिके लिए आँसू पर्याप्त नहीं हैं और यह घटना साधारण जनके लिए दुर्बोध है।

अपने देशवासियोंको उन्होंने स्पष्ट शब्दोंमें उपदेश दिया है। श्रद्धा, आशा, दान, सत्य, प्रेम, अहिंसा, शांति, एकता और हिन्दू, मुस्लिम, पारसी, सिख, ईसाई, यहूदी, सबके साथ भ्रातृ-स्नेह एवं सद्भावना, यही उनका संदेश था।

देशवासियोंकी रक्षा करनेके लिए वह मरे। क्या हम लोगोंका यह कर्त्तव्य नहीं है कि हम अपने आचरण द्वारा सबको उनके निर्दिष्ट पथपर ले आवें। उनके हृदयमें कटुता नहीं थी ; मूर्खता करनेवालोंके प्रति द्वेष भी नहीं था। उनको ईसाकी उस प्रार्थनामें विश्वास था : "पिता, उनको क्षमा कर दो जिन्हें यह ज्ञान नहीं है कि वे क्या कर रहे हैं।"

❀

श्री एम० रत्नस्वामी

[कुलपति : अन्नामलय विश्वविद्यालय]

वह वाणी, जो पचीस वर्षोंसे भारतकी ओरसे, भारतके प्रति मुखरित हुई तथा विगत सहस्रों वर्षोंतक जैसी ध्वनि नहीं सुनाई पड़ी, आज मौन हो गयी। वह वाणी हजारों व्यक्ति एक साथ सुनते थे और अबतक उस वाणीको सुननेवालोंकी संख्या करोड़ोंतक पहुँची होगी। वह वाणी शांत ग्रामों और जनाकुल नगरोंमें, सभा-भवनों तथा सड़कोंपर, गंदी गलियों और भव्य प्रासादोंमें, पर्वतोंके शिखरों तथा समुद्र-तटपर और पिछले दिनों आकाशमें भी मुखरित

हुई। वह वाणी राजाओं और किसानोंने सुनी, विद्वानों और अशिक्षितोंने सुनी, अमीरों और गरीबोंने सुनी, स्त्री-पुरुष और बच्चोंने भी सुनी। उस वाणीके निर्देशपर स्त्री-पुरुषोंने अपने तन-मन-धन समर्पित कर दिये। वह वाणी, जिसने पचीस वर्षोंतक करोड़ों व्यक्तियोंके मन और हृदयोंपर शासन किया, आज मौन हो गयी। वह वाणी सत्य थी, सुनने योग्य थी। वह इतनी तर्कमयी, प्रेरक और मोहक थी कि बरबस मन और हृदयको मोह लेती थी। उसके शब्दोंमें न कोई छंद, न कोई अलंकार, न कोई आडम्बर ही रहता था। व्यक्तिके समान ही उसकी शैली भी सरल, स्वच्छ, स्पष्ट और मर्मस्पर्शी थी।

पर उस वाणीमें न केवल बाह्य रूप, किंतु तत्त्व भी रहता था। उसने देशको आवश्यक संदेश दिया। उसने साधारण जनताको अपने कर्त्तव्य और अस्तित्त्वका ज्ञान कराया, अछूतोंको आत्मगौरवका पाठ पढ़ाया और ऊँचे उठाया। उस वाणीने आदिसे अंततक शांतिका संदेश दिया। उसका कहना था कि राजनीतिमें भी बल और हिंसाका प्रयोग न हो। उस वाणीने राजनीतिक और सामाजिक जीवनको सदाचार और सद्विवेकके स्तरपर ला खड़ा किया। उसकी भौतिक ध्वनि तो अब नहीं सुनाई पड़ेगी किंतु उस वाणीका संदेश हम सुन सकते हैं। वह संदेश हम अवश्य सुनें और देशके एक छोरसे दूसरे छोरतक उसे प्रचारित करें। उसका संदेश हमारे देश और जनताके लिए स्थायी संपत्ति है।

श्री मुहम्मद एस० ए० शफी

[मद्रासके शेरिफ]

महात्मा गांधीका पार्थिव शरीर चला गया। यदि किसी मनुष्यकी मृत्युका समाचार सुनकर सारे संसारने आँसू बहाये तो वह महात्मा गांधीकी ही मृत्यु थी। दुनियामें आजतक इतना शोक तथा अश्रुपात किसीकी भी मृत्युपर नहीं हुआ। महात्माजीको हम कर्मयोगी कह सकते हैं। महात्माजीने अपने अहिंसास्त्रसे हमारी मातृभूमिकी पराधीनता दूरकर उसे स्वतंत्र किया। यही नहीं, स्वतंत्रताके बाद देशमें शांति स्थापित करानेके प्रयासमें उन्होंने अपने प्राण त्याग दिये। अतः महात्माजीको बीसवीं शताब्दीका अवतारी पुरुष कहें तो अनुचित न होगा।

बापू मुसलमानोंके सच्चे मित्र थे। हिंदू-मुस्लिम ऐक्यके लिए उन्होंने प्राणोत्सर्ग कर दिया। उनके इस महान कार्यके लिए मुस्लिम जगत उनको कभी नहीं भूल सकता।

महात्माजीने विश्वकी शांतिके लिए जन्म लिया था। उसीके लिए उन्होंने कार्य भी किया तथा अंतमें उसीकी स्थापनाके लिए बलिदान भी हो गये।

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय! युद्धाय कृतनिश्चयः॥

इस समुज्ज्वल आदर्शका उन्होंने पूर्णरूपेण पालन किया तथा दूसरोंको भी उसपर चलनेके लिए प्रेरित किया। बापूने देशकी पराधीनता दूर करनेके लिए अहिंसाका शस्त्र अपनाया तथा उसीसे अपने शत्रुओंपर विजय भी पायी।

❀

श्री रामस्वामी नायडू

[मद्रासके भूतपूर्व शेरिफ]

गांधीमें माधव, शङ्कर और रामानुजका समन्वय एवं संमिश्रण था।

❀

आदरणीय जेक व्हाइट

[मद्रासके बिशप]

ईश्वरने महात्माजीके जीवन तथा मरण द्वारा आजके युगमें हमारे पास अपना संदेश भेजा। हमें महात्माजीके आदर्शपर चलना चाहिये और उन्हींके समान आत्माकी शाश्वत पुकारके प्रति निरंतर सावधान रहना चाहिये। महात्माजीके उपदेश तभी सफल हो सकते हैं, जब हम सब सदैव सतर्कताके साथ प्रेम और सेवाके मार्गपर चलें और तभी एशिया तथा समस्त विश्वके सम्मुख भारत अनुकरणीय आदर्श रख सकेगा।

❀

आदरणीय ई० बी० थार्प

[त्रिचनापल्लीके बिशप]

महात्माजीके निधनका आघात इतना आकस्मिक हुआ है कि हमारे देशके लिए महात्माजीका क्या महत्व था, इसे हम समझ नहीं पा रहे हैं। हमारे हृदय जिन अनुभूतियोंसे विकल हैं उन्हें शब्द व्यक्त नहीं कर सकते। आजतक अपने जीवन कालमें किसी भी मनुष्यने इतने अधिक लोगोंके हृदयोंको प्रभावित नहीं किया था जितना इस महामानवने। महात्माजीके विचारोंसे जिनका घोर विरोध था वे भी जब उनके सम्पर्कमें आते तब सत्यके प्रति उनकी निष्ठा और विचारोंकी उदारताके कारण उनका सम्मान किये बिना नहीं रह सकते थे। उनका दृढ़ विश्वास था कि सत्य ही उनका शस्त्र है।

आज इस समय हमारे हृदयकी अवस्था ऐसी है कि महात्माजीके विश्वासोंकी अपेक्षा उनके व्यक्तित्वके विषयमें सोचें, उनके सिद्धांतोंकी अपेक्षा

उनके चरित्रका स्मरण करें। उनकी शिक्षाओंके इतने व्यापक प्रभावका कारण यह था कि वह स्वयं उन्हींके अनुसार अपना जीवन व्यतीत करते थे और अपने सिद्धान्तोंका स्वयं आचरण करते हुए उनके प्रति अपनी आस्था प्रकट करते थे। उनके सिद्धांतों और प्रयोगोंमें कोई अंतर नहीं था।

o o o

जिस समय विश्वयुद्धके कारण संसारमें घृणा, संदेह और निर्ममताका साम्राज्य छाया हुआ है और युद्धकी भीषण ज्वालाके शान्त हो जानेपर भी उसकी अनेक छोटी-छोटी लपटें अनेक विपत्तियाँ उत्पन्न करती जा रही हैं, उस समय अकेले इसी पुरुषने शांतिके ऐसे पथका निर्माण किया, जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। यही नहीं, दूसरोंको भी उसका अनुसरण करनेके लिए उन्होंने प्रोत्साहित किया। निष्कपटता, सरलता, ऋजुता, सत्यनिष्ठा तथा अहिंसामें दृढ़ विश्वास, इन सब गुणोंने उनकी महत्ताको आमंडित किया।

यदि हम एक बातका ध्यान रखें तो हमें भयभीत होनेकी कोई आवश्यकता नहीं और वह यह कि गांधीजीने जो कुछ किया है वह नष्ट न हो। हम चाहे उनके सभी सिद्धांतोंसे सहमत हों या न हों परतु हमें प्रतिज्ञा कर लेनी है कि हम उनके आदर्शोंका अनुसरण करते हुए निश्छल, सरल और सचाईका जीवन व्यतीत करेंगे तथा शुद्ध हृदयके साथ शांति-स्थापनमें संलग्न रहेंगे।

❀

आदरणीय डी० सूजा

[सुप्रसिद्ध ईसाई धर्मगुरु]

महात्माजीके अजेय शब्द ३० वर्षोंतक विश्वमें व्याप्त थे। वे शब्द आज शान्त हो गये। उन्होंने भारतीय जीवनको स्पन्दन दिया। गांधीजी राष्ट्रके सच्चे पिता थे। हिन्दुओंको अभिमान है कि वह हिन्दू-संस्कृतिके पूर्ण विकास थे। मुसलमान कहेंगे कि वह हमारे संरक्षक थे, हरिजन कहेंगे कि वह हमारे पिता थे। स्त्रियाँ कह सकती हैं कि वह हमारे उन्नायक थे। ईसाइयोंके लिए वह ऐसे महापुरुष थे जिनके हृदयमें 'पर्वतीय' उपदेशोंका वास था। उनके आकर्षक नेतृत्वने ईसाइयोंको राष्ट्रीय अन्दोलनमें खींचा और अन्य देशवासियोंके साथ वे भी राष्ट्रीय संघर्ष और राष्ट्रोन्नतिके कार्यमें अग्रसर हुए। उनका वध हो गया, पर उनकी मृत्युसे उनके आदर्शोंको अधिक प्रकाश और बल मिलेगा और उनके शब्द अधिक प्रभावशाली होंगे।

श्री के० कामराज नाडार

[अध्यक्ष : तमिल-नाड-कांग्रेस कमेटी]

सुषुप्त अवस्थामें पड़े हुए भारतवर्षको जगाकर बल और वीर्य प्रदान कर हमें स्वतंत्र करानेवाले महात्मा गांधी आज हमारे बीचसे चले गये। आज हमारी जिम्मेवारी बहुत बढ़ गयी है। इसके पूर्व हम लोग समझते थे कि सारी जिम्मेदारी गांधीजीपर है, किंतु आज यह जिम्मेदारी सहसा हमारे ऊपर आ पड़ी है। हमें निराश नहीं होना चाहिये। आज हमें धैर्यके साथ चलना है। पचीस वर्षोंसे महात्माजीने जो पथ हमें दिखाया यदि उसपर हम निरंतर चलते जायँगे तो देशकी उन्नति के साथ हमारा भी कल्याण होगा। बापूको तो उनके पथपर चलकर ही कोई श्रद्धांजलि दे सकता है तथा उनके सिद्धान्तोंकी प्रतिष्ठा भी तभी हो सकती है।

o o o

महात्माजीका निधन हमारे राष्ट्र और विश्वके लिए दुर्भाग्यका चिन्ह है। इस देशके लोगोंमें तथा समस्त विश्वमें आज जो मानसिक वेदना हो रही है, उसका वर्णन शब्दोंमें नहीं हो सकता। यह हमारी परीक्षाकी घड़ी है। इस समय हमें शांति और अनुशासनके साथ रहना है।

❋

श्री कोंडा व्यंकटपय्या

[मद्रासके वयोवृद्ध कांग्रेसी नेता]

महात्माजी इतिहासके महापुरुषोंमें सर्वश्रेष्ठ हैं। सत्य और अहिंसाके दिव्य संदेश देनेके लिए उनका जन्म हुआ और अश्रुतपूर्व एवं पूर्ण व्यंजनाके साथ सत्य और अहिंसाका उन्होंने विकास किया। मानवके नैतिक रूपका पूर्णतया विकास उनके जीवनका प्रधान लक्ष्य था और 'स्व' तथा 'पर' में इस उद्देश्यके लिए उन्होंने यथाशक्ति प्रयत्न भी किया।

अन्य जनोंके समान उनका भी जन्म हुआ ; पर आत्मसंयम, आत्मसंस्कार एवं आत्मनिग्रह द्वारा उन्होंने अपने उद्देश्यके लिए प्रयत्नशील होकर आत्मबल प्राप्त किया। ईश्वरमें श्रद्धा और आत्म-विश्वास, उनके ये दो मूलमंत्र थे। उनका प्रत्येक विचार, उनका प्रत्येक शब्द, उनका प्रत्येक लेख नैतिकताकी तुलासे नपा-तुला होता था। उनका अंतःकरण सदैव पवित्र था। उन्हें ज्ञानके शाश्वत स्रोतसे प्रकाश मिलता था। वह दिन दूर नहीं, जब विश्व यह अनुभव करेगा कि जिस सत्य

और अहिंसाके लिए महात्माजी जिये और मरे। उन्हींके द्वारा युद्धकी विभीषिकासे मानवका त्राण हो सकता है, पारस्परिक प्रेम और सद्भावनाकी सृष्टि हो सकती है तथा सबको सुखी रखनेके लिए विश्व-सरकारकी स्थापना हो सकती है।

o o o

महात्माजीकी हत्यासे सकल विश्व शोक-महासागरके तरङ्गोंसे आलोड़ित है और प्रत्येक व्यक्तिने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की है। शहीद जैसी मृत्यु उनको मिली है। शहीद मरनेके बाद अपनी आत्मासे जीवित रहते हैं। हिमालयसे कन्याकुमारीतककी पुनीत नदियोंमें उनका पुष्प प्रवाहित हुआ है। आउनकी ईश्वरीय ज्योति हमारे लिए धर्म, धैर्य्य एवं त्यागका पथ प्रशस्त करेगी। यदि हम गान्धीजीके आदेशानुसार अपना जीवन निर्माण करें, तो हम उनके अपूर्ण कार्योंको श्रद्धासे पूरा कर सकेंगे।

वह दिन अब दूर नहीं है जब विश्वके राष्ट्र यह समझने लगेंगे कि महात्माजीके सत्य और अहिंसाके मार्गसे ही मानव-समाज युद्धसे बच सकेगा और शान्ति एवं प्रेमसे रहेगा।

o o o

गांधीजीकी मृत्युसे मेरा हृदय शोकमग्न हो रहा है। ऐसी हृदयद्रावक दुःखद घटना! महात्माजी हमारे हृदयके प्रियतम थे, हमारे गुरु थे, हमारे नेता, मित्र और दार्शनिक थे। गांधीजीको वीरगति प्राप्त हुई, अहिंसाके लिए वह बलि हुए। नवजात स्वतन्त्रताके शैशवके इस संकट-कालमें वह चले गये, किन्तु उनकी आत्मा हमारे साथ है।

❀

प्रोफेसर एन० जी० रंगा

[किसानोंके सुप्रसिद्ध नेता]

यद्यपि उनका भौतिक शरीर नहीं रहा तथापि हमारे बापू शाश्वत आत्मिक बलके रूपमें चिरजीवी हैं। आनेवाले युगोंमें, हमारे देशको और संसारको उसी प्रकार गांधीजीकी आत्मा प्रतिष्ठा और नेतृत्व प्रदान करती रहेगी। जिस बुद्ध और ईसाने आत्मीयता और प्रेमका पथ प्रशस्त किया था।

आइये, इस राष्ट्रीय और सार्वभौमिक संकटके अवसरपर हम यह प्रतिज्ञा करें कि हम मानवताकी सेवा, प्राणिमात्रके प्रति प्रेम, राष्ट्रीय एकता और श्रमिकोंका उद्धार—गांधीजीके इन उद्देश्योंकी पूर्ति करेंगे।

❀

"मैं सत्य के आदर्श को अहिंसाके सिद्धान्तसे अधिक समझता हूँ। सत्य बिना, अहिंसाके प्रयोग निष्फल हैं।" —गांधीजी

श्री वी० एस० मूर्ति

[हरिजन-नेता : मद्रास]

केवल हम ही नहीं, अपितु प्रत्येक मनुष्य आज शोकसे विह्वल एवं अचेत है। 'बापू कहाँ हैं' यही प्रश्न सभी स्थानोंसे हो रहा है। वह अमर हैं, सूर्यके समान तेजस्वी हैं, अहिंसाके अवतार हैं। भारतीय स्वतंत्रताके वह स्थपति हैं, तथा राष्ट्रपिता हैं। गांधीजीके जीवनमें शुकदेवका वैराग्य, हरिश्चन्द्रका सत्य, प्रह्लादकी भक्ति, बुद्धदेवकी दया, गुरु नानककी करुणा, ईसा मसीहका प्रेम, मुहम्मदका नेतृत्व, सभी गुण अभिव्यक्त थे।

❀

श्री ई० वी० रामस्वामी नायकर

[सुप्रसिद्ध सार्वजनिक कार्यकर्ता]

अपने आदरणीय वयोवृद्ध महात्माके निधनपर हमारी वाणी मूक है। शरीर काँप रहा है। विश्वका प्रत्येक व्यक्ति गांधीजीको श्रेष्ठ समझता था। उनकी मृत्युका समाचार सुनकर सभी दुःख-सागरमें निमग्न हैं। उनकी मृत्युसे तो भारतकी विशेष हानि हुई है, विशेषतः ऐसे समय जब चारों ओर संकटके बादल छाये हुए हैं।

वर्तमान युगके महापुरुषोंमें महात्मा गांधी श्रेष्ठ थे। जन-सेवाको ही उन्होंने अपना लक्ष्य बनाया था। संसारमें जो कुछ उन्होंने किया, वह सब दूसरोंके लिए ही किया; अपने लिए कुछ भी नहीं।

आज जो यह अकल्पित घटना हुई है इसका अर्थ है राजनीति, धर्म और जातिके नामपर परस्पर विद्वेष बढ़ाना, जिससे लोग आपसमें झगड़ें और तीसरा वर्ग तमाशा देखे। बुद्धिमान बन्धुओंसे प्रार्थना है कि वे यह रहस्य समझें और गांधीजी जिस प्रेम तथा मेल-मिलापको चाहते थे उसके प्रचारमें लग जायँ, क्योंकि इसके बिना संसारमें कदापि शांति स्थापित नहीं हो सकती।

❀

श्री एम० मुहम्मद इसमाइल

[प्रसिद्ध मुस्लिमलीगी नेता]

महात्मा गांधी भारतमाताके सर्वश्रेष्ठ पुत्र थे। वे हमारी स्वतंत्रताके योद्धा, गरीबोंके सहायक एवं मित्र और सबसे प्रेम करनेवाले बिना ताजके सम्राट थे। इतना महान व्यक्ति आज संसारसे उठ गया। उनके उठ जानेसे संसार-

भरमें आज शोकके बादल छा गये हैं। हमारे देशमें ही नहीं अपितु समस्त विश्वमें रंकसे लेकर राजातक, सभी उनकी यादमें रो रहे हैं। उनके बहुजनहिताय जीवनका अंत करनेवाले अधम तथा नरपिशाचसे सब घृणा कर रहे हैं।

हमें उनके उपदेश अपनाने होंगे तथा उनके निर्दिष्ट मार्गपर चलना होगा। हम आज यह शपथ करें कि उनके मार्गपर चलेंगे। मनुष्योंके बीच शक्तिका प्रयोग नहीं होना चाहिये। मनुष्योंमें परस्पर एकता तथा प्रेमका संचार होना चाहिये। यदि हम लोग ऐसा कर सकें तो उनकी आत्माको शांति मिलेगी। देशको उनकी मृत्युसे जो दुःख हुआ है उसे भूलनेका यही रास्ता है। मनुष्यको ईश्वर शक्ति दे जिसमें पारस्परिक प्रेमभाव जागरित हो। देशमें स्वतंत्रताकी रक्षा तथा उसकी दृढ़ स्थापना तभी हो सकती है।

❀

श्री पी० जीवानन्दम्

[प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता]

जब हम लोग गूँगे थे, अंधे तथा बहरे थे और संसारके लोग हमसे घृणा करते थे, हमारी स्थिति प्रतिदिन दूषित होती जा रही थी, सभ्य समाजमें हमें किसी प्रकारका स्थान नहीं मिल रहा था, तब ऐसे भीषण समयमें, महात्माजीने, हम भारतवासियोंको जगाया तथा हमारी बेड़ियाँ काटकर विदेशी सत्ताको हटानेके लिए नयी शक्ति प्रदान की। हमें स्फूर्ति देनेवाले महात्माजीने निरंतर २८ वर्षोंतक साम्राज्यवादके विरुद्ध जनतामें नारा बुलंद किया। प्रेम तथा एकता ही उनके जीवनका ध्येय था। एकताके अभाव तथा सांप्रदायिकताने उनका दुःखद अंत कर दिया।

o o o

शांतिकी मूर्ति और एकताके अवतारको सांप्रदायिकताने, देशकी एकताका नाश कर अपना महत्व बढ़ानेके लिए, मार डाला। हम इस सांप्रदायिक विष फैलानेवालोंको न तो क्षमा कर सकते हैं और न भूल ही सकते हैं।

स्वतंत्रताके विरुद्ध होनेवाले सरकारी दमनका सामना करनेमें उन्हें हम लोगोंने पूर्ण सहयोग दिया तथा उनके पद-चिन्होंका अनुगमन भी किया। हम गांधीजीकी हत्या करनेवाली भावनाओं एवं सांप्रदायिकताको दूर ही नहीं अपितु समूल उन्मूलित भी कर देंगे। हम आज शपथ लेते हैं कि उनके द्वारा निर्दिष्ट मार्गपर हम चलेंगे। इसी प्रकार उनकी आत्माको शांति प्राप्त हो सकती है।

❀

श्री सी० जिनराजदास

[अध्यक्ष : थियॉसोफिकल सोसाइटी]

'अपने शत्रुओंसे प्रेम करो'—ईसाके इसी आदर्शके लिए गांधीजी बलि हो गये। अमृतसर तथा पाकिस्तानमें हिंदुओं और मुसलमानोंने नृशंस हत्याएँ कीं। गांधीजीको यह सब मालूम था, पर गांधीजी हिंदुओंसे आशा करते थे कि वे उच्च आदर्शोंपर चलें और क्षमा-भाव रखें। उनके उपवासके बाद अनेक शिक्षित हिंदुओंने इसे मान लिया, पर कुछ लोगोंको यह बुरा लगा और गांधीजीकी हत्या हुई। गांधीजी गरीबों एवं श्रमिकोंके हितैषी थे। भारतके सभी धर्म और जातिवालोंके लिए वह माता-पिताके समान थे।

❀

श्री टी० आर० व्यंकटराम शास्त्री

[मद्रासके प्रसिद्ध लिबरल नेता]

अनेक पीढ़ियोंके बाद यदा-कदा गांधीजी जैसे महापुरुष जन्म लेते हैं। गांधीजीका कार्य सम्पन्न हो गया और वह यहाँसे चले गये, मानो हमारे जीवनका प्रकाश चला गया। उनके तथा उनके विचारोंके अनेक कटु आलोचक थे। पर इस भीषण शोकपूर्ण दुर्घटनाने, जिससे इस अनुपम जीवनका अंत हुआ, आज हम सबको मूक और स्तब्ध बना दिया है।

अब उनके आदर्श एवं संदेश हमारा नेतृत्व करेंगे, जिनके अनुसार चलकर हम ऐसे प्रौढ़ राष्ट्रका निर्माण कर सकेंगे जो विभिन्न राष्ट्रोंके बीच प्रेम एवं सद्भावनाका प्रचार कर सकेगा। यही गांधीजीका अभीष्ट था और इसीके लिए वह हमारा पथ-प्रदर्शन भी कर रहे थे। आज वह हमारे साथ नहीं हैं। विभिन्न संप्रदायोंमें शांति एवं सौहार्द स्थापित करनेमें वह शहीद हो गये। अब हम लोगोंको यह मान लेना चाहिये कि उन्हींके बताये मार्गपर चलनेसे ही सांप्रदायिक शांति स्थापित हो सकती है।

श्री टी० पी० राजन

[भूतपूर्व प्रधान मन्त्री तथा जस्टिस-पार्टीके नेता]

विश्वमें आजतक जितने बड़े बड़े महात्मा हुए हैं उन्हें उत्पन्न करनेका गौरव पूर्वको ही प्राप्त है। इन विभूतियोंको हम विश्वके हित-साधनके लिए

अवतारी पुरुष कहते हैं। इन अवतारोंमें गांधीजी भी थे। उन्होंने हमारे देशमें जन्म ग्रहण किया था। धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा अन्य प्रकारके मतभेदोंके होते हुए भी हमें गांधीजीके आदर्शोंका देशमें प्रचार करना चाहिये। उनके प्रति हमारा यही प्रमुख कर्त्तव्य है।

ऐसे महान पुरुषके जीवनकालमें जन्म लेनेसे हम तथा हमारे देश-निवासी आत्मगौरवसे अपनेको भाग्यशाली मानते हैं। आज हमें संसारमें उनके पवित्र उपदेशोंका प्रचार करना है, क्योंकि उनका ही सिद्धांत समस्त मानव-समुदायको कल्याण-मार्गका पथिक बना सकता है। इसी प्रकार हम उनकी स्मृतिमें श्रद्धाञ्जलि अर्पित करनेके योग्य होंगे और उस महान अहिंसाके पुजारीने जो अनुपम बलिदान किया है उसे स्मरण करनेके अधिकारी होंगे।

श्रीमती रुक्मिणी अरण्डेल

[मद्रासकी सुप्रसिद्ध कलाकार]

बिनापद और पदवीके गांधीजी जनताके मुकुटहीन राजा थे। वह स्वेच्छासे जनसाधारण जैसा जीवन व्यतीत करते थे। उन्होंने संसारको दिखलाया कि राजनीति केवल योग्यता और भाषण नहीं है; अपितु वह आध्यात्मिक जीवन है। इस भीषण दुर्घटनाने सिद्ध कर दिया है कि धार्मिक असहिष्णुता एवं कटुताके दुष्परिणाम कितने भयावह होते हैं। भारतको इसका कुफल भोगना पड़ा और गांधीजी जैसे पुरुषसे हाथ धोना पड़ा। अब कौन अत्याचारोंके विरुद्ध उपवास करेगा? हमारा जीवन पवित्र होना चाहिये; यही गांधीजीके प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि है। हम लोग उनका पदानुसरण करें और अपने आचरणों द्वारा उपदेश दें। यही गांधीजीकी विजय है।

श्री मुहम्मद उस्मान

[वायसरायकी शासन-परिषद्के भूतपूर्व सदस्य]

मुसलमान जातिने महात्माजीके हालके कलकत्ता और दिल्लीमें किये गये अनशनोंसे अपरिमित लाभ उठाया। इस देशकी जनताके हृदयमें वे सदाके लिए प्रतिष्ठित हो गये हैं, अतः उनके स्मारक बनानेकी कोई आवश्यकता नहीं है।

कुमारराजा सर एम० ए० मुत्तया चेट्टियर

[मद्रासके सुप्रसिद्ध नेता]

महात्मा गांधीके पार्थिव अवशेषोंके अंतिम संस्कारके साथ ही हमारी जीवन-ज्योति भी बुझ गयी। अब हमारे आँसू कौन पोंछेगा! महात्मा गांधी हमारे राष्ट्रके प्रतीक थे। यह अपूरणीय क्षति शब्दोंमें व्यक्त नहीं की जा सकती। इस विपत्तिका सारे विश्वपर प्रभाव पड़ा है। हमारे लिए अब केवल यही संतोष-की बात है कि महात्माजी मरे नहीं, वे सदैवके लिए अमर हो गये हैं। डाक्टर होम्सने ठीक ही कहा है कि वह ईसाके अवतार थे। वर्तमान युगमें विश्वकी विचारधारापर महात्मा गांधीसे अधिक किसीका प्रभाव नहीं पड़ा है। हम लोगोंके लिए उनके कथन वेद-वाक्य थे। मानव-समाजमें शांति और सद्भाव स्थापित करनेका भार वे हम लोगोंको विरासतमें दे गये हैं। कदाचित् उनका बलिदान इस पुनीत कार्यको पूरा करनेमें अधिक सहायक सिद्ध हो। यदि हम राष्ट्रपिताके प्रति सच्चे हैं तो हमारा कर्त्तव्य है कि हम उनके उपदेशोंका प्रचार करें जिससे संपूर्ण विश्वमें उस प्रेम और एकताकी स्थापना हो सके जो मानव-जातिकी शांति और सुरक्षाके लिए नितांत आवश्यक है।

❀

श्री एच० ओ० फाउलर

[प्रसिद्ध ईसाई लेखक : मद्रास]

आज हमारा देश शोकमग्न है। आजके अन्धकाराच्छन्न विश्वमें महात्माजी निःसंदेह पवित्रतम तथा उज्ज्वलतम प्रकाश-किरण थे। उनकी मृत्युसे हमारा देश इस समय प्रेरणा और पथ-प्रदर्शनके स्रोतसे विहीन हो गया है। जब हमारे चतुर्दिक अत्यंत कठिन समस्याएँ छायी हुई हैं, इस राष्ट्रकी देशभक्त जाति होनेके नाते, हम समस्त एंग्लो-इंडियन उस वास्तविक महापुरुषके निधनसे अत्यंत शोकमग्न हैं।

० ० ०

आज इस महादेशके सभी नर-नारी और बाल-वृद्ध उस महामानवकी स्मृतिमें अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करनेके लिए व्यग्र हैं। सभी युगोंमें ऐसे व्यक्ति हुआ करते हैं, जिनका भावी युगके इतिहासकारों द्वारा, नवयुग-प्रवर्त्तक नेताके रूपमें वर्णन हुआ करता है। ऐसे ही व्यक्ति विश्व-हितकर्त्ता तथा युगप्रवर्तक हुआ करते हैं।

उनका समस्त जीवन न्याय और सत्यकी साधनामें व्यतीत हुआ। आज महात्माजीके न रहनेपर हमारे आँसू और श्रद्धांजलिके सुमन तबतक निरर्थक हैं जबतक हममेंसे प्रत्येक व्यक्ति प्रेम और अहिंसाके उस प्रकाशको प्रज्ज्वलित रखनेमें अपना उत्सर्ग न कर दे।

❀

श्री अवधानंद

[मंत्री : हिन्दी-प्रचार-सभा, त्रिचनापली]

महात्माजीका जीवन समस्त विश्वके लिए महान संदेश था। उनके जीवनसे जितने उपदेश और जितनी शिक्षाएँ हम चाहें प्राप्त कर सकते हैं। अनुशासनकी शिक्षा उनके चरित्रसे हमें पदे-पदे प्राप्त होती है। उनकी कल्पनाके अनुरूप आदर्श भारतका निर्माण करनेके लिए भारतके प्रत्येक नागरिकका अनुशासनप्रिय होना अत्यावश्यक है।

इसी प्रकार निःस्वार्थ सेवा, देश-प्रेम, मानव-सेवा तथा कर्त्तव्यपरायणता भी उनके महान जीवनके महान संदेश हैं।

उनका आदर्श और आचरण, सिद्धांत और प्रयोग समान थे। वे जो कहते थे वही करते थे। अपने विरोधियोंके प्रति उनकी सहिष्णुता असाधारण थी। सत्य ही उनके लिए ईश्वर था। वे उच्चता और पवित्रताके साकार प्रतीक थे। उनके आदेशों एवं उपदेशोंपर चलकर ही हम उनकी आत्माको सच्ची शांति प्रदान कर सकते हैं।

❀

श्री एन० हालस्यम्

[प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता]

युग-युगके मध्यमें दिखायी पड़नेवाली ज्योतिका प्रकाश आज लुप्त हो गया। तमसाच्छादित विश्वको सम्प्रति मार्ग दिखानेवाला कौन है। महात्मा बुद्ध, सुकरात और ईसा मसीहमें जितने गुण विद्यमान थे, बहुत वर्षोंतक कठिन तपस्या करके उनको हमारे अवतारी पुरुष बापूने प्राप्त किया था। उस पावन तथा श्रेष्ठतम शरीरका हम पुनः कब दर्शन करेंगे। माननीय बापूकी सस्मित वदन-ज्योति परब्रह्म परमेश्वरमें लीन हो गयी। आज हम अकिंचन असहाय होकर विलाप कर रहे हैं। सबके मुखसे हाय-हायके शब्द निकल रहे हैं। वृक्षोंकी पत्तियोंने अपना कंपन स्थगित कर दिया है, फूल मुरझा गये हैं, आबालवृद्ध विलाप कर रहे हैं। सभी किंकर्त्तव्यविमूढ़ हैं। कोटि कोटि जनताके लिए गांधीजीने जो कार्य किया उसका परिणाम उनके साथ रहकर देखनेके लिए हम

भाग्यशाली न रह सके। हमें चाहिये कि उस शांतिमूर्ति एवं तपस्वीका आदर्श अपनावें। संसारमें कल्याणका प्रचार करनेके लिए यही सच्चा मार्ग है।

यदि हम लोग उनके निर्दिष्ट पथपर नहीं चलेंगे तो जो उन्होंने हमारे लिए किया है वह नगण्य हो जायगा। हम अधिक क्या कहें, वह हमारे लिए ईश्वरके तुल्य क्या, साक्षात् ईश्वर ही थे।

❀

श्री डब्लू० बेचलर

[मद्रासके प्रसिद्ध यूरोपियन]

करोड़ों व्यक्तियोंके हृदयमें निवास करनेवाले महात्माजीके महाप्रयाणपर भारतीय जनताके साथ ब्रिटिश जन भी आज अपनी शोकांजलि प्रदान कर रहे हैं। उनका बल आत्मबल था; और अभी उनके नेतृत्वकी परमावश्यकता थी। हमें चाहिये कि उनके निर्दिष्ट मार्गपर स्वयं चलें और दूसरोंको भी ले चलें।

❀

श्री के. एम. बालसुब्रह्मण्यम्

[त्रिचनापल्लीके कांग्रेसी नेता]

आज महात्मा गांधी अपना पार्थिव शरीर त्याग कर अखिल विश्व-नियन्ताकी गोदमें छिप गये। जिस बातकी हमने कल्पना भी नहीं की थी, वह प्रत्यक्ष दिखाई दी। ज्ञानके सम्राटका आज अंत हुआ। भूमण्डलमें शान्तिकी नींव दृढ़ बनानेके लिए उनका अवतार हुआ था

❀

सर मोहम्मद यामीन खाँ

[केन्द्रीय व्यवस्थापिका सभाके भूतपूर्व उपाध्यक्ष]

अनेक शताब्दियोंके इस महापुरुषके जघन्य वधसे सारा विश्व स्तब्ध हो गया है। साम्प्रदायिक ऐक्य-स्थापनके पुनीत प्रयासमें उनका बलिदान हुआ। बलिदानने उनको शहीदोंकी श्रेणीमें रख दिया और गान्धीवादको एक प्रगतिशील शाश्वत धर्म बना दिया है। मैं पाकिस्तान तथा भारतके मुसलमानोंसे निवेदन करता हूँ कि वे साम्प्रदायिक द्वेषको दूर करें और उस कार्य्यको पूरा करें जिसके लिए गान्धीजी बलि हो गये।

❀

सर सी० पी० रामस्वामी अय्यर

[त्रावनकोरके भूतपूर्व दीवान]

सहिष्णुता एवं समन्वयके उपदेशक महात्मा गांधीसे विहीन भारतमें अब उनके संदेश ही भविष्यके आशाके केन्द्र हैं। अब भारतीय नेताओंके लिए निम्नलिखित कर्त्तव्य हैं—हिन्दू-मुस्लिम-एकता, शोषक-शोषितोंका प्रश्न, जाति-प्रथाके दूषणोंका उन्मूलन, पूँजी तथा श्रमका न्यायोचित समन्वय, जमींदार तथा कृषकोंका न्याय्य सम्बंध, शासक एवं शासितोंके अधिकार। गान्धीजीके उपदेशोंके विरुद्ध चलनेसे केन्द्रित उद्योग-धन्धोंकी वृद्धि होगी और परिणामतः केन्द्रित शासन-प्रणालीका उदय होगा। भविष्यके नेताओंके कर्त्तव्य है कि इस संक्रमण कालमें पुरानी और अच्छी बातोंका भी संरक्षण हो।

० ० ०

भारतमें इस समय महात्माजीकी मृत्युकी जो दुःखद गम्भीरता है उसको बाहरी लोग नहीं जान सकते। संसारके लिए वह भारतीय संस्कृति तथा आत्माके प्रतीक थे। विचार एवं कर्मके विभिन्न क्षेत्रोंमें वह देशके केन्द्र-बिन्दु थे। यह बात निर्विवाद है कि महात्माजीका प्रभाव देशपर अनुपम था और उसका उपयोग उन्होंने देशकी स्वतंत्रता एवं उत्थानके लिए आत्मत्याग एवं आत्मबलिदान द्वारा किया।

डाक्टर आर० एम० अलगप्पा चेट्टियर

[प्रसिद्ध व्यवसायी तथा उद्योगपति]

सत्य एवं प्रकाशका अन्वेषक चला गया। भारत अन्धकार-ग्रस्त है। विश्व अपने अन्यतम आत्माके चले जानेसे दुःखी है। हमारे आँसुओंको पोंछनेवाला चला गया। आज सबकी आँखोंमें आँसू हैं। हम लोग अपने हृदयोंसे ईर्ष्या दूर करें, तभी उनके सच्चे अनुयायी कहे जा सकते हैं।

> "सारे संसारको भी प्रसन्न करनेके लिए मैं ईश्वरके साथ विश्वासघात न करूँगा। मैं तो काम करना पसंद करता हूँ। मेरी आखें बंद हो जाने पर ही मेरे कार्यपर मत प्रकाशन हो सकेगा। सत्यके अलावा मेरा कोई ईश्वर नहीं है।" —गांधीजी

श्रीमती राधाबाई सुब्बरायन

[प्रसिद्ध कांग्रेसी महिला]

समस्त विश्वके दलितों और पीड़ितोंके सबसे बड़े मित्र महात्मा गांधी युग-युगतक हमें स्फूर्ति देंगे।

श्री अल्लाड़ी कृष्ण स्वामी अय्यर

[सुप्रसिद्ध वकील तथा विधान-शास्त्री]

युगके सर्वश्रेष्ठ मानव और विश्वके महान पुरुषोंमें भारतीय स्वतंत्रताके विधाता राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी अपने ही निष्ठुर और पथभ्रष्ट देश-वासीके हाथों मारे गये।

मद्रास व्यवस्थापिका सभा शोक-प्रस्ताव

यह व्यवस्थापिका-सभा राष्ट्रपिता और हमारे स्वातंत्र्य-निर्माता महात्मा गांधीकी हत्यापर अत्यंत दुःखित है और इस प्रकार राष्ट्रकी जो अपूरणीय क्षति हुई है, उसके लिए हार्दिक शोक प्रकट करती है। अपने महान् नेताके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करनेका केवल एक मार्ग है और वह है सत्य, सेवा और अहिंसाके उन सिद्धांतोंका अनुसरण, जिनका वह उपदेश देते रहे और अपने आदर्श जीवनमें प्रयोग भी करते रहे।

"आवेश और क्रोधको वशमें कर लेनेसे शक्ति बढ़ती है और आवेशको आत्मबलके रूपमें परिवर्तित कर दिया जा सकता है।"

गांधीजी

मध्यप्रान्त

माननीय मंगलदास मछाराम पक्वासा

[गवर्नर मध्यप्रांत और बरार]

इस समय गांधीजीके संबंधमें लिखना या कुछ कहना कठिन कार्य है। हृदय शोक एवं दुःखसे व्याकुल है। उनके वियोगसे हम एकाकी और असहाय हो गये हैं। भारत तथा विश्वको दिये गये उनके उपदेशोंको इस समय पूर्णतः व्यक्त करना असंभव है। सत्य गांधीजीका ईश्वर था। वह प्रतिदिन ईश्वरकी आराधना करते थे, पर अपूर्व ढंगसे। मंदिरमें वह नहीं जाते थे और न मूर्त्तिपूजा करते थे। उनका मंदिर तो खुला मैदान था। प्रार्थनामें उनका विश्वास था और वह उसको हृदय पवित्र बनानेका दैनिक तथा शाश्वत साधन मानते थे। हृदयको पवित्र तथा प्रकाशित रखनेसे ईश्वरकी इच्छा उसमें प्रतिबिम्बत होती है। उनकी ईश्वरमें श्रद्धा अचल थी और अमरतामें उनका विश्वास था। मृत्युमें वह विश्वास नहीं करते थे। वह मृत्युको मित्र मानते थे, अतः उससे डरते नहीं थे। उन्हें अपने मित्र (मृत्यु) से कोई भय न था। और उनके मित्र, (मृत्यु) ने भी भयके कारण उन्हें धर्मपालन करनेसे कभी नहीं रोका।

उनको बंदूक या अन्य किसी घातक अस्त्रसे भय न था। वह साधारण पुरुषको भी शस्त्रधारीके समान निर्भय बना देते थे। योद्धाकी निर्भयताका कारण उसका शस्त्रास्त्र होता है, पर साधारण पुरुषोंकी निर्भयताका आधार उनकी ईश्वर-भक्ति एवं उनका सत्य होता है।

दूसरी चीज, जिसमें गांधीजीका विश्वास था, शांति तथा प्रेम थी। ब्रिटिश साम्राज्यके विरुद्ध युद्धमें भी, वह किसीके प्रति घृणा नहीं रखते थे। सेवा एवं त्यागके द्वारा वह अपने आदर्शोंकी पूर्ति एवं जनताका कल्याण चाहते थे। उन्होंने अनेक स्त्री-पुरुषोंको निःस्वार्थ सेवाकी प्रेरणा दी। उनकी स्मृतिमें ग्रंथ लिखे जायेंगे, स्मारक बनाये जायेंगे और अनेक प्रकारके कार्य होंगे, पर उनको तो संतोष इस बातसे होगा कि लोग उनके बताये हुए मार्गपर चलकर उनके आदर्शोंकी पूर्ति करें। यदि विश्व तथा भारत अपने ही रास्ते चलते हैं, तो इन स्मारकोंसे क्या होगा। विश्वके लिए यह प्रेरणात्मक स्मारक होगा यदि भारत गांधीजीके

आदर्शों एवं सदाचारोंको थोड़ा भी अङ्गीकार कर ले। लोगोंका विश्वास है कि मृत्युके अनंतर गांधीजीकी आत्मा सभी श्रेणीके भारतीयोंको प्रभावित करेगी और वे उनके बताये राज-मार्गसे शांति, प्रेम, एवं आनन्दके लक्ष्यपर पहुँचेंगे तथा उनके आध्यात्मिक नेतृत्वसे भारत विश्वके राष्ट्रोंमें उच्च स्थान प्राप्त करेगा।

❀

मानतीय घनश्याम सिंह गुप्त

[अध्यक्ष : मध्यप्रांत और बरार व्यवस्थापिका-सभा]

आज हम ऐसी घोर आपत्तिके बाद मिल रहे हैं जिसे इतिहास कभी न भूलेगा। एक माह पूर्व इस पृथ्वीके सबसे बड़े महापुरुष, भारतीय स्वतंत्रताके प्रवर्तक, हमारे राष्ट्रपिता, महात्मा गांधीकी हत्या की गयी। जिस देश और जिस समाजको ऊँचा उठाने और पवित्रतर बनानेके लिए उन्होंने अपना सारा जीवन अर्पण किया था उसी देश और उसी समाजका एक व्यक्ति इस घृणित कार्यको करनेवाला हो यह अत्यंत लज्जा और दुःखकी बात है। महात्मा गांधी उन स्थित-प्रज्ञ व्यक्तियोंमेंसे हैं जिनका वर्णन श्रीमद्भगवत् गीतामें किया गया है, और जिन्हें पानेका सौभाग्य इस संसारको हजार वर्षमें एक-आध बार होता है। डूबतोंके वह सहारा थे। यदि कोई व्यक्ति या समुदाय सच्चाईपर है तो वह उनको अपना अचूक आश्रय पाता था, चाहे वह किसी संप्रदाय अथवा मतमतांतरका हो और चाहे दुनिया भी उसके विरुद्ध क्यों न हो। उनके इस गुणका अनुभव कइयोंको प्राप्त होनेका अवसर मिला है। मुझे भी इसका सौभाग्य मिला था जब दो बार आर्यसमाज ऐसी संकटमयी परिस्थितिमें पड़ा था। उनके गुणोंका वणन कर सकना तो असंभव है। संसारके सभी लोग मुक्तकंठसे उन्हें कलहाक्रांत जगतके परित्राताका स्थान दे रहे हैं। ऐसे दिवंगत आत्माके प्रति मैं अपनी ओरसे तथा इस सभाकी ओरसे नम्रातिनम्र श्रद्धांजलि अर्पण करता हूँ। परमात्मासे प्रार्थना है कि हम सबको उनके पदचिन्होंपर सर्वविध चलनेकी शक्ति तथा बुद्धि प्रदान करे। धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ शांतिः शांतिः शांतिः।

माननीय पं० रविशंकर शुक्ल

[प्रधान मंत्री : मध्यप्रांत]

देशमें जो अत्यंत दुःखदायी घटना घट सकती थी, वह आज घट गयी। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी गोलियोंसे मारे गये। गांधीजीके देहांतका समाचार मिले कुछ इतना समय नहीं हुआ है कि इस बीच हम सब सम्बद्धतापूर्वक

कुछ सोच विचार कर सकें। हम सब एकदम आश्चर्यचकित तथा दुःखी हैं। किंतु हमें इस महान शोकके अवसरपर यह नहीं भूलना चाहिये कि महात्मा गांधी मनुष्य-मात्रमें परस्पर सद्भावना बनाये रखनेकी खातिर जिये और उसीकी खातिर मरे। प्रांतके प्रत्येक नागरिकसे मेरी प्रार्थना है कि वह इस तरहका व्यवहार करे कि जिससे महात्मा गांधीकी आत्माको सुख और शांति पहुंचे।

यह समय तो भाषणका नहीं है। महात्मा गांधी जैसा व्यक्ति संसारके इतिहासमें शताब्दियों बाद हमारे देशको प्राप्त हुआ। और इस देशको उन्होंने अंधकारसे निकालकर सारी दुनियामें उसका नाम और उसके झंडेको ऊँचा उठाया। उन्हींकी छायामें हम लोगोंने इतने विशाल और बड़े साम्राज्यके साथ लोहा लिया और इस देशको यदि किसी व्यक्तिने स्वतंत्र बनाया है तो वह थे महात्मा गांधी। उनकी जो बातें हैं जिसकी बुनियादपर उन्होंने स्वतंत्रता स्थापित की, उसका एक मंदिर बनाया और मंदिरके शिखरपर जो कलश लगाया वह था देशमें एकता स्थापित करना। उन्होंने जो सबक सिखाया वह यह है कि दुनियामें कोई ऊँचा नहीं, कोई नीचा नहीं। कोई किसी भी धर्मका क्यों न हो, वह भी इसी देशका निवासी भारतीय है। हमें जात-पाँतको भुलाकर एकमात्र भारतीय बननेका सबक उन्होंने सिखाया। अगर यह बात हम कर सके और इस देशको आगे बढ़ा सके तो मैं समझता हूँ कि उनके मरनेके बाद भी इस देशमें हम अपनी कौम तथा देशको ऊँचा रख सकेंगे। उन्होंने जो हमें शिक्षा दी है वह तो शायद किसीको शताब्दियोंके बाद ही प्राप्त होती है। महापुरुष सारे संसारको एक कुटुम्ब मानकर ही काम करते हैं। यद्यपि वे जीवनमुक्त हो जाते हैं तथापि वे हमारा पथ-प्रदर्शन करते रहते हैं। इसीके अनुसार हमारा विश्वास है कि जब-जब हमपर संकट पड़ेगा, यह महान आत्मा हमारा साथ देगी और इस देशको अच्छे मार्गपर चलानेका प्रयत्न करेगी।

o o o

हमने आज बापूका अंतिम संस्कार कर दिया और जो कुछ उनकी कायाका पुनीत अवशेष था उसे इसी पुण्यसलिला नर्मदामें प्रवाहित कर दिया। फिर भी इस विश्वासपर हम स्थिर हैं कि आत्मा अमर है, केवल काया ही नश्वर है। बापूकी आत्मा तो महान थी, वे अजर अमर रहेंगे ही। आज तो हम यही सोच लें कि जिस साधनामें बापू रत रहे, अंततः उसीमें अपने आपको उन्होंने उत्सर्ग कर दिया। इस देशको एक बनाना ही उनका अभीष्ट था। स्वयं तो उन्होंने कुछ न उठा रखा, पर हमारी ही कमजोरियोंके वह शिकार हो गये।

अब तो हमें सांप्रदायिक मनोवृत्तिका त्याग करना ही होगा। बापूको तिलांजलि देनेके बाद यही कहना, यही सोचना, हम सबका धर्म हो जाता है कि हम भारतीय हैं, केवल भारतीय।

माननीय द्वारिकाप्रसाद मिश्र

[गृह-मंत्री : मध्यप्रांत]

अरे, गांधीका उत्सर्ग हो गया और कलियुग बाकी है। नहीं, वह तो आजसे समाप्त हो गया। महात्माजीके प्रसाद-स्वरूप आजादी आयी, गुलामी मिट गयी। अब कलियुगका नाम भूल जाइये। वह कायरता और बुजदिलीकी निशानी है। महाभारतमें कहा है कि महापुरुष कालको बदल देते हैं। बापूने भी वही किया। यदि आजसे हमने इस युगको गांधी-युग कहना न प्रारंभ किया तो आनेवाली संतति उस दिनसे ही गांधी-युग मानेगी, जिस दिन वे धरापर अवतीर्ण हुए थे।

o o o

हम क्या शांति प्रदान करेंगे उस महान आत्माको। हमारी सिफारिशोंसे नहीं, उनके कर्म ही ऐसे रहे कि शांति उनकी चेरी बनी रहेगी। मैं तो यही याचना करता हूँ कि बापूकी आत्मा इस हिंदुस्थानकी आत्माको शांति प्रदान करे।

❁

माननीय सम्भाजी विनायक गोखले

[शिक्षा-मंत्री : मध्यप्रांत]

बापूके इस आकस्मिक निधनसे भारत अनाथ हो गया। दलितों, दुःखियों और पीड़ितोंका सहारा उठ गया। सांप्रदायिकताकी ज्वालामें आज पीड़ित मानवताका सबसे बड़ा सेवक भस्म हो गया। इस महान शोकके समय हमारा यही कर्त्तव्य है कि अपनी बुद्धि स्थिर रखें और बापूके ध्येयकी साधनामें अपना जीवन लगा दें।

❁

माननीय रामराव कृष्णराव पाटिल

[खाद्य-मंत्री : मध्यप्रांत]

भारतकी स्वतंत्रताके जन्मदाता महात्मा गांधीका आकस्मिक निधन सुनकर हृदय स्तब्ध हो गया। जिसने आजीवन हिंदू-आदर्शोंकी पुनःप्रतिष्ठामें, भारतीय संस्कृतिके पुनः प्रचारमें अपना सारा जीवन लगा दिया उसकी हत्या

बिड़ला-भवनमें महानिद्रामें लीन बापू और उनके निकट सर्वस्व खोया-सा शोकमग्न परिवार ।

हत्याकाण्डके बाद ही घटना-स्थल पर पुलिस आदि द्वारा जाँच-पड़तालका दृश्य।

गांधीजी की हत्याका समाचार सुनकर विशाल, अधीर जनसमूह बिड़ला-भवनके बाहर एकत्र हो गया। अंततः रातके समय शोक और विषादसे भरा हृदय लेकर नेहरूजीको छतपर खड़े होकर 'जनताको गांधीजीके निधनका हृदयद्रावक समाचार सुनाना पड़ा।

करनेवालेने हिंदू जातिका सबसे बड़ा अहित किया। अपने इस दुष्कृत्यका प्रायश्चित न जाने कबतक हिंदू जातिको करना पड़ेगा। बापूके आदर्शोंपर चलना ही उनके प्रति सबसे बड़ी श्रद्धांजलि है।

० ० ०

अहिंसाके सबसे बड़े प्रचारक तथा शांतिके अग्रदूतकी पाशव हत्याने इस सभ्यताके कृत्रिम स्वरूपका रहस्य उद्घाटित कर दिया है। अनाथों, हरिजनों और पीड़ितोंका आँसू पोंछनेवाला तथा अपनी मधुर स्मितिकी सुधासे उनके व्रणोंपर मलहम लगानेवाला आज नहीं रहा। कृष्ण, बुद्ध और ईसाके उपदेशोंके पुंजीभूत प्रतीक बापू दिवंगत होकर भी युग-युगतक हमें सत्य पथपर चलनेकी प्रेरणा देते रहेंगे।

❀

माननीय दुर्गाशंकर कृपाशंकर मेहता

[राजस्व-मंत्री : मध्यप्रांत]

महात्मा गांधीके व्यक्तित्वकी तुलना विश्वके इतिहासमें इने-गिने महापुरुषोंके साथ की जा सकती है। उनका समस्त जीवन आदर्शमय था। उनके उपदेशोंका महत्त्व आजके युद्ध-विकल विश्वको एक न एक दिन अवश्य स्वीकार करना पड़ेगा। भगवानसे हमारी प्रार्थना है कि उनके बताये हुए पथपर चलनेकी शक्ति हमें प्रदान करे।

❀

माननीय रामेश्वर अग्निभोज

[कृषि मंत्री : मध्यप्रांत]

यों तो भारत देवताओंका देश है, यहाँकी नदियाँ उनके पद-प्रक्षालनसे पुनीत हो चुकी हैं; किंतु जब भगवान गांधीने जन्म लिया, इस देशकी महत्ता अपूर्व हो गयी। आज मेरे भगवानकी अस्थियोंको आत्मसात् कर इस देशकी पुण्य सलिलाओंके भाग्य और भी निखर उठे। जबतक ये प्रवाहित होती रहेंगी बापूकी कीर्ति-सुरभि प्रवाहित करनेका सौभाग्य इन्हें प्राप्त रहेगा।

आज नर्मदाकी मर्यादाको चार चाँद लगे। उसका तो उद्धार हुआ ही, साथ ही हम भी तरे। उसके तटपर आते ही, इसके जलका पान करते ही हमें और आनेवाली पीढ़ियोंको यह याद हो आयेगा कि इसमें हमारे पूज्य बापूकी भस्म मिली हुई है।

❀

माननीय बाबा आनंदराव देशमुख

[आबकारी मंत्री : मध्यप्रांत]

बापू केवल भारतके ही नहीं वरन् समस्त मानवताके सबसे बड़े सेवक थे। पर यह गौरव भारतकी पावन धरित्रीको ही प्राप्त हुआ जो वह ऐसे विश्व-वंद्य महामानवको अपनी गोदमें आविर्भूत कर सका। उनके आदर्शोंपर चलकर पीड़ित मानवताकी सेवा करना ही हमारा प्रथम कर्त्तव्य होना चाहिये।

❀

माननीय डाक्टर वामन शिवदास बरलिंगे

[निर्माण मंत्री : मध्यप्रांत]

विश्वकी विभूति आज लुट गयी। अहिंसा, सत्य और प्रेमका अनुपम अवतार आज धरातलसे उठ गया। पर बापूने जिस आदर्शकी स्थापना की और जिन सिद्धांतोंका अपने आचरणसे प्रतिपादन किया वह विश्वकी शाश्वत संपत्ति है। हमें उनके मार्गपर चलकर भारतका विलुप्त गौरव पुनः प्रतिष्ठित करना चाहिये।

❀

श्री एलेक्ज़ेण्डर ओगिलवी हार्डी

[लार्ड बिशप : नागपुर]

महात्मा गांधीके दुःखद निधनसे सामान्यतः समस्त विश्वकी और विशेपतः भारतकी अपूरणीय क्षति हुई है। विश्वके इतिहासमें जितने महापुरुष हुए हैं उनमें महात्माजीका प्रमुख स्थान रहेगा और उनके आदर्शका पवित्र ध्येय विश्वके प्रत्येक क्षेत्रको प्रभावित करता रहेगा। यद्यपि आज विश्वकी जो हानि हुई है उसकी गुरुताका उचित मूल्यांकन अभी नहीं किया जा सकता तथापि शीघ्र ही ऐसा समय आयेगा जब लोगोंको यह विश्वास करना पड़ेगा कि सच्ची और स्थायी शांतिकी सिद्धि गांधीजीके सत्य तथा अहिंसाके सिद्धांतका अनुसरण करनेसे ही प्राप्त हो सकती है। इसीका प्रचार और प्रसार महात्मा गांधी आजीवन करते रहे। अतः सभीको सच्चे हृदयसे गांधीजीकी शिक्षाका अनुसरण और अपने दैनिक जीवनमें उसीके अनुसार आचरण करना चाहिये।

❀

श्री सेठ गोविन्द दास

[अध्यक्ष : मध्यप्रतीय कांग्रेस कमेटी]

बापू चले गये—यह अर्ध सत्य है। सर्वाङ्ग सत्य तो यह है कि वे अमर हो गये। मैं तो यह मानता हूँ कि बापूका अवसान ऐसा ही होना चाहिये था। मृत्युने कृष्णके बाद महात्मा गांधीको ही इस विधिसे वरण किया। हम अपने आपको अनाथ और असहाय महसूस करें, यह स्वाभाविक है। पर अपेक्षित यह है कि हम उनके उठ जानेपर उनके आदर्शोंका सहारा लें। हमारा राष्ट्रपिता बेताजका बादशाह था। कोई पद नहीं था उसके पास, फिर भी वह समस्त भारतका हृदय-सम्राट था, केवल इसीलिए कि वह सेवाका व्रती था, मानव-कल्याणकी उसने साधना की थी। बापूके इस श्राद्ध-दिवसपर आइये, हम भी उनके व्रतमें दीक्षित हो जायँ; सेवाका व्रत ले लें और दिवंगत आत्माको बापू कहनेके योग्य बनें।

बापू जहाँ विराज रहे, उस तटको छोड़नेको किसीका जी नहीं होता था। किंतु भगवान गांधीके पंथमें निष्क्रियताको जगह नहीं। मृत्युंजय बापूने वह दिन आया जान ही तो राष्ट्रकी नैयाकी पतवार फेंकी है, जब हम उसे सम्हाल लेंगे इस विश्वासके साथ कि देश उनके आदर्शोंकी प्रतिष्ठाकी प्रतिज्ञा-पर अटल रहेगा।

आचार्य विनोबा भावे

[प्रसिद्ध संत और गांधीवादी]

अभी इस समय दिल्लीमें यमुना नदीके किनारे एक महान पुरुषकी देह अग्निमें जल रही है। हम यहाँ जिस तरह अभी प्रार्थना कर रहे हैं उसी तरह हिन्दुस्तान भरमें प्रार्थना चल रही है। कलके ही दिन! शामके पाँच बज गये थे। प्रार्थनाका समय हुआ और गाँधीजी प्रार्थनाके लिए निकले। प्रार्थनाके लिए लोग जमा हुए थे। गांधीजी प्रार्थनाकी जगहपर पहुँचे ही थे कि किसी नौजवानने आगे झपटकर गांधीजीकी देहपर गोलियाँ चलायीं। गांधीजीकी देह गिर पड़ी। खूनकी धारा बहने लगी। बीस मिनटोंके बाद देहका जीवन समाप्त हुआ। थोड़े ही समय पहले सरदार वल्लभभाई पटेल एक घंटे तक उनसे चर्चा करके घर लौट रहे थे। रास्तेमें ही उन्हें खबर मिली और वे लौट आये। बिड़ला भवनमें पहुँचनेपर जो दृश्य उन्हें दिखाई दिया उसका वर्णन उन्होंने कल

रेडियोपर किया। वह आपमेंसे बहुतोंने सुना ही होगा। लेकिन यहाँ देहातसे भी कुछ भाई आये हैं, उन्होंने वह नहीं सुना होगा। सरदार वल्लभभाईने एक बात बड़े महत्त्वकी कही। वह यह कि गांधीजीके चेहरेपर दया-भाव तथा क्षमाका भाव यानी अपराधीके प्रति क्षमा-वृत्ति, दिखायी देती थी। आगे चलकर वल्लभभाईने कहा कि इस समय कितना ही दुःख क्यों न हुआ हो, गुस्सा नहीं आने देना चाहिये और यदि आये भी तो उसे रोकना चाहिये। गांधीजीने जो चीज हमें सिखायी उसका अमल उनके जीते जी हम नहीं कर सके। लेकिन अब उनकी मृत्युके बाद तो हम अमल करें।

ऐसी ही घटना पाँच हजार साल पहले हिन्दुस्तानमें घटी थी। भगवान श्रीकृष्णकी उमर ढल गयी थी। जीवनभर उद्योग करके वे थक गये थे। गांधीजीकी तरह उन्होंने जनताकी निरंतर सेवा की थी। थके हुए एक बार जंगलमें वे किसी पेड़के सहारे आराम ले रहे थे। इतनेमें एक व्याध उस जंगलमें पहुँचा। उसे लगा कि कोई हिरन पेड़के सहारे बैठा है। शिकारी जो ठहरा! उसने लक्ष्य साधकर तीर छोड़ा। तीर भगवानके पाँवमें लगा और खूनकी धारा बहने लगी। शिकारी अपना शिकार पकड़नेके इरादेसे नजदीक आया। लेकिन सामने प्रत्यक्ष भगवानको आहत पाया। उसे बड़ा दुःख हुआ। अपने हाथोंसे बड़ा पाप हुआ ऐसा सोचकर वह दुःखी हुआ। भगवान श्रीकृष्ण तो थोड़े ही समयमें चल बसे। लेकिन मरनेके पहले उन्होंने उस व्याधसे कहा—"हे व्याध! डरना नहीं। मृत्युके लिए कुछ न कुछ निमित्त लगता ही है। तू निमित्त बन गया।" ऐसा कहकर भगवानने उसे आशीर्वाद दिया।

इसी तरहकी घटना पांच हजार वर्षोंके बाद फिरसे घटी है। यों देखनेमें तो ऐसा दिखाई देगा कि उस व्याधने अज्ञानवश तीर मारा था, यहाँ इस नौजवानने सोच समझकर, गांधीजीको ठीक पहचानकर, पिस्तौल चलायी। इसी कामके लिए वह दिल्ली गया था। वह दिल्लीका रहनेवाला नहीं था। गांधीजी जब प्रार्थनाके लिए जा रहे थे तब उनके पास पहुँचा और बिलकुल नजदीक जाकर उसने गोलियाँ छोड़ीं। ऊपरसे यों दिखाई देगा कि गांधीजीको वह जानता था; लेकिन वास्तवमें ऐसा नहीं था। जैसा वह व्याध अज्ञानी, वैसा ही यह युवक भी अज्ञानी था। उसकी यह भावना थी कि गांधीजी हिंदू-धर्मको हानि पहुँचा रहे हैं और इसलिए उसने उनपर गोलियाँ छोड़ीं। लेकिन दुनियाँमें आज हिंदू-धर्मका नाम यदि किसीने उज्ज्वल रखा तो वह गांधीजीने ही रखा है। परसों उन्होंने स्वयं ही कहा था कि "हिंदू-धर्मकी रक्षा करनेके लिए किसी मनुष्यको नियुक्त करनेकी जरूरत; यदि भगवानको आवश्यकता हुई तो इस कामके लिए वह मुझे ही नियुक्त करेगा।" इतना आत्मविश्वास उनमें था। उन्हें जो सत्य मालूम होता था वह वे साफ—सीधे कह देते थे। बड़े लोग अपनी रक्षाके लिए 'बाडी गार्ड' यानी

अंग-रक्षक रखते हैं। गांधीजीने ऐसे अंग-रक्षक कभी नहीं रखे। देहको वे तुच्छ समझते थे। मृत्युके पहले ही से वे मृत्युंजय थे? निर्भयता उनका व्रत था। जहाँ किसी फौजको भी जानेकी हिम्मत न हो वहाँ अकेले जानेको वे तैयार रहते थे।

जो सत्य है, लोगोंके हितका है, वही कहना चाहिये; फिर भले किसीको अच्छा लगे, बुरा लगे, या उसका परिणाम कुछ भी निकले; ऐसी उनकी वृत्ति थी। वे कहते थे, "मृत्युसे डरनेका कोई कारण ही नहीं है; क्योंकि हम सब ईश्वरके ही हाथमें हैं। हमसे जबतक वह सेवा लेना चाहता है तबतक लेगा, और जिस क्षण वह उठा लेना चाहेगा उसी क्षण उठा लेगा। इसलिए जो सत्य लगता है, वही कहना हमारा धर्म है। ऐसे समय यदि मैं शायद अकेला भी पड़ जाऊँ और सारी दुनिया मेरे खिलाफ हो जाय तो भी मुझे जो सत्य दिखायी देता है वही मुझे कहना चाहिये।" उनकी इस तरहकी निर्भीकतापूर्ण वृत्ति रही। और उनकी मृत्यु भी किस अवस्थामें हुई। वे प्रार्थनाकी तैयारीमें थे। यानी उस समय उनके चित्तमें भगवानके सिवा दूसरा विचार नहीं था। उनका सारा जीवन ही हमने सेवामय तथा परोपकारमय देखा है। परंतु फिर भी प्रार्थनाकी भावना और प्रार्थनाका समय विशेष पवित्र कहना चाहिये। राजनीति आदिके अनेक महत्त्वके कामोंमें वे रहते थे; लेकिन उनकी प्रार्थनाका समय कभी नहीं टला। ऐसे प्रार्थनाके समय ही देहमेंसे मुक्त होनेके लिए मानो भगवानने आदमी भेजा। अपना काम करते हुए मृत्युके समय हृदयके आनंदका और निमित्त मात्र बने हुए गुनहगारके प्रति दयाका—इस तरह दोहरा भाव उनके चेहरेपर मृत्युके समय था, ऐसा सरदार वल्लभभाईको दिखायी दिया।

गांधीजीने उपवास छोड़ा। उस समय देशमें शांति रखनेका जिन्होंने वचन दिया उनमें कांग्रेस, मुसलमान, सिख, हिंदू महासभा, राष्ट्रीय स्वयंसेवक दल आदि सब थे। हम प्रेमके साथ रहेंगे ऐसा उन्होंने वचन दिया और लोग उस तरह रहने भी लगे थे कि एक दिन प्रार्थना-सभामें गांधीजीको लक्ष्य करके किसीने बम फेंका। वह उन्हें लगा नहीं। उस दिन प्रार्थनामें गांधीजीने कहा—"मैं देशकी और धर्मकी सेवा भगवानकी प्रेरणासे करता हूँ। जिस दिन मैं चला जाऊँ, ऐसी उसकी मर्जी होगी उस दिन वह मुझे ले जायगा। इसलिए मृत्युके विषयमें मुझे कुछ भी विशेष भय नहीं मालूम होता है।"

दूसरा प्रयोग कल हुआ। भगवानने गांधीजीको मुक्त किया।

हम सब देह छोड़कर जानेवाले हैं। इसलिए मृत्युके विषयमें तनिक भी दुःख माननेका कारण नहीं है। अपने दो चार बच्चोंके विषयमें माताकी जो वृत्ति रहती है वही दुनियाँके सब लोगोंके विषयमें गांधीजीकी थी। हिंदू, हरिजन, मुसलमान, ईसाई और जिन राज्यकर्ताओंसे लड़े, वे अंग्रेज—इन सबके प्रति उनके दिलमें प्रेम था। सज्जनोंपर जिस तरह प्रेम करते हो वैसे हरिजनोंपर भी करो, शत्रुको

प्रेमसे जीतो, ऐसा मंत्र उन्होंने दिया। उन्होंने ही हमें सत्याग्रह सिखाया। खुद आपत्तियाँ झेलकर सामनेवालोंको जरा भी खतरा न पहुँचे, यह शिक्षा उन्होंने हमें दी। ऐसा पुरुष देह छोड़कर जाता है तब वह रोनेका प्रसंग नहीं होता। माँ हमें छोड़कर जाती है उस समय जैसा लगता है वैसा ही गांधीजीके मरनेसे लगेगा जरूर। लेकिन उससे हममें उदासी नहीं आनी चाहिये।

एकनाथ महाराजने भागवतमें कहा है—"मरनेवाले गुरुका और रोनेवाले चेलेका—दोनोंका बोध व्यर्थ गया"। एक था मृत्युसे डरनेवाला गुरु। मृत्युके समय वह कहने लगा—"अरे! मैं मरता हूँ!" तब उसके शिष्य भी रोने लगे। इस तरह गुरु और चेला दोनोंने ही जो बोध (ज्ञान) प्राप्त किया था वह व्यर्थ गया।

गांधीजी मृत्युसे डरनेवाले गुरु नहीं थे। जिस सेवामें निष्काम भावनासे देह लगायी जाय वह सेवा ही भगवानकी सेवा है। वह करते हुए जिस दिन वह बुलायेगा उस दिन जानेके लिए तैयार रहें, ऐसी शिक्षा उन्होंने हमें दी। तदनुसार ही उनकी मृत्यु हुई। इसलिए यह उत्तम अंत हुआ। हमें चाहिए, ऐसा हम समझ लें, और काम करने लग जायँ।

कुछ दिन पहले ही आश्रमके कुछ भाई गांधीजीसे मिलने गये थे। उस समय उनका उपवास जारी था। उपवासमें वे जिंदा रहेंगे या मर जायँगे, इसका किसको पता था। आश्रमके भाइयोंने उनसे पूछा—"आप यदि इस उपवासमें चल बसे, तो हम कौन-सा काम करें ?' गांधीजीने जवाब दिया—"इस तरहका सवाल ही आपके सामने कैसे खड़ा हुआ ? मैंने तो आपके लिए काफी काम रखा है। हिन्दुस्तानमें खादी तैयार करनी है। खादीका शास्त्र बनाना है। इतना बड़ा काम आपके लिए होते हुए 'क्या करें' ऐसी चिंता क्यों होती है ?"

इसलिए हमारे लिए उन्होंने जो काम रख छोड़ा वह हमें पूरा करना चाहिये। असंख्य जातियाँ और समाज मिलकर हम यहाँ एक साथ रहते हैं। चालीस करोड़का अपना देश है, यह हमारा बड़ा भाग्य है। लेकिन एक दूसरेसे प्रेम करते हुए रहेंगे तभी वह होगा। इतना बड़ा देश होनेका भाग्य शायद ही मिलता है। हमारे देशमें अनेक धर्म हैं, अनेक पंथ हैं। मैं तो यह समझता हूँ कि यह हमारा वैभव है। लेकिन हम सब प्रेमके साथ रहेंगे तभी यह वैभव सिद्ध होगा। हम प्रेमसे रहें यही गांधीजीने अपने अंतिम उपवाससे हमें सिखलाया है। बच्चे एक दूसरेके साथ प्रेमसे रहें—इसलिए जिस तरह माता भोजन छोड़ देती है वैसा ही वह उपवास था। सब मनुष्य एक-से हैं, यह उन्होंने हमें सिखाया। हरिजन-सेवा, खादी-सेवा, ग्राम-सेवा, भंगियोंकी सेवा आदि अनेक प्रकारके सेवा-कार्य हमारे लिए वे छोड़ गये हैं।

लेकिन मुझे सब लोगोंसे कहना यह है कि हम केवल शोक करते न बैठें। हमारे सामने जो काम पड़ा है उसमें लग जायँ। यह जो मैं आपसे कह रहा हूँ

वैसा ही आप मुझे भी कहें। इस तरह एक दूसरेको बोध देते हुए हम सब गांधीजीका बताया काम करने लग जायँ। गीता और कुरानमें कहा है कि भक्त और सज्जन एक दूसरेको बोध देते हैं और एक दूसरेसे प्रेम करते हैं; वैसा हम करें। आजतक बच्चोंकी तरह हम कभी-कभी झगड़ते भी थे। हमें वे सँभाल लेते थे। वैसा सबको सँभालनेवाला अब नहीं रहा है। इसलिए एक दूसरेको बोध देते हुए और प्रेम करते हुए हम सब मिलकर गांधीजीकी सिखावनपर चलें।

[परधाम, पवनार

o o o

हिन्दुस्तानके ऐतिहासिक कालमें जो घटना शायद कभी नहीं हुई थी सो अब घटी है। हिंदू-धर्ममें कभी किसी सत्पुरुषकी हत्या नहीं हुई, यह मेरा अभिमान था। पर वह अभिमान अब मिट्टीमें मिल गया है। एक सत्पुरुषकी हत्या हुई है; और वह भी ठीक ऐसा समय ढूँढ़कर, जब कि वह प्रार्थनाके लिए निकले थे, और इस ख्यालसे कि उससे हिंदू धर्मकी रक्षा होगी। ये तीनों बातें जब मैं सोचता हूँ तो मुझे अत्यंत लज्जा होती है।

अबतक बापू थे, तो वे हम लोगोंको ढाँकते थे। पर अब हम दुनियाँके सामने खड़े हैं। अब अगर हमें कोई ढाँक सकता है तो हमारा सद्विचार और सदाचार ही हमें ढाँक सकता है।

गांधीजीकी हत्या हुई, इस हेतु अगर हम गुस्सेमें आ गये और विवेक खो बैठे तो हम गांधीजीकी हत्यामें सहभागी होंगे और तेजोहीन बनेंगे। इसलिए देहकी चिंता छोड़कर, अगर हम चिंतन-पूर्वक अपने चित्तके दोषोंको धो डालेंगे. और नये मनुष्य बनेंगे तो बहुत कार्य कर सकेंगे। उसके लिए किसी संघटनकी जरूरत नहीं है, किसी रचनाकी जरूरत नहीं है। लेकिन तीव्र अंतःशोधनकी जरूरत है। उसके लिए तीव्रसे तीव्र ताड़ना बाहरसे जितनी दी जा सकती है, भगवानने हमें दी है।

[शांतिकुटीर, गोपुरी, नालवाड़ी

गांधीजीकी हत्याके विषयमें दुनियाँभरके महान पुरुषोंने अपने शोक-उद्गार व विचार प्रगट किये हैं। एक देशके मुख्य प्रधानने कहा है कि यह घटना बताती है कि विगत महायुद्धने मानवोंमें पशुताका कितना प्रचार किया है। उसी महायुद्धके एक बड़े सेनापति मैकआर्थरने कहा है कि हमें गांधीजीके विचारोंका आश्रय लेना ही पड़ेगा, और उसके बिना दुनियाँको शांति नहीं मिलेगी। चूँकि ये उद्गार एक सेनापतिके हैं, ध्यान खींचते हैं।

कहींसे भी हो, हिंसाकी हवा हिन्दुस्तानमें आ गयी है। इतने बड़े देशमें अनेक विचार-भेद और विवाद संभव हैं। इन विवादोंको निपटानेमें हिंसाको

मान्यता मिल गयी तो केवल अनर्थ ही है। यह बात समझमें आ जानी चाहिये; लेकिन नहीं आती है। बड़े-बड़े विचारक कहते हैं कि आखिर हमें अहिंसाका ही आश्रय लेना होगा, लेकिन अभी तो हिंसाके बिना नहीं चलेगा। पर हमें यह समझना चाहिये कि अहिंसा आखीरका धर्म नहीं, अभीका है, आखीरका भी है, बीचका भी है, हमेशाका है। लेकिन उसकी अत्यंत आवश्यकता अगर कभी है तो वह अभी है।

मैं कहता हूँ कि अभी अहिंसा बनाम हिंसाके बीच चुनाव करनेका सवाल नहीं है। चुनाव तो विज्ञान और हिंसाके बीच करना है। विज्ञान और हिंसा दोनों साथ नहीं चलेंगे। दोनों मिलकर हमें खा जायेंगे। अगर हिंसापर कायम रहना है तो विज्ञानको छोड़ दीजिये और पुराने जमानेमें चले जाइये, जिससे हिंसा चलेगी तो कमसे कम आजके जैसा नुकसान तो नहीं करेगी। अगर विज्ञानको रखना है तो हिंसाको खतम करना चाहिये। विज्ञानमें महान शक्ति है और अगर हिंसा छोड़ दें तो विज्ञानकी मददसे दुनियाँपर स्वर्ग उतार सकते हैं। पर विज्ञानके साथ हिंसाको जोड़ देंगे तो वह मानवको ही खतम करेगा। इसलिए जो भी विज्ञानकी इज्जत करता है उसे हिंसाके खिलाफ आवाज उठानी चाहिये। शिक्षण-शास्त्रको भी यही समझना है। हिंसा उसकी वैरी है। जहाँ हिंसा आयी वहाँ शिक्षण तो हो ही नहीं सकता। समाज-शास्त्र को भी यही समझना है। समाजका आधार हिंसा नहीं, अहिंसा ही है। अहिंसाके बगैर समाज-शास्त्र ही मिट जाता है। इस तरहसे सोचेंगे तभी यह हिंसाका असुर हट सकता है।

बापू गये और अब उनके स्मारककी चर्चा चल रही है। जो भी स्थूल स्मारक होंगे उनसे हमारी हँसी होगी; अगर हम अहिंसक-जीवन सिद्ध नहीं करते। इसलिए इन तेरह दिनोंमें हम आत्म-मंथन करें और जीवनमें सुधार करें।

एक भाईने लिखा है कि हमें प्रायश्चित्त करना चाहिये। वह क्या हो? अगर हमारे चित्तके किसी कोनेमें भी यह शंका रह गयी हो कि हिंसासे कुछ भी लाभ होता है तो उसे हम निकाल दें। यही उत्तम प्रायश्चित्त है। पर यह कहनेकी बात नहीं है। कहनेसे यह होनेवाली भी नहीं है।

[शांति कुटीर, गोपुरी, नालवाड़ी

बापूके जीवन कालम उनके विचारोंमें हमारी श्रद्धा थी। वह इस घटनासे कम होनेवाली नहीं है बल्कि हमारी श्रद्धामें जो भी कमी और हिचकिचाहट थी, वह मिट जायगी। और शायद इसीलिए ऐसी घटनाएँ भगवानकी योजनामें रहा करती हैं। "शायद" इसलिए कहता हूँ कि ईश्वरी योजनाको हम निश्चयपूर्वक नहीं जान सकते हैं। वह हमारी बुद्धि-शक्तिसे परे है।

इसलिए हमें उस चिंतामें नहीं पड़ना चाहिये। ऐसी घटनाओंसे हमें आंतरिक बल क्या मिल सकता है यही सोचना चाहिये। वैसा सोचते हैं तो बहुत मिल जाता है।

एक साथीने मुझसे पूछा, "गांधीजी जैसे एक महान पवित्र मनुष्यके ऊपर किसी हत्यारेका हाथ ही कैसे चला?" यह एक विचारकी बात है। मैंने कहा, "गांधीजी एक व्यक्ति थे ही कहाँ? उन्होंने तो हम सब लोगोंका बोझ उठा रखा था। हमारे जीवन मलिन हैं इसी कारण यह हत्या हुई। अगर वे एक व्यक्ति होते, हमारा जिम्मा उन्होंने न उठाया होता तो दूसरी बात होती। क्योंकि उन्होंने हम सबका जिम्मा उठाया, और आखीरतक उसे निभाते गये, इसलिए इस हत्याकी जिम्मेवारी हमारी है। यह जानकर जो विचार-दोष हमारेमें हों उन सबको निकालना चाहिये और जीवनमें वैसा परिवर्तन कर लेना चाहिये। यदि हम केवल बाह्य स्मारक, चाहे वे कितने भी उपयुक्त क्यों न हों, बनायेंगे तो उस कामको वे नहीं करेंगे जिसके लिए हमें तैयार होना है। और इस तरह तैयार हुए बिना इस घटनाका प्रायश्चित्त नहीं होगा।

[प्रार्थना-सभा, गोपुरी, नालवाड़ी

आज हिन्दुस्तानमें ऐसे भी मनुष्य हैं जिनके लिए उनके शिष्योंने अवतार होनेका दावा किया है। गांधीजीके बारेमें ऐसी मूढ़-भक्ति हम न रखें। वे एक मानव थे और मानव ही रहे। और उनको वैसे ही रहने देनेमें हमारे लिए अधिक लाभ है। ऐसा करनेसे एक सज्जनका चित्र हमारे सामने रहेगा, एक नैतिक आदर्श हमें मिलेगा, जिसकी आज दुनियाँको बहुत जरूरत है। उसके बदले अगर उन्हें देवता बना दें तो उससे देवोंको तो कोई लाभ होनेवाला नहीं है, उलटे मानवताका एक आदर्श हम खो बैठेंगे। भक्ति-भावनाके लिए पूरी सामग्री पहलेसे ही हमारे पास मौजूद है। उसके लिए नये देवताकी जरूरत नहीं है। जरूरत है जीवन-शुद्धिके एक पावन उदाहरणकी। नीतिके पुराने उदाहरण वह काम नहीं देते जो नया दे सकता है। वैसा उदाहरण बापूके रूपमें हमें मिल गया है। उसको देव बनाकर क्या हम खोयेंगे?

गांधीजीका बलिदान सब धर्मोंकी शुद्धि और एकताके लिए हुआ है। हिन्दुस्तानमें अपने पंथों और विचारोंका समन्वय प्राचीन कालसे होता आया है। हिंदू और मुसलमान, दोनोंका जबसे संबंध हुआ है, दोनोंका समन्वय करनेकी कोशिश कबीर, नानक आदि संतोंने की है। राम-रहीम, कृष्ण-करीम एक हैं, ये उन्हींके वचन हैं। लेकिन अभी मुख्यतया राजकीय कारणसे हिंदू मुसलमानोंमें भेद पैदा किया और बढ़ाया गया है। इसलिए फिर से "ईश्वर अल्ला तेरे नाम" की पुकार गांधीजीने चलायी और उसीका नतीजा उनका देह-समर्पण है।

बापूके विषयमें जो शोकोद्गार प्रगट हुए हैं उन्हें देखनेसे एक बात विशेष ध्यानमें आती है कि दुनियाँके कोने-कोनेसे और तरह-तरहके विचारवाले लोगोंके वे उद्गार आये हैं। उनमें कई पुरुष तो ऐसे हैं जो संघटित सरकारें चला रहे हैं, और हिंसात्मक संघटन भी करते आये हैं। कुछ चिंतनशील विचारक हैं। सबने बापूके संदेशको दुनियाँके लिए बहुत जरूरी समझा है। मतलब उसका यह है कि आज दुनियाँके विचारक हिंसासे तंग आ गये हैं। उससे कैसे छुटकारा पाना चाहिये, इसका दर्शन नहीं हो रहा है। लेकिन गांधीजीने सामुदायिक अहिंसाका जो विचार दुनियाँके सामने रखा है उसको किसी न किसी तरहसे और कभी न कभी अमलमें लाये बगैर छुटकारा नहीं है, और उसको अमलमें लानेकी शक्ति जितनी भी जल्दी हो सके उतना ही अच्छा होगा, ऐसा भाव उन शोकोद्गारोंमें है।

एक पवित्र आत्मा परमात्मामें लीन हो गयी है; और उसके देहका अंतिम अवशेष भी अब सृष्टिमें मिल गया है। देहके मरनेसे आत्माकी मृत्यु नहीं होती इसका प्रमाण आज हम सब लोगोंके मन दे रहे हैं! जो विचार गांधीजीके हृदयमें रहते थे, जिनका प्रचार देहके बंधनके कारण मर्यादित हुआ था, वे अब हम लोगोंके हृदयोंमें प्रवेश कर रहे हैं। भविष्यमें उनके अनुसार चलनेका हम यत्न करेंगे।

जगत्पिता परमात्मा संसारमें सदैव ही महापुरुषोंकी माला तैयार करता रहता है, और प्रत्येक संत अपनेसे पहलेवाले महापुरुषको पीछे छोड़ता हुआ आगे बढ़ जाता है। ऐसा ही एक महापुरुष हमारे बीच आया और चला गया। प्रत्येक संत संसारको तीन उपदेश देता गया—(१) अपने पड़ोसीसे प्रेम करो। (२) जो स्वयंको तुम्हारा दुश्मन कहता हो उससे भी प्रेम करो। (३) वैष्णव जन और सज्जनोंसे प्रेम करो। और इसके साथ यह भी कि जो प्राणी तुमसे मिले, उसे परमात्मा ही मानो तो संसारके सारे झगड़े ही समाप्त हो जायँ।

जहाँतक सम्भव हो सका हमने पहले तीन उपदेशोंपर अमल करनेका प्रयत्न किया और कुछ हदतक सफल भी हुए, किंतु चौथी बात सबसे कठिन प्रतीत हुई और वही हमारे मनके राग-द्वेष आदिका कारण हुई।

अभीतक एक महापुरुष ऐसा था जो सभीके लिए मान्य था और जिसकी आज्ञासे भिन्न-भिन्न धारावाले भी एक मत होकर काम करते थे। अब उसकी छाया हमारे सिरपरसे हट गयी और हम सबके ऊपर वह जिम्मेवारी आ पड़ी है। तो हमें अब यह प्रण करना चाहिये कि हम जिस व्यक्ति या जीवधारीसे मिलें, हमारे आचरण और व्यवहारमें सदा यही दृष्टि रहनी चाहिये कि वह ईश्वर तुल्य है, तो सारे झगड़ोंकी जड़ ही खत्म हो जायगी।

आचार्य काकासाहेब कालेलकर

[प्रसिद्ध गांधीवादी नेता और साहित्यिक]

राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजीने जीवन भर विविध और उत्कट तपस्याके द्वारा हिन्दुस्थानकी सेवा की ही, लेकिन उस सेवा-मन्दिरके कलश-रूप अपने वीरोचित मरणके द्वारा उन्होंने हिन्दुस्थानकी, हिंदू-धर्मकी, हिंदू समाजकी और अखिल मानव जातिकी दिव्य सेवा की है। जीवनका पूरा मूल्य चुकानेके बाद मरणका भी पूरा-पूरा मूल्य अदा करनेवाले महात्मा अब मुक्तात्मा हो गये हैं। शरीरके द्वारा जो कुछ भी सेवा और साधना हो सकती थी वह आखिरी बूँद तक पूरी करके उन्होंने अपना शरीर 'हे राम' के मंत्रके साथ भगवानके चरणोंमें अर्पण किया और भगवानने उनकी आत्माको शरीरके निधनसे मुक्त करके सारे विश्वमें विलीन होने दिया।

आज हम दुःख करते हैं; उनके लिए नहीं अपने लिए दुःख करते हैं। उनको तो परम शांति मिली है। आज उनका विजयोत्सव है। अब वे न केवल हिन्दुस्थानके लोगोंके हृदयमें किंतु दुनियाँके हृदयमें प्रतिष्ठित हो गये हैं। महात्मा गांधीकी मृत्युका दिन, मुक्तात्मा बापूका जन्म-दिन है। शरीरको ही पहचाननेवाले हत्यारेने उनका तपःक्षीण शरीर ले लिया। लेकर उसने कुछ भी नहीं पाया है। पाया है तो सारी मानव-जातिका धिक्कार।

हत्यारेकी ओर और उसके जो कोई भी साथी हों उनकी ओर प्रजाका क्रोध प्रकट होना स्वाभाविक है, लेकिन ऐसे समय महान आत्माकी महान मृत्युके समय हमें उसकी गम्भीरताको कलंक नहीं लगाना चाहिये। स्वराज्य सरकारके कानूनोंका अनादर करके अगर हम हत्यारे दुर्जनोंको अपने पुण्य-प्रकोपका भाजन करेंगे तो हमारा पुण्य-प्रकोप भी लज्जित होगा और महात्माजीके दिव्य बलि-दानका अपमान होगा। पापियोंकी दुष्प्रवृत्तिको रोकना सरकारका प्राथमिक कर्त्तव्य है। सरकार वह करेगी। हमारा कर्त्तव्य है कि हम पूज्य बापूजीके और अपने बीच ऐसी कोई भी तुच्छ वस्तुको आने न दें।

आज हमें अंतर्मुख होकर अपने-अपने हृदयोंको, क्षुद्र स्वार्थ, मत्सर, सांप्र-दायिकता और क्रोध आदिसे मुक्त करना चाहिये और उस हृदय-मंदिरमें बापू भगवानकी स्थापना करनी चाहिये।

❀

श्री किशोरलाल घ० मश्रूवाला

[प्रसिद्ध गांधीवादी नेता]

पूज्य बापूजीको कौन मार सकता था ? वे तो कबसे अमर हो चुके थे। उन्हें गोली मारनेवालेने तो उनको सुकरात, कृष्ण और ईसामसीहकी श्रेणीमें बैठाकर उनकी अमरतापर मोहर लगा दी। जो गोलियाँ छूटीं वे गांधीजीके जीवनका अंत नहीं कर सकीं। उनका महान जीवन तो और भी ज्यादा लंबा हो गया है। मगर इन गोलियोंके छोड़नेवालेने अपने ही धर्मको मारा है और अपने ही व्यक्तियोंकी हानि की है। सुकरातको मारकर यूनानवालोंने जिस प्रकार अपनी ही हानि की, कृष्णको मारकर यादवोंने की, और ईसामसीहको मारकर यहूदियोंने की; आज इस भाईने गांधीजीको मारकर वैसी ही हानि हिंदू जनताकी और हिंदू-धर्मकी की है। यद्यपि वियोगके आँसू गिरे बिना रह नहीं सकते, तथापि बापूके लिए आँसू बहाने जैसी कोई बात नहीं है। सहानुभूतिके पात्र बापू या बापूके सगे संबंधी और भक्त नहीं, बल्कि पागल बने हुए संप्रदायवादी लोग हैं।

श्री श्रीकृष्णदास जाजू

[प्रसिद्ध गांधीवादी नेता]

बापूकी सीख कई प्रकारसे बतलायी जा सकती है। महत्त्व तो कृतिका है। घरमें, बाहर, समाजमें सर्वत्र व्यवहारको सत्यपर ही आधारित होना चाहिये। व्यक्तिगत जीवनका स्तम्भ सत्य हो और जहाँ-जहाँ दूसरोंसे कामहो वहाँ-वहाँ प्रेम हो।

आचार्य शंकर त्र्यंबक धर्माधिकारी

[प्रसिद्ध गांधीवादी नेता]

बापूजीकी अगर स्वाभाविक मृत्यु हुई होती तो शायद हमें सिर्फ शोक हुआ होता। लेकिन उनकी हत्या हुई है, इसलिए हमारे अंतःकरणमें लज्जा भी है, परिताप भी है और क्रोध भी है। हत्या करनेवालेको हम न हैवान, न शैतान, न दानव और न दुष्ट ही कह सकते हैं। अहिंसा-मूर्ति, स्नेह-प्रतिमा बापूकी हत्या करनेकी जिसकी इच्छा हुई और उनके सामने खड़े होनेपर उनके प्राण लेनेकी

जिसकी हिम्मत हुई उसके लिए हमारे पास कोई विशेषण नहीं है। मनुष्य कितना ऊँचा हो सकता है यदि हमारे लिए बापू इसका मानदण्ड है तो वह हत्यारा मनुष्यका निकृष्टतम रूप है।

परमात्माने गांधीको बनाया, मनुष्य कितना ऊँचा उठ सकता है यह बतलानेके लिए। बापू तो जाते रहे। हमें उनके शरीरसे अवश्य मोह था। हम चाहते थे कि वे रहते तो और अच्छा होता। भारतवर्षका बच्चा-बच्चा यह चाहता था कि जिस प्रकार आजकल रक्त-दान दिया जाता है उसी प्रकार यदि रक्त-दान दिया जा सकता तो भारतके सभी लोग अपनी सारी आयु उनके चरणोंमें समर्पित कर देते।

० ० ०

इस बातका अधिक मूल्य नहीं है कि गांधीजीका हत्यारा ब्राह्मण था। यदि उन्हें कोई हिंदू मारता तो किसी न किसी जातिका होता ही, परंतु साथ-साथ मुझे इस बातकी शर्म है कि वह एक ब्राह्मण था और बापूके प्राण लेकर उस ब्राह्मणने जो पाप किया है उसका प्रक्षालन यदि एक लाख ब्राह्मणोंका खून बहाकर भी होता तो इस नीच धर्माधिकारीका खून सबसे पहले बहाया जाय। उनकी समताका व्यक्ति आजसे पाँच हजार वर्ष पूर्व ही क्या आरंभसे अबतक भी नहीं हुआ। ईसा मसीहने केवल इतना ही सिखाया कि यदि कोई कष्ट दे तो उसे सह लो, प्रतिकार न करो; परंतु गांधीजीने कहा कि अन्यायका प्रतिकार तो करना ही चाहिये। हमारी शत्रुता अन्यायसे है। हम अन्याय दूर करना चाहते हैं, अन्यायीको मारना नहीं चाहते।

हिमालयको देखकर कालिदासने कहा था कि पृथ्वीकी नाप करनेके लिए ईश्वरने एक मानदण्ड तैयार किया है। आज जब हम गांधीजीकी मानवताकी महत्ता देखते हैं तब बरबस कहना पड़ता है कि ईश्वरने उनके रूपमें मानवता मापनेका एक मानदण्ड भेजा है। लोग गांधीजीको देवता और ईश्वर मानते हैं, परंतु मैं उन्हें साकार मानव ही मानता हूँ। अभीतक दुनियाँमें यदि मानव कोई हुआ है तो वह केवल बापू और बाकी सब उपमानव।

श्रीकृष्णके बाद प्रलय हुआ, परंतु गांधीजीकी महत्ताको हम तभी सिद्ध कर सकेंगे जब गांधीजीके बाद फैलनेवाली अराजकताको हम रोक सकें। इधर पंद्रह दिनोंसे लोगोंने हमें बहुत उपदेश दिये हैं कि मनुष्य यह पार्थिव शरीर छोड़-कर पूरे विश्वमें व्याप्त हो जाता है और इसके लिए शोक नहीं करना चाहिये। परंतु हमें तो उनके उस पार्थिव शरीरसे भी मोह हो गया था। हम उनको हँसते देखना चाहते थे, उनको वर्धाकी सड़कोंपर घूमते देखना चाहते थे और हमको तो उनकी वह अँगुली भी चाहिये जिसे बताकर वह हमें समझाते और सिखाते थे।

श्री संत तुकड़ोजी

[प्रसिद्ध संत और प्रवक्ता]

मृत्यु तो सबको ही आती है ; किंतु उस अवतारी पुरुषने दोनों पंथसे विजय प्राप्त की। एक तो वे अमर शहीदोंके मुकुटमणि बने और दूसरे महात्माओंके भूषण। उनके वचनोंको पूरा करना ही भारतका परम पुनीत कर्त्तव्य है।

श्रीमती राधादेवी गोयनका

[प्रसिद्ध कार्यकर्त्री]

बापूका भौतिक शरीर आज नहीं है, लेकिन उनकी वाणी, उनके विचार और उनके उपदेश आज भी हमारा पथ-प्रदर्शन कर रहे हैं। बापू अमर हैं। वह शरीर त्याग कर हमारे अणु-अणुमें समा गये हैं। जबतक संसार है तबतक बापू भी अमर हैं। उनका त्याग, उनकी सेवा और उनका प्रेम अमर रहेगा। बापूका जीवन तो बलिदानका जीवन था। सत्य और अहिंसा उनका अमर संदेश है।

उन्होंने अपने विरोधियोंकी भी भलाई की और पीड़ितोंको ऊपर उठाया। स्त्रियोंके लिए वे तो माता-पितासे भी बढ़कर थे। उन्होंने स्त्रियोंको त्याग और सेवाकी मूर्ति माना, उन्हें स्वाभिमान बताया, नेता बनाया और मरना सिखाया। बापूका बल पाकर हजारों स्त्रियाँ जेल गयीं। भारतकी स्त्रियाँ उनके उपकारोंके लिए सदैव उनका स्मरण करेंगी।

यदि बापूने जीवित रहकर देशको आजाद बनाया तो मरकर देशकी आजादीको स्थायी किया है। बापूके उद्देश्योंका प्रचार करनेमें बापू हमें बल दें ताकि हम बापूका राम-राज्य स्थापित करनेके यत्नमें सफल हो सकें।

श्री श्रीमन्नारायण अग्रवाल

[आचार्य : वाणिज्य महाविद्यालय, वर्धा]

राष्ट्रपिता गांधीजीकी हत्या करनेवाला देशमें फैले हुए सांप्रदायिक जहरीले वातावरणका प्रतीक था। जिन लोगोंने दुनियाँके इस युगके सबसे महान मानवका खून करनेमें साथ दिया उनको तो सरकार उचित दंड देगी ही, और उनका नाम सदियोंतक काले अक्षरोंमें लिखा रहेगा।

मुझे साफ नजर आता है कि गांधीजीने स्वयं अपना बलिदान करके कांग्रेसको जिंदा रखा है। अगर यह दिव्य बलिदान न होता तो शायद कांग्रेसका जिंदा रहना अत्यंत कठिन होता। मुझे इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि कांग्रेस अब एक बार फिर नये जीवनसे प्रेरित होगी। लेकिन अफसोस तो यह है कि इस क्रांतिके लिए महात्मा गांधी जैसे अवतारी पुरुषका बलिदान संसारको देखना पड़ा।

❀

श्री नारायण राव विठोबा पाटिल

[प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता]

इस घटनाका दुःख केवल देशका नहीं वरन् समस्त विश्वका है; क्योंकि महात्माजी भारतके ही नहीं अपितु समस्त संसारकी मानवताके उन्नायक थे। उनका स्थान मानवताके इतिहासमें बुद्ध और ईसासे भी उच्च है। रक्तहीन अहिंसक क्रांतिकी उनकी प्रणाली संसारको एक अद्भुत देन है। वह युद्ध-लोलुपोंके द्रोही तथा दीन, दरिद्र और दुःखियोंके सेवक थे। उनके निधनसे सबसे बड़ी क्षति पीड़ितों और शोषितोंकी हुई है। स्वराज्य मिल जानेपर आदर्श समाज-निर्माणके लिए बापूका रहना आवश्यक था। उनके उपदेशोंपर चलकर मानवताकी सेवा करना ही उनका सबसे अच्छा स्मारक होगा।

❀

श्री दौलत लक्ष्मण खडसे

[हरिजन नेता]

महात्माजीका प्रभाव भारतकी साधारण जनतासे लेकर धनिकोंतक समान रूपसे था। उनकी मृत्युसे आज सभी समान रूपसे दुःखी हैं। भारत ही नहीं, सारा संसार आज दुःखी है। उनके चले जानेसे हम हरिजनोंका तो सर्वस्व ही लुट गया। हमपर होनेवाले अत्याचारोंको दूर करनेके लिए वे स्वयं हरिजन बन गये थे। उन्होंने हमारे कल्याणके लिए आमरण अनशनतक ठान दिया था।

उनके बारेमें क्या कहें। वे हमारे पिता थे, रक्षक थे, उद्धारक थे। उन्होंने हमारे लिए जो कुछ किया वह अपूर्व था, अद्वितीय था। हम अपने उस परम हितचिंतककी स्मृतिमें सादर विनत होकर अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं।

श्री बी० जी० देशपांडे

[प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता]

महात्मा गांधीके इस असामयिक हत्याकांडसे समस्त भारतमें आतंक छा गया है। यह एक महान नीच कार्य है। गांधीजीने विगत ३० वर्षोंसे देशका आत्मिक, राजनीतिक एवं नैतिक नेतृत्व किया है। वह एक जन्मजात नेता थे। उनके राजनीतिक विरोधी भी उनकी महत्तामें विश्वास करते थे। वह अपने शत्रुके साथ भी मित्र जैसा व्यवहार करते थे।

❀

श्री अब्दुल रजाक खाँ

[प्रसिद्ध मुस्लिम नेता]

इस जमानेमें, मेरे विचारसे, महात्माजी ऐसा दूसरा आदमी पैदा नहीं हुआ, जिसकी मौतपर दुनियाँने इतना मातम मनाया हो, जिसकी अस्थियाँ दुनियाँके कोने-कोनेमें भेजी गयी हों। मैं जब देखता हूँ तो मुझे उनकी अनेक विशेषताओं-में एक बड़ी विशेषता यह दिखायी देती है कि इस युगमें दुनियाँके किसी भी देशमें ऐसा नेता नहीं पैदा हुआ जिसने इतनी सफलता पायी हो और जिसे अपने जीवनमें प्रत्येककी श्रद्धा मिली हो।

उनकी जिंदगी बारदोली-यात्रासे लेकर नोआखाली-यात्रातक सफलताकी जिंदगी रही है। यह देखनेकी बात है कि जिस कामको एक बड़ी सेना नहीं कर सकती थी, उसे उनकी एकाकी यात्राने कर दिखाया। हमें आज उनके संदेश-का; उनके शब्दोंका स्मरण करना चाहिये और उनके निर्दिष्ट पथपर चलना चाहिये। जिस हमदर्दीका नमूना उन्होंने पेश किया है, यदि हम उसे याद रखें तो मैं समझता हूँ कि हमारा देश स्वर्ग बन जायगा।

श्री सैयद अहमद

[प्रसिद्ध मुसलिम नेता]

बापू देशके अरमान और ईमान दोनों थे। इसीलिए उनके महाप्रयाण-पर वायुमंडल क्षोभसे भरा हुआ है। प्रकृतिके अणु-परमाणुमें संताप व्याप्त है। हमारे इतिहासका एक अध्याय समाप्त होता है। सन् १९१५ में जो स्वर्णिम युग

प्रारंभ हुआ था, ३० जनवरी १९४८ को हमारे दुर्भाग्यसे उसका अंत हो गया। हम सभी इस पापके भागी हैं। तीस वर्षोंतक बापू हमारे सामाजिक, आर्थिक और राष्ट्रीय पापोंसे हमें सावधान करते आये; पर हमने न माना और इसी-लिए आज राष्ट्रपरसे बापूकी छाया उठ गयी। कैसी कालिख लगी है यह हमारे मुँहपर। आइये, हम बापूके पद-चिन्होंका अनुगमन करनेका व्रत लें। इसी उपायसे यह कालिख धुलेगी और किसी दूसरे उपायसे नहीं।

❀

श्री जेम्स राबिनसन

[अध्यक्ष : यूरोपियन संघ, जबलपुर]

गांधीजी हमारे राष्ट्रके निर्माता थे। भारतके इतिहासमें यह महा-शोककी घटना है। हमारे प्रधान मंत्रीने कहा है कि प्रकाश चला गया और देश अंधकाराच्छन्न है। यह पूर्णतः सत्य है। यद्यपि हम लोगोंमेंसे बहुतोंने अपने नेताको नहीं देखा था, तथापि वह हमारे परिवारके ही हो गये थे, हमारे मित्र तथा भाई हो गये थे। भारत उनका था और वह भारतके थे। वह उसके स्वामी और सेवक थे। किसी भी प्रयत्नसे उनका जीवन पुनः वापस नहीं लाया जा सकता है। उनकी आत्मा हमें यह प्रेरणा देती रहेगी कि हम उनके आदर्शोंपर चलें और उनके सत्य तथा अहिंसाके पथपर अग्रसर हों।

आज तो आकाश काले बादलोंसे घिरा हुआ हुआ है। पर मैं उम्मीद नहीं छोड़ूंगा कि ये बादल तितर-बितर हो जायँगे और हमारे अभागे देशमें सांप्रदायिक ऐक्य जरूर पैदा होगा। यदि मुझसे कोई पूछे कि इसका सबूत दूँ, तो मेरा जवाब यह होगा कि मेरी आशाकी बुनियाद तो श्रद्धा है और श्रद्धाको सबूतकी कोई जरूरत नहीं।

—गांधीजी

बिहार

माननीय माधव श्रीहरि अणे

[गवर्नर : बिहार]

गांधीजीकी निर्मम हत्याका समाचार सुनकर स्तब्ध रह गया। उनका निधन समस्त संसारके लिए विपत्ति है। भारत तो आज पितृ-विहीन हो गया है। हमारी पथ-प्रदर्शक ज्योति बुझ गयी। हृदयकी वेदना व्यक्त करनेके लिए इस समय शब्द नहीं मिल रहे हैं। उन्होंने अपने जीवन-कालमें हमें जो शिक्षाएँ दी हैं, यदि हम उनपर चलें तो हमें सर्वाधिक सांत्वना मिल सकती है।

महात्मा गांधी संसारसे चले गये पर हमारे हृदयसे वे नहीं जा सकते। जिस महासंकटका सामना आज हमें करना पड़ा है उसमें हम केवल यही कर सकते हैं कि महात्माजीके उपदेशोंपर चलें। कितनी ही उत्तेजना क्यों न फैले, हमारा यही कर्त्तव्य है कि प्रेम, उदारता और सद्भावनाकी जो शिक्षा हमें गांधीजीने दी है, हम उसका पालन करनेमें प्रयत्नशील रहें। बिहारकी समस्त जनतासे हमारी प्रार्थना है कि इस विपत्ति-कालमें हम महात्माजीके उपदेशोंका अनुसरण करें।

❀

माननीय विन्ध्येश्वरी प्रसाद वर्मा

[अध्यक्ष : बिहार व्यवस्थापिका सभा]

महात्मा गांधी हमारे सेनापति थे और मैं उनकी सेनाका एक छोटा-सा सिपाही था। उनके आदेशपर चलना मैंने अपना धर्म बनाया था। सन् १९२० के कलकत्तेके कांग्रेस अधिवेशनमें महात्मा गांधीने अपने असहयोगका प्रस्ताव स्वीकृत कराया। मैंने इस प्रस्तावके पक्षमें अपना मत दिया और मुजफ्फरपुर लौटते ही वकालत छोड़ दी। कांग्रेस महात्मा गांधीके आदेशानुसार चलने लगी और हम लोग हर जगह घूम-घूमकर कांग्रेस और महात्मा गांधीका आदेश जनतातक पहुँचाने लगे। हम लोग सरकारकी आज्ञाके विरुद्ध, कानूनके विरुद्ध काम करके खुशीसे जेल जाते। कभी फतवा पढ़कर, कभी टैक्स बन्द कर देनेके

संबंधमें भाषण देकर, कभी नमक बनाकर, फिर महायुद्धमें भाग लेनेसे लोगोंको मनाकर तथा अंतमें "भारत छोड़ो"का नारा लगाकर हम लोग जेल गये और अनेक कष्ट सहे। महात्मा गांधीमें हम लोगोंका इतना विश्वास था कि उनके वचनको हम लोग सत्य मानते और उसे पूरा करनेके लिए सब तरहका कष्ट और दुःख झेलनेको तैयार रहते। उनके त्यागमय जीवन, सरल स्वभाव और दृढ़निश्चय-पर लोग मुग्ध हो जाते थे। मैंने सर्वप्रथम महात्मा गांधीको, जब वे बिहारमें पहले पहल आये थे, मुजफ्फरपुरमें देखा था। उस समय दो बार उनके दर्शन करनेका सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। एक बार प्रोफेसर कृपालानीजीके घरपर भूमिहार ब्राह्मण कॉलेजमें और दूसरी बार धर्मशालाकी सभामें। उन दिनों वह कच्छी मुरेठा और चपकन पहना करते थे। गो-रक्षाके संबंधमें उनका व्याख्यान धर्मशालामें हुआ था। उसमें उन्होंने बतलाया कि गो-रक्षा करना हिंदुओंका परम धर्म है, पर किसीको मारकर नहीं स्वयं मरकर। प्रोफेसर कृपालानीके घरपर एक छोटी-सी सभा हुई थी जिसमें चंपारनके निलहोंके अत्याचारकी सब बातें सुनकर अंतमें दृढ़ताके साथ उन्होंने यही कहा था—'यदि ये बातें सच हैं तो मैं इनका अंत करके ही छोड़ूँगा'। इसके बाद महात्मा गांधी चंपारन चले गये और जबतक वहाँका प्रश्न हल नहीं हुआ तबतक वहाँसे नहीं टले। चंपारनसे महात्मा गांधीका बड़ा स्नेह था और उसे वे अपना घर कहा करते थे। अपने जीवनमें जो कुछ वे कर सके वह उनके दृढ़ संकल्पका ही फल था। चंपारनके निलहोंके अत्याचार दूर करनेके पहले उन्होंने कहा था—'मैं अब चंपारन जाऊँगा, और मेरी पत्नी मृत्यु-शय्यापर भी पड़ी होगी तो मैं वहाँ जाना न छोड़ूँगा'।

हिन्दुस्तानियोंके जीवनपर उनका अद्भुत प्रभाव पड़ा। जैसे-जैसे उनकी तपस्या बढ़ती गयी, उनका यश भी फैलता गया और आज इस देशमें ही नहीं संसारके कोने-कोनेमें उनका नाम चिरस्मरणीय हो गया है। सत्य और अहिंसाके मार्गपर उनसे पहले भी लोग चले और बहुतोंने उपदेश भी दिया पर सत्य और अहिंसाके आधारपर देशकी आजादी लड़कर प्राप्त की जा सकती है, यह किसीने स्वप्नमें भी नहीं सोचा था। आध्यात्मिक जगतका यह एक नया आविष्कार ही है। साक्षात् मूर्तिमान स्थितप्रज्ञ होकर वह इस संसारमें आये थे। भगवान कृष्णने गीताका उपदेश दिया किंतु उस उपदेशका मर्म समझानेके लिए महात्मा गांधीका जन्म होना आवश्यक था। कर्म-योग क्या है, महात्माजीने अपने जीवन-कालमें बतलाया। कर्म द्वारा भगवानकी अहर्निश पूजा करना, अपनी सारी इंद्रियोंकी शक्ति लोक-सेवामें अर्पित कर देना, स्वयं कामना-रहित रहना, पर धैर्य और उत्साहसे काम करते जाना, इसीको तो सात्विक कर्ता भगवानने बतलाया है—

मुक्तसङ्गोऽनहंवादी धृत्युत्साहसमन्वितः।
सिद्ध्यसिद्ध्योर्निर्विकारः कर्ता सात्विक उच्यते॥

मुक्त कंठसे सबको स्वीकार करना पड़ेगा कि इस सात्विक कर्त्ताका उदाहरण महात्मा गांधीसे उत्तम मिलना कठिन है।

आज हमारे बीचसे एक सच्चा गीताका प्रेमी और महान वैष्णव-भक्त चला गया, जिसने भगवानकी भक्तिके प्रचारके लिए प्रातः और सायं प्रार्थनाकी प्रथा चलायी और सब धर्मोंकी समता सिखलायी।

❀

मानतीय श्रीकृष्ण सिंह

[प्रधान मन्त्री : बिहार]

पूज्य बापू संसारको छोड़कर चल वसे। प्रेम और अहिंसाके संदेशको लेकर जिस महापुरुषका जन्म संसारमें हुआ था उसकी मृत्यु इस प्रकार आजाद भारतवर्षमें एक भारतीयके द्वारा हो, यह मनुष्य मात्रको सोचकमें डालनेवाली बात हैं। आज संसार इस समाचारसे स्तब्ध है और हम भारतीय तो आतुर हो उठे हैं। वह तो हमारे हृदयका आराध्य देवता था और हमारे राष्ट्रीय जीवनका स्तंभ था। हमारे राष्ट्रीय जीवनमें जब कभी संकटका समय आता था और ऐसे अनेक समय आये तब हम उसकी ओर उम्मीद भरी आँखोंसे दौड़ते थे, और वह अपनी भुजाओंका सहारा देकर हमको उन संकटोंसे पार करता था। वह हमारे राष्ट्रका पिता था और इसीलिए वह हम सबका पूज्य और प्रिय बापू था।

कहा जाता है कि पुच्छल ताराकी भाँति महापुरुष सदियोंके बाद आता है और संसारको अपनी विभूतिसे चकित करके भूतमें विलीन हो जाता है। हमारा प्यारा बापू ऐसे महान पुरुषोंसे भी महान था। हिंसा और द्वेष (तसद्दुद और नफ़रत) से त्रस्त संसारके रंगमंचपर वह उतरा और सत्य तथा अहिंसाके अपने दिव्य संदेशसे मनुष्यमात्रको चकित कर चला गया। महापुरुषोंकी मृत्युका ढंग भी प्रायः अनोखा होता है और इसलिए जिस ढंगसे उसकी मृत्यु हुई वह भी उसकी महत्ताके अनुकूल ही थी। किंतु स्वभावतः आज उनकी मृत्युसे सारा देश दुःखित है। अब वह नही हैं, यह सोचकर मन अधीर हो उठता है। कल संध्यामें अपनी आँखों उनके पार्थिव शरीरको पवित्र यमुनाके किनारे चितापर जलते देखा। यह सोचकर कि अब उस तपस्वीके दर्शन नहीं होंगे और मुस्कुराहटभरे उसके आशीर्वचन सुननेका पुण्य अवसर प्राप्त नहीं होगा, हृदय विह्वल हो उठता है। यह हमारे लिए राष्ट्रीय विपत्तिका समय है। ऐसे समयमें हमें धैर्यपूर्वक सोचना है कि हम अपने पूज्य बापूकी ओर अपनी श्रद्धा और कृतज्ञता किस प्रकार प्रकट कर सकते हैं।

बापू हमारे नवीन स्वतंत्र राष्ट्रके जन्मदाता थे। प्रत्येक नवजात राष्ट्रको जन्म-कालके समय संकटका सामना करना पड़ता है। हमारा नवजात राष्ट्र इसी प्रकारके संकटसे होकर गुजर रहा है। यही समय था जब हमको उसकी सबसे ज्यादा जरूरत थी। वह तो चल बसा। लेकिन वह हमें ऐसा मार्ग बता गया है जिस मार्गपर चलकर ही हम इस संकटको सफलतापूर्वक पार कर सकते हैं। यह मानना होगा कि हमारे सांप्रदायिक झगड़ेमें भी हम इतने नीचे उतर गये हैं कि आज हमारी बबरताने सभ्य संसारको हैरान कर दिया है। हिंदुस्तानके करोड़ों नग्न और भूखे नर-नारियोंके हितके लिए यह आवश्यक है कि हम इस नवीन आजादीको सुरक्षित बनावें। यह तभी हो सकता है जब हम आपसके इस बर्बरतापूर्ण झगड़ेको बंद करें। बिहार प्रान्त बापूका प्रान्त है। इस पर उनका विशेष प्रेम था। इसी प्रेमके कारण बिहारके लोग बापूको 'गांधी बाबा' कहते हैं। मृत्युका दुःखद समाचार पाकर जितने बच्चे, जवान तथा बूढ़ोंकी आँखोंसे अश्रुधारा बहते देखा और जिस शोक भरे ढंगसे लोगोंके झुंडोंको रेडियोपर बापूके संबंधमें मूक होकर समाचारोंको सुनते देखा, उसीसे अंदाज किया जा सकता है कि बिहारके लोगोंके हृदयपर बापूका कितना अधिकार रहा है।

o o o

बापू मरकर भी अमर हैं। बापू सिर्फ नेता नहीं थे बल्कि नेताओंके भी नेता थे। उन्हें सिर्फ योद्धा भी नहीं कहा जा सकता। वे एक पैगम्बर और फकीर थे जो हिन्द और सारे संसारके भाग्य-लेखको साफ-साफ पढ़ सकते थे। सदियोंकी प्रगाढ़ निद्रामें सोये हुए हिन्दको महात्मा गांधीने ही जगाया और उसमें आजाद होने और जीनेका भाव भरा। २५ वर्षोंसे भारतीय राजनीतिके वे केन्द्र-विंदु थे और देशकी अगणित जनताकी आकांक्षाओंके प्रतीक बने हुए थे। ब्रिटिश साम्राज्यवाद उस समय काँप उठा था जब बापूने कानून-भंग कर चुनौती दी—"हाँ, मैंने तुम्हारा कानून तोड़ा है, तुम मुझे इसकी सजा दे सकते हो।"

o o o

आजाद भारतमें एक भारतीयके हाथोंसे राष्ट्रके महान पिताकी हत्या हो, यह सुनकर विश्व स्तम्भित रह गया है। समस्त भारतकी आँखोंसे अविरल अश्रुधारा बह रही है, और घर-घरसे प्रार्थनाकी पुकार उठकर उस महान दिवंगत आत्माकी शांतिके लिए स्वर्गको पहुँच रही है।

हम आज करुण विलाप करते हैं, क्योंकि हमने अपना पिता, तत्ववेत्ता, पथ-प्रदर्शक खो दिया। गुलामी अवस्थामें हमें निविड़ अंधकार और हतोत्साहने आच्छादित कर लिया था। बापू हमें वहाँसे निकालकर प्रकाशमें ले आये

विजयपर विजय प्राप्त कराते हुए उन्होंने हमें स्वाधीन बनाया। स्वातंत्र्य-संघर्ष कालमें हमे संकटोंसे गुजरना पड़ा तथा ऐसी समस्याओंका सामना करना पड़ा जिनसे हम किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो जाते थे। वह ऐसे तत्ववेत्ता तथा राजनीतिज्ञ थे, जिनमें मानव-स्वभाव और चेष्टाओंके समझनेकी पारदर्शी दृष्टि थी। ऐसे संकट कालमें राष्ट्रने सर्वदा उनकी ओर सहायता पानेकी दृष्टिसे देखा और उन्होंने सर्वदा सफलतापूर्वक हमारा बेड़ा पार लगाया।

दासतासे मुक्ति दिलाकर उन्होंने हमें स्वाधीनता दिलायी। नवजात स्वतंत्रताका प्रारम्भ प्रायः संकटोंसे भरा रहता है। हमारे भाग्यमें तो यह और भी बदा था। कलतक हमपर ऐसा शासन हावी था जो निरकुंश, एकतंत्रवादपर आधारित था। स्वभावतः इससे हममें वह गुण नहीं विकसित हो पाता था जिसकी भित्तिपर लोकतंत्रात्मक राज्यका निर्माण हो सके। हमें परंपरानुकूल फूटका अभिशाप मिला हुआ था। ये केन्द्रीभूत अभिशाप हममें अब भी घर किये बैठे हैं। हम अब भी उन भावनाओंके शिकार हैं जो फूट और भेदभावपर जोर देता है न कि एकता और समन्वयपर। हम चिरस्थायी और मजबूत सरकारका निर्माण कर सकते हैं। मनुष्य मनुष्यके संबंधमें ही किसी सरकारके निर्माणका बीज निहित रहता है और चिरस्थायी और ठोस सरकारके लिए आवश्यक है कि इस संबंधका उपयुक्त सुधार हो। सुधारकी बातमें मतभेदकी बात निहित है। जब मतभेदके लिए ही मतभेद जिद पकड़ लेता है तब सरकारका चलाना कठिन कार्य हो जाता है। वर्तमान युगके बहुदलीय समाजमें ऐसा असामान्य मतभेद सरकारका काय कठिन ही नहीं वरन असम्भव बना देता है। नवजात स्वतंत्रताके पुष्टीकरण तथा उत्तम एवं शक्तिशाली राज्यकी स्थापनाके लिए इस परंपरानुगत पृथकतावादी भावका उन्मूलन करना होगा तथा हमें अपनेमें समन्वयकी यथेष्ट भावना पैदा करनी होगी जिससे हम स्वार्थी तथा वर्गोंके भीषण संघर्षके विरुद्ध सर्वनिष्ठ भावनाकी विजय प्राप्त कर सकें।

हमने लोकतंत्रात्मक राज्यकी स्थापनाका निर्णय किया है और केवल लोकतंत्रवादका श्रीगणेश कर रहे हैं। शिक्षाक्रम द्वारा ही हम शांतिपूर्ण रहन-सहनकी कलाका ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं और इसके लिए कई पीढ़ियोंका अभ्यास करना पड़ता है। शिक्षा और अभ्यासके द्वारा हम अपनेमें एकताकी भावना पैदा कर सकते हैं जो नवजात स्वतंत्र-राज्यके लिए नितांत आवश्यक है। अकेले उस महान पथ-प्रदर्शकमें, जिनकी अपूरणीय क्षतिके लिए हम सभी शोकाकुल हैं। ये सब गुण विद्यमान थे। जो हमें ऐसी शिक्षा देकर उस कलाका अभ्यास करा सकता था, जो हमारा इस संकट कालमें बेड़ा पार करा देता, वह सच्चे अर्थमें लोकतंत्रवादी और महान राजनीतिज्ञ था। जैसे ही भारतीय राजनीतिक क्षेत्रमें उनका पदार्पण हुआ, उन्होंने स्पष्ट रूपसे दिव्य दृष्टि द्वारा देख लिया कि स्वतंत्रताके लिए जातियों और धर्मोंके इस देशमें हम लोगोंको मनुष्यों जैसा आचरण करना होगा और इस

राजनीतिज्ञकी अचूक अन्तर्दृष्टिने उन्हें छूआछूत एवं धार्मिक भेदभावके विरुद्ध जिहाद घोषित करनेके लिए प्रेरित किया। आनेवाली पीढ़ियाँ इसका निर्णय करेंगी कि किस प्रकार उन्होंने अबाध गतिसे २५ वर्षोंतक इस देशमें यह जिहाद चलाया और हममें समानताका भाव पैदा करनेके लिए कितनी बड़ी देन दीं और इस विशाल देशका स्वप्न पूरा कर दिया। तत्व-वेत्ताओंमें वह "युग पुरुष" थे व जर्मन दार्शनिकोंकी दृष्टिमें यह "दिव्यकार मानव" थे। इनके उच्च चरित्रके संक्रमणने हमें सोतेसे जगाकर क्रियाशील किया, छुआछूत तथा सम्प्रदायवादका भारतपर जो प्राचीन कालसे कालिमा पुती हुई थी उसे साफ करनेमें हमें बहुत दूर तक सफल बनाया तथा ऐसे भविष्यकी ओर गतिमान किया जो ऐसी कालिमासे पाक व साफ है। भारतको इस घड़ीमें उनकी अतीव आवश्यकता थी। लेकिन वह प्रकाश, जिसने ऐसे भूतकालसे हमें ऐसे भविष्यकी ओर छलांग मारकर आनेमें समर्थ किया, प्रोत्साहन दिया, एक हत्यारेके क्रूर हाथ द्वारा बुझा दिया गया।

ऐसे महामानवके निर्वाणके कारण ही यह विशाल देश दुःखके समुद्रमें डूब गया है। लेकिन सिर्फ हम ही उनके निधनसे नहीं दुखी हैं बल्कि समूचा संसार ही विलाप कर रहा है। उन्होंने हमें स्वतंत्रताका मंत्र दिया और साथ ही संसारको देनेके लिए संदेश भी दिया है। वह भारतीय राष्ट्रके राष्ट्रपिता ही नहीं थे वरन समूचे मानव-समाजके गुरु थे। संसारकी वर्तमान सभ्यता संकटावस्थामें आ पहुँची है। आशंका है कि हम आजतक शिखरकी नोकपर तो खड़े हैं और ऐसी शक्तियाँ कार्य कर रही हैं जो हमें पुनः सिद्धांतके युगमें ढकेल सकती हैं। हम जानते हैं कि इस बार बर्बर आक्रमणकारी कहीं बाहरके नहीं हैं, वे बर्बर जीव मनुष्योंके हृदयमें छुपे हुए हैं। ऐसे संसारको उन्होंने प्रेम व अहिंसाका संदेश दिया है। वह क्रांतिकारी थे और इन सिद्धांतोंके अनुसार उन्होंने संसारके विचारों व सस्थाओंमें परिवर्तन करनेके लिए आहुति दी है, जिससे विचारोंका बना हुआ मानवसमाज पुनः बर्बरताके गड्ढेमें गिरनेसे बच सके। मानव मर्यादा-पर आधारित नयी सभ्यता व नयी संस्कृति ऐसे संसारको देनेके लिए आपका पदार्पण हुआ था। पर हम उस महान देनको नहीं संभाल सके। इस अवस्थामें ऐसे मसीहाके निधनपर समूचे संसारका विलाप करना स्वभाविक ही है।

❀

मानननीय अनुग्रह नरायण सिंह

[अर्थ मंत्री : बिहार]

गला भर आता है यह कहते कि साबरमतीका वह तपस्वी आज हमारे बीच नहीं है। बापूने स्वतंत्रता दिलायी, पर उसका जो रूप उनके मस्तिष्कमें था उसे देखनेके लिए वे संसारमें नहीं रहे। बापूका अवशिष्ट कार्य अब हम अनुयायियोंके कंधेपर आ पड़ा है।

माननीय जगलाल चौधरी

[स्वास्थ्य मन्त्री : बिहार]

विश्वविभूति बापू उठ गये, पर उनके आदर्श, आलोक और आचरणकी आभा अमर है। उनकी अमर वाणी अब भी हवामें गूँजती रहेगी। आज विश्व उनकी सेवा-सरिताके कल-कल निनादसे गुंजायमान है। स्नेह-दीपशिखा अन्तर्हित हो गयी अवश्य, किंतु विश्व उस पावन प्रकाशपुञ्जमें सदा अपना पथ खोज सकेगा; उनकी अमर वाणीमें मूक मानवकी मुखरित भावनाको सुन उससे प्रेरणा ले सकेगा।

बापू निर्बलके बल, दलितोंके जीवन, शोषितोंके प्राण थे और पतितोंके सहारा थे। उनका सारा भौतिक जीवन इनकी ही सेवामें बीता। देश, काल और परिस्थितिके अनुकूल उन सेवाओंके साकार रूप बनते गये, किंतु सबोंकी आत्मा थी पतितोत्थानकी भावना, उनके हेतु प्रयास। चूंकि सम्पूर्ण मानव जीवनको उत्कृष्ट बनानेवाले बापूका मुख्य कर्मक्षेत्र भारतवर्ष रहा, उनकी सेवा-वृत्तियोंके साकार रूपपर भारतीय परिस्थिति और वातावरणकी छाप भी अमिट है। किंतु यदि कोई अंतर्मुख होकर इन साकार रूपोंको देखे, उनकी आत्मा सेवा, देश, काल और परिस्थितिके बंधनोंसे मुक्त।

वे मानवके सत्य, शिव और सुंदर भावनाके अक्षय कोषके अचल, अडिग और अमर प्रहरी थे। वे इस भावनाके रक्षक ही नहीं पोषक भी थे। वे अपने उत्कृष्ट आचरण द्वारा इन आदर्शोंको रक्षा ही नहीं करते थे, उन्हें जन-जनके हृदयमें सिंचकर उनका पोषण भी करते थे।

हाय! टूट गयी वह वीणा जिसमें झंकृत होते रहते थे पीड़ितोंके प्राण, दलितोंके आशा-स्रोत, शोषितोंके मूल उल्लास, प्रसरित हो रहा था जिससे सदा शांत गीत, साम्य भाव इस भयंकर विप्लवके बीच भी।

आज मानवता ही निपूती हो गयी। भारतका सौभाग्य-सिंदूर लुट गया। रो मानवते, बहा दे अपने नयन-नीरसे घृणाको, ईर्ष्याको, द्वेषको, मन की मलिनताको, मानवकी पशुताको आज भी सजा दो साकार शांत दूतकी समाधिपर अपने प्रेम-कण, जला दो स्नेह-दीप, आशीष मिलेगा तुम्हें। समाधि बोलेगी—'मानवता अमर हो'।

❀

माननीय कृष्णवल्लभ सहाय

[माल मंत्री : बिहार]

बापूकी हत्याकी नैतिक जिम्मेदारीसे हम अपनेको मुक्त नहीं मान सकते हैं। वह केवल चर्म-अस्थिके मनुष्य नहीं थे, वह संस्था थे, सिद्धांत थे। वह चाहते थे कि इस स्वतंत्र देशमें मुसलमान भी स्वच्छंद नागरिक बनकर रहें, घूमें-फिरें। उनके सिद्धान्तको यदि हममेंसे प्रत्येक आदमी आगे बढ़ता तो हत्यारेको भी बापूपर गोली चलानेकी हिम्मत नहीं होती।

बापू चले गये, हमें स्वराज्य दिलाकर। अब हमें सोचना है कि इस स्वराज्यको हम आप कैसे स्थिर रख सकते हैं। इसे स्थिर रखनेकी पहली शर्त है सांप्रदायिक शांति बनाये रखना। बिहार प्रांतका उदाहरण लें। यहाँ लगभग ४५ लाख मुसलमान बसे हैं। उन्हें हम नहीं छोड़ सकते। जो संसार आपको आपकी नैतिक ताकतके कारण स्वराज्य देनेपर मजबूर हुआ है वह आपको ऐसा करने नहीं देगा। आप उन्हें कैदमें नहीं रख सकते हैं। अंग्रेज एक लाख कांग्रेस-जनोंको बहुत दिनोंतक कैदमें नहीं रख सके। आपको मुसलमानोंको साधारण नागरिककी भाँति रहने देना ही होगा। स्वराज्य और सांप्रदायिक शांतिका आज एक अर्थ हो गया है। अगर सांप्रदायिक शांति भंग हुई तो हम स्वराज्यको बहुत दिनोंतक कायम नहीं रख सकेंगे। स्वराज्य चलानेकी दूसरी शर्त है गांधीजीके सिद्धांतोंके अनुसार अपनेमें संयम पैदा करना, हिंसात्मक प्रवृत्तियोंको दबाये रखना। दूसरे देशोंका इतिहास हमें बतलाता है कि जहाँ लोगोंने संयमका पालन नहीं किया या हिंसाको अपनाया वहाँ या तो नादिरशाही स्थापित हो गयी या अराजकता। बापू हमारे बीच नहीं रहे, पर उनके सिद्धांत अमर हों, इसीमें हमारा कल्याण है।

❀

माननीय अब्दुल कयूम अनसारी

[निर्माण मन्त्री : बिहार]

हम इस संसारमें केवल एक ही सूर्यसे विज्ञ हैं जो प्रातःकाल उदित और सायंकाल अस्त होता है पर गत शुक्रवारकी शामको हम लोगोंने एक साथ ही दो सूर्योंका अस्त होना देखा।

महात्मा गांधी त्याग और विरागकी मूर्ति थे। अपने तपोबलसे उन्होंने वह प्रकाश फैलाया जिसकी आभासे केवल भारत ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व जगमगा उठा। यह सत्य है कि वह सत्य, अहिंसा और प्रेमका पैगम्बर हमारे बीच न

रहा, पर वह मार्ग जिसका अवलम्बन उन्होंने किया, हमेशा उनके पद-चिन्होंको स्पष्टतः अंकित करता रहेगा। गांधीजीने भारतकी स्वतन्त्रता रक्तपातसे नहीं, बल्कि सत्य और अहिंसाके द्वारा अर्जित की, जिसका उन्होंने स्वयं अनुसरण किया और दूसरोंको भी उसके अनुसरणका निर्देश किया।

आज हमें उनके पद-चिन्होंके अनुसरणका दृढ़ संकल्प करना है; आजसे हम हिंदू, मुसलमान, सिख, ईसाई और पारसीके रूपमें सोचना त्याग दें। हम अपनेको प्रथमतः और अंततः भारतीय समझें और ऐसे विश्वका निर्माण करें जिसे बापूने हमारे लिए निर्मित करनेका प्रयत्न किया।

o o o

गांधीजीका महाप्रयाण केवल भारतकी ही हानि नहीं है। उनका निधन समस्त मानवकी महती हानि है। उनका निधन समस्त विश्वकी एक बड़ी भारी विपत्ति है। उस महामानवके हृदयसे जो परिपूत और निष्कल्मष शोणित प्रवाहित हुआ, वह भारतके अभागोंके हृदयकी भिन्नताओंको दूर करे, यही हमारी लालसा है। वे आधुनिक विश्वके सर्वश्रेष्ठ महापुरुष थे। उनका अंत भी शहीदों और धर्म-गुरुओं जैसा ही हुआ।

o o o

महात्माजीका निधन हो गया पर वे अपनोंके ही नहीं वरन् समस्त विश्वके सब लोगोंके हृदयमें सदा अमर रहेंगे। उनकी मृत्युसे हमारे देशका मस्तक सदा लज्जावनत रहेगा। आज एक महाविभीषिकासे हम आक्रांत हैं, यदि आज फैले हुए विषको हम पूर्णतः नष्ट नहीं कर देते तो हम सब स्वयं नष्ट हो जायँगे। इस विषका प्रवाह अब भी जारी है। भारतने अपनी ही आत्माका हनन किया। हमारे पास शब्द ही नहीं हैं कि हम अधिक कुछ कह सकें।

❋

माननीय रामचरित्र सिंह

[नहर तथा विद्युत-मंत्री : बिहार]

हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी आज हमारी आँखोंसे सर्वदाके लिए ओझल हो गये। पर वे हमारे हृदयसे दूर नहीं हो सकते। उनकी ज्योति हमको आगे बढ़नेमें सदा सहायक होगी। वीर रोग-शय्यापर नहीं मरते, वे तो अमर होते हैं, ऐसा ही घटनाओंके फल-स्वरूप। हमारे देशके प्राण बापूने हमको सत्य और अहिंसाका पाठ सिखलाया और इसी मूलमंत्रका प्रयोग करके भारतवर्ष स्वतंत्र

हो गया। देशको अभी कुछ दिनोंके लिए उनकी आवश्यकता थी परंतु एक हत्यारेने उनको इसलिए मार डाला कि वह देशमें राष्ट्र भावका प्रचार करते थे तथा भारतवर्ष अथवा सारी दुनियाँमें सत्य और अहिंसाके मूल-मन्त्रका प्रचार कर रहे थे।

गोली मारते समय उस हत्यारेने यह नहीं समझा कि यह गोली एक शरीरपर, गांधीजीके शरीरपर नहीं मार रहा है बल्कि यह गोली हिंदुस्तानके मर्मस्थलपर मार रहा है और वस्तुतः ही उसने उस गोलीसे देशके लिए इतना बड़ा घातक काम किया जिसका अनुमान हम नहीं लगा सकते। उसने देशको बहुत बड़ा नुकसान पहुँचाया है और उस नुकसानकी पूर्ति करनेके लिए केवल एक ही रास्ता है कि हम महात्मा गांधीके बताये हुए रास्तेपर चलें। इस दुर्घटनासे देशमें एक भयंकर स्थिति पैदा हो गयी है। लोग क्रोधमें बदला लेना चाहते हैं पर हमारे लिए यह मुनासिब नहीं है। हमें तो जरूरत है उनके बताये हुए मार्गपर चलनेकी। सत्य और अहिंसाकी बातें बहुत होती हैं परंतु हम लोग अपने जीवनमे इसका व्यावहारिक प्रयोग बहुत कम करते हैं। गांधीजीके लिए यदि हमारे मनमें प्रेम है और यदि हम सचमुच चाहते हैं कि उनकी आत्माको शांति मिले तो ऐसी दशामें हम लोगोंका परम कर्त्तव्य हो जाता है कि उनके मूल-मंत्र अर्थात् सत्य और अहिंसाका मनन करें, समझें और अपने जीवनको इसी मूल-मंत्रके साँचेमें ढालें।

गांधीजीके निधनसे अभी हमारा दिल दर्दसे भरा है; फिर भी हमें यह नहीं भूलना है कि उन्होंने हिंदू-मुस्लिम एकताके लिए ही अपनी जान गँवायी। एक दिन आयेगा जब सुबुद्धि हमें प्राप्त होगी और हम एकताके इस सिद्धांतको ठीकसे समझेंगे। हमें अभी एकताका भाव फैलानेकी कोशिश करनी चाहिये और ऐसे रास्तेसे चलना चाहिये कि जिसमें देशमें अमन और चैन कायम रहे। गांधीजीने जब जिस चीजको सत्य समझा, देशके सामने रखनेमें उन्हें जरा भी नहीं सोचना पड़ा। उस मार्गपर चलनेके लिए उन्हें एक क्षण भी नहीं ठहरना पड़ा और उसी सत्य और अहिंसाका प्रयोग कर उन्होंने दुनियाँको दिखा दिया कि यह कितनी बड़ी चीज है। और आज हमारा क्या, प्रत्येक भारतवासीका यही कर्त्तव्य है कि उनके बताये हुए मार्गपर चलनेकी प्रतिज्ञा करें। इसीमें देश और मानव समाजका कल्याण है।

❀

माननीय मनोहर लाल

[प्रधान न्यायाधीश : उच्च न्यायालय, पटना]

आज प्रातःकाल हम एक बहुत ही संकटपूर्ण घड़ीमें मिल रहे हैं जब कि हमारे राष्ट्रमें अनेक युगोंके पश्चात् इतनी बड़ी दुःखद घटना घटी है।

नियमानुसार तो हम लोग केवल इस न्यायालयके न्यायाधीश या एडवोकेटकी मृत्युपर ही अपने साथीके प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने एकत्र होते हैं पर आज एक ऐसे अवसरपर मिल रहे हैं जो भिन्न अभिप्रायका मालूम होता है। हमारे राष्ट्रका श्रद्धेय नेता अब नहीं रहा।

मैंने आज आप लोगोंको एक बुद्धिमान राजनीतिज्ञ और साहसी नेताके मृत्यु-शोकके लिए ही नहीं बुलाया है। महात्मा गांधीकी जितनी बड़ी देन एक प्रतिभाशाली नेता और राजनीतिज्ञके रूपमें है उतनी ही बड़ी देन एक अनुपम न्यायाधीशके रूपमें भी है और हम इसी हेतु उनकी स्मृतिमें श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं। इसी हैसियतसे, मैं यह सोचनेकी धृष्टता करता हूँ कि वे सदैव प्रिय बंधुकी भाँति याद किये जायेंगे और पूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे।

उनका कार्य व्यक्तियोंके मामूली झगड़ोंका निपटारा करना नहीं था और न एक न्यायाधीशकी तरह चतुर और निरपेक्ष एडवोकेटों द्वारा उनके सम्मुख मामले ही रखे जाते थे। उनका संबंध तो उन महान और गम्भीर समस्याओंसे था जिनपर सम्पूर्ण राष्ट्रकी सम्पन्नता और खुशी निर्भर करती थी।

जिन परिस्थितियोंमें उन्हें रहना पड़ता था उसमें यह सम्भव नहीं था कि किसी भी प्रश्नके सभी पक्षों तथा अंगोंको उनके सामने रखा जाय फिर भी उनके निर्णयोंके न्यायसंगत होनेमें लेशमात्र भी अंतर न पड़ा क्योंकि उनमें न्यायकी यह मूल प्रवृत्ति और चाह भरी हुई थी कि वह किसी भी एकपक्षीय सलाह द्वारा अपने उचित मार्गसे च्युत नहीं किये जा सकते थे।

उनकी निःस्वार्थ भावना, व्यक्तिगत आकांक्षाका अभाव और जीवनकी नितांत सादगीने उन्हें उन विचारोंसे पूर्णतः पृथक् रखा जो सांसारिक मनुष्योंको पतनकी ओर घसीट ले जाता है।

वह बहुमूल्य जीवनकी चिंता कितनी कम करते थे इसका उदाहरण अनेक बार प्रस्तुत कर चुके हैं। इसी माहमें उन्होंने एक बार फिर खुशीसे दिल्ली तथा उसके आसपासमें सांप्रदायिकता दूर करने तथा एकता स्थापित करनेके लिए अपने प्राणोंकी बाजी लगा दी थी। इन उद्देश्योंको प्राप्त करनेमें ही दुर्भाग्यवश मनुष्यके वेशमें किसी ऐसे पिशाचकी पापमयी घृणित भावना जाग उठी जिसने अपनेको एक ऐसे महान व्यक्तिके कार्योंका निर्णायक बन जानेका दुस्साहस किया जिसकी मानसिक विचार-धाराओं और सज्जनताको समझ सकनेमें वह बिल्कुल असमर्थ था।

इस प्रकार हमारे बीचसे वह महान व्यक्ति चल बसा जिसके हाथ सदा न्याय द्वारा ही संचालित होते थे और जिसका हृदय सम्पूर्ण मानव-जातिके प्रति उदार और कल्याणकारी भावनाओंसे विशाल बना रहता था।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि हत्यारेके इस मर्मघाती प्रहारसे हमारी जन-आत्मा इतनी जाग उठेगी कि हम सदाके लिए उन निर्दय कृत्योंका अंत कर देंगे जिन्होंने हमारे राष्ट्रका नाम कलंकित कर दिया है। यदि ऐसा प्रभाव पड़ा तो निस्संदेह ही महात्मा गांधी इस बातका विचार नहीं करेंगे कि उन्हें इतना ऊँचा मूल्य चुकाना पड़ा। अतः हम उन्हें इस सान्त्वनाका विश्वास दिला दें कि उनकी मृत्युके मार्गसे ही हम उस शांतिको अवश्य उपलब्ध करेंगे जिसके लिए उन्होंने इतनी वीरतासे अपना जीवन उत्सर्ग कर दिया।

❀

श्री चन्द्रेश्वरप्रसाद नारायण सिंह

[कुलपति : पटना विश्वविद्यालय]

विश्वकी यह सबसे भारी क्षति है। मुझे विश्वास है कि गांधीजीकी हत्याका पाप यह देश कभी भी धोनेमें समर्थ न हो सकेगा।

❀

श्री महामाया प्रसाद सिंह

[अध्यक्ष : बिहार प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी]

आज जब सारे विश्वके, सारे देशके और सारी दुनियाँके दिलसे खूनकी धारा बह रही है, जब हर एक देशवासी दर्द और गमसे, शोक और पीड़ासे कराह रहा है, तब क्या कहा जाय और कैसे कहा जाय। बापूका निधन हमारे महान देशके विशाल इतिहासमें, नहीं-नहीं, सारे विश्वके इतिहासमें सबसे बड़ा और सबसे घातक निधन है। बापूकी हत्या सबसे निर्दय और कायरतापूर्ण हत्या है। राष्ट्र-पितापर किया गया यह आक्रमण संसारका सबसे बड़ा देश-द्रोह है। इसलिए हमारा हिंदुस्तान संसारके सामने उतना शर्मिंदा है जितना कभी भी कोई देश या राष्ट्र न हुआ। सदियोंकी गुलामीके बाद, स्वतंत्र होनेके बाद प्रारंभमें ही स्वतंत्र भारतके सिरपर यह कलंकका काला टीका लगा है! यह कैसा दुर्भाग्य है, कैसा अभिशाप है।

अपने जन्मदाता, भाग्य-विधाता और निर्माताका खून करके स्वतंत्र भारत आज संसारके सामने कलंकित है, अभिशप्त है, अनाथ है और असहाय है। मेरे जीवनकी तो यह सबसे दुःखद घटना है। अगर ये गोलियाँ मेरे सीनेमें लगी होतीं तो इतना दुःख न होता। लेकिन आज व्यक्तिगत रोना रोकर देशमें आँसुओंको और बढ़ाना ठीक नहीं है। आँसू और शोक बापूका संदेश नहीं। उनका संदेश है हर्ष और उत्साह, हिम्मत और जवाँमर्दी, जिम्मेदारी और मुस्तैदी।

आज हम तैंतीस करोड़ देशवासियोंपर सबसे बड़ी जिम्मेदारी आ पड़ी है और दुर्भाग्य यह है कि बापूकी सहायता और पथ-प्रदर्शनके बिना ही हमें उसे पूर्ण करना है। अपने विशाल देशके कण-कणकी रक्षा, जर्रे-जर्रेकी हिफाजत, सुख-शांति और तरक्कीकी हजारों जिम्मेदारियाँ हमारे कमजोर कंधोंपर आ गयी हैं। हमें हर समय और हर क्षण उनकी भाँति यह ख्याल रखना है कि जाति-पाँति मजहब या संप्रदायकी जिम्मेदारियोंको पूरा करनेमें किसी प्रकारकी रुकावट न हो।

अगर हममें सचाई और वफादारी है, अगर हममें प्रेम और लगन है, अगर हममें चरित्र और नैतिक बल है, तो बापूका आशीर्वाद और यह प्रकाश सदा सर्वदा हमारे साथ है, और रहेगा। बापूने बंधनोंसे जकड़े हुए हमारे हाथोंको खोलकर उनके तोप और ऐटम बमसे भी बड़ी ताकत भर डाली है। वह ताकत है हिम्मत और निर्भयता। वह ताकत है प्रेम और एकता। वह ताकत है सत्य और अहिंसा।

बापूने ज्ञान और जागरणके लाखों-करोड़ों दीपक हिमालयकी घाटियों-पर जगमगा दिये हैं। हमारे बलिदान, स्वाभिमान और महान संकल्पके झंडेको नगराजके सर्वोच्च शिखरपर ऊँचा उठाकर हमेशाके लिए लहरा दिया है। अपने विराट् प्रकाशकी जगमगाती लपटोंसे उन्होंने हमारे देशके कण-कणपर छाये हुए अंधकारको हमेशाके लिए मिटा दिया है। सदियोंके मुर्दा-दिलोंमें जोशकी लहरें उठाकर उन्होंने नयी जिंदगीकी बेमिसाल क्रांति पैदा की है। सदियोंका इतिहास उनके अमर प्रकाशसे जगमगाता रहेगा और आसमान उनके बेहद अहसानसे, असीम अनुग्रहसे झुका रहेगा।

बापूकी वह मधुर और निश्छल मुस्कान सदियोंतक हमारे आँसुओंको पोंछती रहेगी। उनके जलाये हुए चिराग सदियोंतक जमानेको रोशन करेंगे। उनकी महान आत्माके उत्तराधिकारी हम भारतवासी इतिहासके अंतिम क्षणतक धरती और आसमानमें सत्य और न्यायका झंडा ऊँचा रखेंगे, दुनियाँ भरमें आजादी और बराबरीको कायम करनेके लिए जद्दो-जहद करते रहेंगे।

बापूका कण-कणमें बिखरा हुआ प्रकाश हमें आज जगा रहा है। उनका अधूरा पड़ा हुआ काम हमें पुकार रहा है। हिमालयके शिखरपर खड़ा होकर साहस हमारा स्वागत कर रहा है। हिंद महासागरकी लहरें हमारी जवानीको अंगड़ाइयों-को निमंत्रण दे रही हैं। विराट एशिया महादेश हमसे नेतृत्वकी याचना कर रहा है। विश्व हमसे सच्ची शांतिकी, अमर शांतिकी भीख माँग रहा है। संसारकी समस्त पद-दलित जातियाँ हमसे सफल पथ-प्रदर्शन और प्रोत्साहन पानेकी आशासे सजग हो रही हैं।

एक ओर यह महान दृश्य है, और दूसरी ओर चोमुखी चुनौतियाँ हैं। हमारी नयी आजादीको हड़पनेके लिए दिशाएँ अपने काले और लम्बे हाथ बढ़ा रही हैं। जंगका तूफान हमारी सरहदोंपर गरज रहा है। हमारी सुकुमार स्वतन्त्रताको भूखी दानवी शक्तियाँ ललचायी आँखोंसे देख रही हैं। हमारी भीतरी अशांति हमारा भेद-भाव, वर्ग-भेद और हिंदू-मुसलिम फिर्कापरस्ती हमेशा खतरेकी घंटी बजा रही हैं। हमारे लुटे हुए देशकी सारी मजबूरियाँ हमें चुनौती दे रही हैं।

निमंत्रण और चुनौतीकी घाटीमें हम खड़े हैं। और जमानेका तकाज़ा है कि हम इन दोनोंको मंजूर करें। बापूके दिये हुये शांति और एकताके अमोघ अस्त्रसे हम दोनोंका मुकाबला करें। प्रेम और समताके द्वारा हम अपने देशकी अजेय आंतरिक शक्तिका विराट संगठन करें। शोषण और उत्पीड़नका अंत करनेके लिए हम अपने विशाल जन-समूहमें साहस और संकल्पकी सृष्टि करें। दलितोंको अभिमान और बेजुबानोंको जुबान देकर अन्याय और अत्याचारको हमेशाके लिए मिटाकर चरित्रबल पैदा करके हम राम-राज्यका अधूरा सपना पूरा कर दिखावें। तभी हम दुनियाँकी रहनुमाईका निमंत्रण स्वीकार कर सकेंगे। तभी हम भारतकी शांतिका संदेश अतलांटिक और आर्कटिक महासागरतक दक्षिणी और उत्तरी ध्रुवोंके आखिरी छोरोंतक पहुँचा सकेंगे। तभी हम मानवताको पशुता और दानवताकी खूनी ललकारोंसे निर्भय कर सकेंगे। तभी हम बापूको अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करनेके योग्य हो सकेंगे। तभी हम बापूका सच्चा स्मारक बना सकेंगे।

इसलिए हमें यह व्रत लेना होगा, अहद करना होगा......'करेंगे या मरेंगे'। बिहारकी ४ करोड़ जनता बापूके पावन और पवित्र चरणोंमें बैठकर यह व्रत ले चुकी है, अहद कर चुकी है। हिंदू, मुसलमान, आदिवासी, ईसाई सबने यह व्रत लिया है। आज फिर बिहार इस व्रतको दुहराता है और उसे दुगुनी ताकत देता है। मैं बिहारकी ओरसे, नौजवानोंकी ओरसे देशको यह प्रतिज्ञा दिलाता हूँ कि बिहार अपनी इस प्रतिज्ञाको पूरा करनेके लिए पूर्ण प्रस्तुत है, तत्पर है, कटिबद्ध है, दृढ़ संकल्प है, कृतनिश्चय है। इस प्रतिज्ञाको पूरा करनेके लिए हम अपने कोटि-कोटि प्राणोंकी बाजी लगा देंगे। बुद्ध और बापूका बिहार अपने कर्त्तव्यको हर तरह पूरा करेगा। जातीयता, प्रान्तीयता और साम्प्रदायिकताको वह हमेशाके लिए दफना देगा। उठो, जागो, बापू पुकार रहा है। बापूकी जय!

❁

"आत्मानुभूति, आत्म-निरीक्षण और आत्मशुद्धिसे हमें प्रतिभा मिलेगी, प्रेरणा मिलेगी; हमारी प्रतिष्ठा भी उसीसे बढ़ेगी और हम प्रगति कर सकेंगे।"

—गांधीजी

❁

सर सुलतान अहमद

[भूतपूर्व सदस्य : वायसराय कार्यकारिणी कौंसिल]

२८ जनवरीको मुझसे बातचीत करते हुए महात्मा गांधीने बिहारकी जनताके लिए अंतिम संदेश देते हुए कहा था—"बिहार मेरा प्रान्त है, उसकी देख-भाल करते रहियेगा।" स्मिति-स्पन्दित अधरोंसे उन्होंने कहा था—"तुम मेरे प्रान्त जा रहे हो, अतः कष्ट करके मेरा संदेश मेरे बंधुओंसे कह देना। उनसे कहना कि मैं उन्हें भूला नहीं हूँ। वे भी मुझे न भूलें। वे भूल न जायँ कि अपने यहाँ अल्पसंख्यकोंके रक्षणका उन्होंने मुझे वचन दिया है। मैं पुनः आऊँगा, पर कब, मैं नहीं जानता।"

कदाचित् उस समय महात्माजीने यह सोचा भी न रहा हो कि यही उनके प्रिय बिहार प्रान्तके लिए अंतिम संदेश होगा। सांप्रदायिक सद्भावनाका जो उज्ज्वल दीप उन्होंने जलाया था, वह अब हमारे हाथोंमें आ पड़ा है। उनकी आत्मा तभी विश्रांति लाभ कर सकेगी जब हम हार्दिक सत्यता और दृढ़ विश्वासके साथ उनके संदेश-दीपकी ज्योति नगर-नगर, गाँव-गाँव और घर-घर फैला दें तथा भ्रष्ट भूमिसे गौरव पुनः प्रतिष्ठित कर दें।

पंडित नेहरू, राजेन्द्र बाबू, सरदार पटेल और मौलाना आजाद आदि जो लोग आजीवन महात्माजीकी छत्रछायामें कार्य करते रहे, उन्हें हमें अपना पूरा सहयोग और पूर्ण सहायता देनी चाहिये, जिससे वे महात्माजीके उदात्त लक्ष्यों-को सफलतापूर्वक सम्पन्न कर सकनेमें समर्थ हों। बिहारको विशेष रूपसे महात्माजीका कृतज्ञ होना चाहिये, क्योंकि इसी प्रांतमें उन्होंने अपना वीरता-पूर्ण आंदोलन पहले-पहल भारतमें प्रारम्भ किया था, जो धीरे-धीरे आगे बढ़ता गया और निर्दलित भारतको उठाकर एक स्वतंत्र राष्ट्रके संमाननीय धरातल-पर प्रतिष्ठित किया। इस बीच अपनी उचित प्रतिष्ठा प्राप्त करनेमें भारतकी सहायता सदैव करते रहे। जब आजसे अठारह मास पूर्व बिहारकी जनताका एक भाग उन्मादके वशीभूत हो गया था, यहाँ महात्माजी आये और अपनी अलौकिक शारीरिक तथा मानसिक शक्तिके प्रभावसे ऐसे लोगोंके हृदयका पागलपन दूर कर उन्हें प्रकृतिस्थ किया जो विक्षिप्त हो रहे थे। हमारा यह कर्त्तव्य है कि हम उस उदात्त लक्ष्यके कार्यसूत्रोंको अपने हाथमें लेकर उसी पथका अनुसरण करें जिसके लिए महात्माजी जीते रहे और मरे। इसी भाँति अनेक प्रकारसे निर्दलित इस राष्ट्रको हम शांति प्रदान कर सकते हैं।

यमुना तटपर दाह संस्कारके स्थानपर शोकविह्वल मौलाना अबुल कलाम आजाद, चीनी राजदूत, श्रीमती सरोजिनी नायडू, सरदार बलदेव सिंह आदि ।

राजघाट (दिल्ली में) दाह-संस्कारके दूसरे दिन अस्थि-संचयनका दृश्य ।

यमुना तटपर राजघाट (दिल्ली) में दाह-संस्कार-स्थलपर होनेवाली सायंकालीन प्रार्थनाका एक करुण दृश्य ।

आज महात्मा गांधीके दुःखद निधनपर सारा संसार शोक-मग्न है। समवेदना और शोकके सदेश सभी देशों और सभी वर्गके लोगोंकी ओरसे चले आ रहे हैं। राजे महाराजे, अध्यक्ष, मन्त्री, व्यवस्थापक, सैनिक, ईसाई, पादरी, धनी और दरिद्र सभी शोक प्रकट कर रहे हैं। शव-यात्राके दिन भारत और पाकिस्तान दोनों राष्ट्रोंके सब काम बंद थे। दस लाखके लगभग जनता शव-यात्राके जुलूसमें सम्मिलित थी। हिन्दू, मुसलमान, सिख, क्रिस्तान, पारसी—चालीस करोड़ भारतीय जनता जो जहाँ थी वहीं उस दिन उस दिवगत आत्माके लिए प्रार्थनामें निमग्न थी। उनके महाप्रयाण पर जैसा शोक-प्रदर्शन हुआ, विश्वके इतिहासमें उसकी समता अलभ्य है। अपने जीवन कालमें वह विश्वके सबसे बड़े व्यक्ति थे और मृत्युके पश्चात् भी वैसे ही रहे। कैसा था उनका उज्ज्वल अंत!

❋

श्रीमती प्रभावती देवी

[गांधीजीकी शिष्या]

श्रद्धेय बापूको हृदयसे दो चीजें, चर्खा और प्रार्थना, सबसे अधिक प्रिय थीं और उनके प्रति वह अन्तिम दम तक दृढ़-प्रतिज्ञ बने रहे।

❋

श्री सत्यनारायण प्रसाद सिंह

[प्रधान सचेतक : औपनिवेशिक व्यवस्थापिका सभा]

महात्मा गांधीजीका महाप्रयाण जिस संध्याको हुआ उस दिन पाँच मिनटके भीतर मैं बिरला-भवन जा पहुँचा। उनकी आकृतिसे यह नहीं जान पड़ रहा था कि उनकी मृत्यु हो गयी है। उनके संपर्कमें आनेपर उनमें सदासे जो शांति और मुस्कुराहट मैं देखता आया था, वही उस समय भी उनके चेहरेपर विद्यमान थी। वहाँ उपस्थित लार्ड माउंटबैटन यह कहते सुनाई पड़े कि महात्माजीके निधनका समाचार समस्त विश्वको विकंपित कर देगा। पाकिस्तानको भी गहरा क्षोभ हुआ।

यद्यपि गांधीजी नहीं रहे, तथापि कौन कह सकता है कि सचमुच ही वह नहीं हैं। जबतक गंगा और यमुनामें जल है और जबतक सूर्य और चन्द्र प्रकाशमान हैं, गांधीजी अमर रहेंगे।

स्वामी सहजानन्द सरस्वती

[प्रसिद्ध किसान नेता]

हमारे लिए यह हत्या धर्मोन्माद तथा धर्म-संस्कृतिके वातोन्मादके प्रबल विषधर सर्पवत्, किसी भी मूल्यपर, अपनी प्रभुता स्थापित करनेकी दृढ़ इच्छाका द्योतक है। हमें दृढ़ निश्चय करना है कि हम अपना संतुलन खोकर राक्षस न हों, शान्त रहें और उस समयतक चैन न लें जबतक इस राक्षसका, इस धर्मोन्मादी राजनीतिक पागलपनका, हमारे देशसे अन्त न हो जाय और हिन्दमें प्रत्येक मुसलमानका जीवन, सम्मान तथा सम्पत्ति पूर्णतः सुरक्षित न हो। महात्माजीके आत्मबलिदानकी स्मृतिका यही एकमात्र साधन है।

o o o

जिसकी आशा न थी, वह बात हो गयी। महात्मा गांधी न रहे, सेवाग्रामके संत न रहे, नवीन भारतके पिता न रहे, जन्म-जात विद्रोही न रहे। संसार आश्चर्य-चकित है, मानवताको धक्का लगा है, राष्ट्र स्तब्ध है। सांप्रदायिकताजन्य प्रतिक्रियाके विरुद्ध प्राण-पणसे लड़ते हुए महात्माजीने जीवनका अभूतपूर्व बलिदान किया है। आइये, हम लोग उस गौरवमय मृत्युका अनुकरण करें। आइये, हम यह बात मान लें कि उनकी यह हत्या उस अप्रगतिशील सांप्रदायिक कट्टरता एवं धार्मिक संस्कृतिमूलक पागलपन-रूपी रक्त-बीजकी विजय-यात्रा है जिसमें वह किसी भी मूल्यपर सफल होनेको कृतप्रतिज्ञ है। इसलिए हम दृढ़ संकल्प कर लें कि हम अपना मस्तिष्क ठीक रखेंगे, शांत रहेंगे और जबतक इस भूमिसे यह रक्त-बीज, यह सांप्रदायिकताका विष, यह राजनीति-मूलक धार्मिक उन्माद निर्मूल नहीं कर दिया जाता और यहाँ एक-एक मुसलमान तथा वहाँ एक-एक हिन्दूका जीवन, सम्मान और संपत्ति सोलहो आने सुरक्षित नहीं कर दी जाती, हम चैन नहीं लेंगे।

महात्माके बलिदानकी पुण्य-स्मृतिका यही एकमात्र मार्ग है। आज हमें इसका संकल्प करना होगा।

❀

"ईश्वर न काबामें है, न काशीमें है। वह तो घर-घरमें व्याप्त है, हर दिलमें मौजूद है।" —गांधीजी

श्री जगतनारायण लाल

[प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता]

एक हत्यारेके हाथसे महात्मा गांधीकी हत्या केवल सबसे बड़ी राष्ट्रीय विपत्ति ही नहीं बल्कि विश्वकी एक आध्यात्मिक क्षति है जिसकी गुरुताकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। इतना महान आध्यात्मिक गुरु सदियोंके अनन्तर हमको, विश्वको तथा उसके निवासियोंको जिसके बीच वह रहता है, ऊँचा उठाने और पवित्र बनानेके लिए आता है और हमें पतनके गर्त्तसे सम्मान्य स्तरपर पहुँचा देता है।

श्री शीलभद्र याजी

[प्रधान मन्त्री : अग्रगामी दल]

गांधीजीकी जघन्य हत्याका दुःखद समाचार देशकी प्रगतिशील शक्तियोंके लिए राष्ट्रीय विपत्ति और बहुत बड़े खतरेका सूचक है। महात्माजीकी हत्या साम्प्रदायिक प्रतिक्रियावादी शक्तिकी ओरसे हम लोगोंको चुनौती है। स्वतंत्रता, भ्रातृत्व तथा साम्प्रदायिक एकताकी प्रतिमूर्तिको साम्प्रदायिकता-विरोधी संघर्षमें मरना पड़ा। इस मृत्युसे उन लोगोंकी आँखें खुल जानी चाहिये जो अब भी साम्प्रदायिकता और राष्ट्रीय तथा प्रजातंत्रात्मक शक्तियोंके बीच ढुलमुल नीति बरत रहे हैं।

कांग्रेसकी वामपक्षी तथा प्रगतिशील शक्तियोंको एक साथ मिलकर अग्रसर होना है और साम्प्रदायिकता तथा प्रतिगामी शक्तियोंका सदाके लिए अन्त कर देना है। यदि हम गांधीजीकी कामनाएँ पूरी नहीं करते तो हम कहींके न रहेंगे। आज हम लोग इस सम्प्रदायवादी तथा प्रतिगामी शक्तियोंसे संघर्ष करने तथा इस प्रकार गांधीजीके अधूरे कार्यको पूर्ण करनेकी गम्भीर प्रतिज्ञा करें। राष्ट्रपिताकी स्मृतिको स्थायी बनाने तथा उनके प्रति सम्मान प्रदर्शित करनेका यही एकमात्र साधन है।

महात्माजी मर कर भी चिरंजीवी हैं।

श्री जगदेव प्रसाद

[प्रमुख हरिजन नेता]

बापूका देहान्त हो गया। वह राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक जड़-वादिताके घेरेसे बहुत ऊँचे थे। भारतमें हरिजनोंकी स्थिति उन्नत बनानेके एकमात्र उत्तरदायी वही थे। हरिजन-समुदायके प्रतिनिधिके नाते मैं उस महान् दिवंगत आत्माके प्रति श्रद्धा एवं असीम वेदनासे नतमस्तक हूँ।

o o o

महात्मा गांधीकी मृत्युसे इस देशपर तथा सारी दुनियापर महान विपत्ति आ पड़ी है। आज दुनियामें बबरतापूर्ण राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध हो रहा है; घृणा तथा क्रूरता, आपत्तियों तथा विपत्तियोंका साम्राज्य है जिससे मानवका निरंतर विनाश हो रहा है। इस प्रकारकी दुनियामें गांधीजी एक प्रकाश थे जिन्होंने दुनियाको सुख तथा शान्तिका मार्ग दिखलाया। उनकी मृत्युसे आज दुनियासे प्रकाश चला गया। महात्माजी इस प्राचीन राष्ट्रकी पद्धति तथा संस्कृतिकी विशेषताओंके महान प्रतीक थे। वह सत्य और अहिंसाके अग्रणी, प्रेम और भ्रातृत्वके अग्रदूत तथा गरीबों और पददलितोंके रक्षक थे।

वह भारतकी आत्माका प्रतिनिधित्व करते थे। वह इस विशाल उपमहा-देशकी एकताके लिए साक्षात अवतार थे। वह देवताके समान सबपर अपनी कृपा-दृष्टि रखते थे। अछूतोंके प्रतिनिधिके रूपमें, मैं महात्माजीकी स्मृतिके सामने नतमस्तक हूँ जिनका जीवन इस पददलित जातिके लिए अति संरक्षणीय था। यह गांधीजीकी ही कृपा थी जिन्होंने अछूतोंको "हरिजन" बना दिया। यह उन्हींके प्रयत्नोंका फल है कि हमें आज वैयक्तिक अधिकार तथा आजादी मिली है जिसे संकीर्ण समाजने हमें देनेसे इनकार कर दिया था। यह महात्माजीका ही प्रयत्न था कि देशमें भ्रातृ-भावनाकी तथा जाति-पाँति समताकी लहर आ गयी है। एक पागल व्यक्तिके काले करतूतोंके द्वारा हमने इस अमूल्य निधिको खो दिया। महात्माजीके लिए हम रो रहे हैं। परन्तु हमें अपने विचारोंको तथा हृदयको दृढ़ रखना चाहिये। आइये, हम लोग अपने राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक मतभेदोंको भुला दें। आइये, हम लोग देशकी एकता तथा उन्नतिके लिए सफल प्रयत्न करें।

आइये, अपने प्रयत्नों तथा साधनों द्वारा हम महात्माजीके आदर्शको पूरा करें जिससे देश एकताके सूत्रमें बँध जाय, सुखी हो, जहाँ सत्य और प्रेमकी

धारा बहे। इसीके द्वारा हम अपने परम-प्रिय बापूकी स्मृतिकी रक्षा कर सकते हैं। परमेश्वर हमें यह करनेकी शक्ति प्रदान करे। ईश्वरसे दिवंगत-आत्माकी शांतिके लिए हम प्रार्थना करते हैं।

❁

श्री ए० मुहम्मद नूर

[अध्यक्ष : बिहार प्रान्तीय मोमिन जमैयत]

भारतकी इस अँधेरी घड़ीमें आशाकी एकमात्र किरण यही है कि महात्मा गांधीकी दुःखद मृत्यु भारतीय आत्माओंमें उनके जीवन-अभिलाषित सेवाभाव एवं लक्ष्योंकी प्राप्तिके लिए अग्रसर होनेकी स्फूर्ति और प्रेरणा प्रदान करेगी।

सैयद मुहम्मद मेहदी

[मुसलिम लीग पार्टीके नेता : बिहार कौंसिल]

भारतके मुसलमानोंने अपना सबसे विश्वसनीय मित्र खो दिया। महात्माजीने अपना जीवन हिन्दू-मुस्लिम एकता तथा भ्रातृत्वकी स्थापनामें उत्सर्ग कर दिया। हम सभी आज बहुत दुःखी हैं क्योंकि इस क्षतिकी पूर्ति नहीं हो सकती। विश्वमें प्रेम और शान्तिकी स्थापना ही उनका उचित स्मारक होगी।

सरदार लतीफुर्रहमान

[मुस्लिम लीग पार्टीके नेता : व्यवस्थापिका सभा]

बापूकी हत्यासे हमपर जो आपदा आ पड़ी है संसारके इतिहासमें वैसी कभी नहीं पड़ी थी। उनकी महत्ताका सबसे बड़ा सबूत यह है कि उनके राजनीतिक विरोधी भी आज निराश हैं और यह समझ रहे हैं कि हम मिट गये। महात्मा गांधीके चले जानेसे मुसलमानोंका ही नुकसान हुआ है जिनके लिए उन्होंने अपनेको बलिदान कर दिया। गांधीजीके चले जानेसे सिर्फ हिन्दकी ही नहीं बल्कि सारे संसारकी क्षति हुई है।

जो रोशनी महात्मा गांधी दुनियामें लाये थे वह अभी जल रही है और उनके संदेश जनताके दिमागपर गंभीर असर कर रहे हैं।

श्री बद्रुद्दीन मुहम्मद

[मंत्री : प्रान्तीय मुसलिम लीग]

महात्माजी वस्तुतः उन महान व्यक्तियोंमें थे जो इस पृथ्वीपर पैदा हुए हैं। इस संकटकी घड़ीमें मुसलमानोंने अपना सबसे सच्चा मित्र और नेता खो दिया।

बिहार असेम्बली

यह सभा महात्मा गांधीकी दुःखद मृत्युसे सामान्यतः संसारकी और विशेषतः भारतकी जो अपार क्षति हुई है उसके लिए असीम वेदना और शोक प्रकट करती है और इस भय तथा आघातका अनुभव करती है कि इस महान देवदूतकी हत्या—जो इस संसारमें प्रेम, सत्य और अहिंसाका अमर संदेश लेकर अवतरित हुआ था और जिन सिद्धांतोंका प्रवर्त्तन और अनुसरण उसने किया—एक भारतीय द्वारा उस स्वतंत्र भारतमें की गयी जिस स्वतंत्र भारतका वह रचयिता था। यह सभा शांति तथा शुभेच्छाके महान प्रतीक और भारतके राष्ट्रपिताकी पवित्र स्मृतिमें श्रद्धांजलि अर्पित करती है और उनकी मृत्युपर सम्मान प्रस्तुत करते हुए, शोक कर, संतप्त हो देश-वासियोंसे अनुरोध करती है कि वे गांधीजीके आत्म-त्यागपूर्ण जीवन द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतोंका अनुसरण करें। यही उनकी पवित्र स्मृतिको स्थायी बनाने तथा सदा अंकित रखनेका सर्वोत्तम साधन है। यह सभा आशा करती है कि उनका यह दुःखद अंत अन्ततोगत्वा भारतीय आत्माको सभी सांप्रदायिक भावनाओंसे मुक्त करेगी और पीड़ित जनताको शांति एवं एकता प्रदान करेगी जिसके लिए गांधीजी सदा अपना जीवन बलिदान करनेको तत्पर रहते थे और अंतमें बलिदान कर भी दिया।

"मैं यह कहनेका साहस करता हूँ कि अगर हमारी अहिंसा वैसी न हुई जैसी कि वह होनी चाहिये, तो राष्ट्रको उससे बड़ा नुकसान पहुंचेगा। क्योंकि उसकी आखिरी तपिशमें हम बहादुरके बजाय कायर साबित होंगे। कायरतासे बड़ी कोई बेइज्जती नहीं।"

—गांधीजी

पूर्वी पंजाब

माननीय चन्दूलाल त्रिवेदी

[गवर्नर : पूर्वी पंजाब]

महात्माजीकी मृत्युके समाचारसे भयंकर आघात लगा है और हमारा हृदय अवर्णनीय वेदनासे भर उठा है। वे भारतीय राष्ट्रके पिता और हमारी स्वतंत्रताके निर्माता थे। इस संकटके समय हमें प्रेरणा देने और हमारा नेतृत्व करनेके लिए शरीरसे अब गांधीजी नहीं रहे। हमारे देशके इतिहासमें उनका नाम अमर रहेगा। उनकी सर्वोत्तम श्रद्धांजलि यह होगी कि जिन आदर्शोंकी पूर्तिके लिए वे जिये, रहे और मरे हम उनका अपने दैनिक जीवनमें प्रयोग करें।

❀

श्रीमती कुसुम त्रिवेदी

[पूर्वी पंजाबके गवर्नरकी पत्नी]

इस भयंकर दुर्घटनाके अवसरपर जब राष्ट्रपिता हमसे छीन लिये गये हैं, वेदना व्यक्त करनेके लिए शब्द नहीं मिलते। हमें क्षमा और साहसके साथ यह क्षति सहन करनी पड़ेगी और महात्माजीने जिन उच्च आदर्शोंके लिए अपनी जीवनाहुति दी, उन्हें बनाये रखनेके लिए नया संकल्प लेकर अपनेको समर्पण कर देना चाहिये। उस महान आत्माको भगवान् शांति दे।

श्री एस० पी० सिंह

[भूतपूर्व अध्यक्ष : पंजाब व्यवस्थापिका सभा]

गांधीजी महात्मा ही नहीं थे बल्कि धर्मकी आत्मा थे। भारतकी दिव्यतम एवं भव्यतम पूर्वागत संस्कृति उनमें मूर्तिमान थी। हमारे ऐक्य-यंत्रको ठीक करनेके लिए वह ध्रुवतारा सदृश थे। उनकी जघन्य हत्या हमारी आशाओंका

सूर्यास्त है। इस जघन्य हत्याका बदला इस प्रकार होना चाहिये कि हम इस युग-महापुरुषके आदर्श और भावनाको जीवित रखें। हमारा पारस्परिक प्रेम उनके सिद्धान्तोंको दृढ बनायेगा। अस्त सूर्य पुनः उदय हो। गांधीजी अमर हों।

❀

माननीय डाक्टर गोपीचन्द भार्गव

[प्रधान मंत्री : पूर्वी पंजाब]

आज सारे देशमें शोक-दिवस है। हमारा सिर लज्जासे झुका हुआ है।

गीतामें कहा गया है कि जब कभी पृथ्वीपर पापाचार बढ़ जाता है ईश्वर जन्म लेता है और धर्म तथा नैतिकताकी रक्षाके लिए मनुष्य-रूपमें वसुधापर अवतीर्ण होता है। हमारे देशका नैतिक पतन हो रहा था। इसकी रक्षाके लिए ईश्वरने महात्मा गांधीके रूपमें देवदूत भेजा। अपने अनुपम त्याग और तपस्यासे उन्होंने देशको ऊँचे उठाया। उन्होंने शांति और अहिंसाका उपदेश दिया। उनका पदानुसरण करके ही भारतवर्षने अपनी स्वतंत्रता प्राप्त की है।

महात्मा गांधी किसीके शत्रु नहीं थे। जिस पागल व्यक्तिने उनकी हत्या की उसने यह न सोचा कि मैं क्या कर रहा हूँ। पंजाब तो महात्माजीका अतीव कृतज्ञ है। भारतीय स्वतंत्रताके युद्धका सूत्रपात उन्होंने पंजाबसे ही किया। ऐसे महान व्यक्तिका इस प्रकार दुःखद अंत हो, यह हमारे लिए कलंककी बात है। महात्माजीका ईश्वरमें अटूट विश्वास था। हमें भी ईश्वरमें विश्वास रखना तथा उसकी इच्छाके अनुसार कार्य करना होगा। इस अपूरणीय और असह्य क्षतिको सहन करनेकी शक्ति ईश्वर हमें प्रदान करे। वह महान आत्मा शांति लाभ करे, यह हमारी कामना है।

महात्माजी ईश्वरके भक्त थे। वह अमर व्यक्तियोंमेंसे थे। उनका पथानुसरण करने तथा उनके महान उद्देश्यकी पूर्ति करनेमें ईश्वर हमारी सहायता करे। समस्त विश्वके लिए महात्माजीने शांतिका सदेश दिया है।

❀

माननीय सरदार स्वर्ण सिंह

[गृह-मंत्री : पूर्वी पंजाब]

स्वतंत्रता मिले अधिक दिन अभी नहीं हुए थे कि क्रूर कालने राष्ट्रपिताको हमसे छीन लिया। महात्माजी स्वतंत्रताके संदेश-वाहक थे। देशको पराधीनतासे मुक्त करनेके लिए उन्होंने सर्वस्व निछावर कर दिया। इस दुर्घटनासे हम दुनियाको

मुँह दिखाने लायक नहीं रहे। जिस नेताने हमें स्वतंत्रता, एकता और बन्धुत्वका मार्ग दिखलाया, वह अब हमारे मध्य नहीं रहा। वर्त्तमान संकट कालमें महात्माजीके रहनेसे देशको बहुत भारी सहारा था। आज भारत और समस्त विश्वका नैतिक बल जाता रहा। हम वस्तुतः अभागे हैं कि जब देशको उनकी अधिक आवश्यकता थी, वे हमें छोड़कर चले गये। हम अब यही प्रार्थना कर सकते हैं कि ईश्वर दिवंगतात्माको शांति प्रदान करे और हमें इस महान विपत्तिका सामना करनेकी शक्ति दे।

✽

माननीय पृथ्वीसिंह आजाद

[मंत्री : श्रम तथा चुंगी विभाग, पूर्वी पंजाब]

गांधीजी मनुष्य जातिके उद्धारक थे। अनाथ और उपेक्षित व्यक्तिके वह सच्चे मित्र, पथ-प्रदर्शक और आध्यात्मिक नेता थे; उन्होंने कभी किसीको निराश नहीं किया। उनके निधनसे हरिजनोंकी अत्याधिक क्षति हुई है, क्योंकि वह उनके सबसे बड़े शुभचिंतक थे।

ईश्वर करे, हमारे प्यारे बापूकी उदार आत्माको स्वर्गीय शांति मिले। उनकी आत्मा जहाँ भी होगी, वहींसे हमारा पथ-प्रदर्शन करेगी और हमें विश्वास है कि उनके द्वारा निर्दिष्ट पथपर हम अडिग भावसे अग्रसर होते रहेंगे। ईश्वर हमें शक्ति और साहस दे कि हम अपने उस महान सेनापतिके सुयोग्य सैनिक बन सकें जो हमें अमूल्य सम्पदा दे गया है।

✽

माननीय प्रताप सिंह

[मंत्री : नागरिक रसद विभाग, पूर्वी पंजाब]

एक उन्मत्त और पथ-भ्रष्ट युवक द्वारा की गयी महात्माजीकी हत्या महा भयंकर आघात और हृदय-विदारक घटना है। हमें अपनी सभी कठिनाइयों और मुसीबतोंमें महात्माजीसे सान्त्वना मिलती थी। अब हम अनाथ हो गये हैं। शांति, प्रेम, सत्य और सद्भावनाके वह सच्चे देवदूत थे। बदला लेना उनके स्वभावके विरुद्ध था। महात्माजी विश्वके महान् व्यक्ति थे और सर्वत्र उनका सम्मान था। हमें सर्वदा उनके उपदेशोंका मनन तथा पद-चिन्होंका अनुसरण करना चाहिये।

मानदीय रणजीत सिंह

[विकास-मंत्री : पूर्वी पंजाब]

यह हमारा बड़ा दुर्भाग्य है कि जब इस समय हमारे सामने अनेक समस्याएँ सुलझानेको पड़ी थीं, इतना महान व्यक्ति हमारे बीचसे उठ गया। पिछले ३० वर्षोंके जीवन-कालमें गांधीजी हमारे राष्ट्रीय प्रगतिके कर्णधार थे। उन्होंने हमारे देशमें बहुमुखी क्रान्ति कर दी। मतभेदों और संघर्षोंसे ध्वस्त विश्वके लिए गांधीजीके उपदेश तथा उनके जीवनकी परिभाषा ही आशाका केंद्र हो सकती है। गांधीजी चले गये, पर उनका संदेश वर्त्तमान है। विश्वसे दुखों और दुश्चिन्ताओंको दूर करनेके लिए ही उनका जन्म हुआ था। महात्माजीके प्रति अपना सच्चा सम्मान प्रदर्शन करनेका एकमात्र सच्चा उपाय है कि हम उनके उपदेशोंपर चलें। हम आशा करते हैं कि उस जीवनने जो पवित्र और अमर ज्योति जगायी है, वह भारत और विश्वका पथ-प्रदर्शन करेगी। गांधीजीने जो कुछ कहा और किया है उसीपर चलनेसे ही हम मानवताका उद्धार कर सकते हैं।

माननीय सरदार लहरी सिंह

[तामीरात मंत्री : पूर्वी पंजाब]

महात्माजीका आकस्मिक प्रयाण देशके लिए एक भयंकर आघात और अप्रत्याशित दुर्घटना है। स्वतंत्रता मिलनेके तुरंत बाद ही ऐसा हो जाना हमारे बड़े दुर्भाग्यका सूचक है और अब जो बोझ हम सबपर आ गया है उसके लिए धैर्य और प्रयत्नोंकी अपेक्षा है। महात्माजी वस्तुतः आधुनिक भारतके निर्माता थे और थे हमारी समस्त आशाओं और आकांक्षाओंके प्रतीक। अपने सार्वजनिक कार्यों द्वारा उन्होंने समस्त राष्ट्रीय जीवनमें नवजागरण भर दिया तथा अंधकार एवं निराशाके वातावरणमें उनके सत्य, प्रेम और एकताके संदेशने ज्योतिका काम किया। जिन दुःखद परिस्थितियोंमें उनका निधन हुआ है, वह हम सबके लिए महान विपत्ति है, विशेषतः गरीबों और पिछड़े हुए लोगोंके लिए, जिनके उद्धारके हेतु वे आजीवन संघर्ष करते रहे। मजदूरों और किसानोंने तो अपना सबसे बड़ा योद्धा और हिमायती खो दिया।

❀

माननीय ईश्वरसिंह मजाहिल

[पुनर्वासन-मंत्री : पूर्वी पंजाब]

गांधीजीका निधन भारत और समस्त विश्वके लिए महान संकट है। यों तो वह समस्त मानव जातिके अभ्युत्थानके लिए क्रियाशील थे, किंतु उनका मुख्य उद्देश्य हमारे सामाजिक ढाँचेमें ऐसा परिवर्त्तन करना था जिससे पूँजीपतियों द्वारा गरीबोंका एवं शक्तिशालियों द्वारा दुर्बलोंका शोषण तथा उत्पीड़न न हो सके। गरीबों और अनाथोंके प्रति महात्माजीका जो अनुराग था, विश्वके इतिहासमें वस्तुतः ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जिससे उसकी तुलना की जा सके। उन्होंने दीन हीनोंका ही सदैव पूर्ण समर्थन किया है। हम पंजाब-निवासी तो उनके विशेष आभारी हैं, क्योंकि हमारी भलाईके लिए महात्माजी सदैव सक्रिय और तत्पर रहे। पिछले कुछ महीनोंसे तो शरणार्थियोंकी सहायताके लिए वे जी-जानसे लगे हुए थे। आइये, हम उनके उपदेशोंपर चलें और जो उच्च सिद्धांत वे वसीयतके रूपमें छोड़ गये हैं, उनका दृढ़तापूर्वक पालन करें।

श्री भीमसेन सच्चर

[प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता]

बापूकी मृत्युसे भारतका प्रत्येक गृह आज महाशोक-मग्न है। यह शोक एक व्यक्ति या संस्थाका नहीं, बल्कि समस्त विश्वका है। महात्माजी मानव-समाजके जन्म-जात सेवक थे और उसकी सेवामें ही उनका बलिदान हुआ। राष्ट्र नेतृत्व तथा प्रकाशके लिए विपत्तिमें उनकी शरणमें जाता था। वे हमारे जीवनमें इतना घुल-मिल गये थे कि हम अपनेको गांधीजीसे अलग नहीं रख सकते।

महात्माजीका शरीर चला गया, पर उनकी आत्मा विद्यमान है। उनकी आत्मा अमर है। गीताके उपदेशोंसे उनका जीवन बना था। गीतामें विश्व-ज्ञान संचित है। देशके नवयुवकोंको उससे उपदेश ग्रहण करना चाहिये। परस्परका वैमनस्य दूर करनेके दो उपाय हैं—एक समझौता तथा शिष्टताका मार्ग है, दूसरा पशुबल है। एक शाश्वत व्यावहारिक न्याय-पथ है और दूसरा दुःखांत एवं विनाशकारी। गांधीजीकी हत्या जिस परिस्थितिमें हुई, उससे सिद्ध है कि ऐसे मार्गपर चलनेवाली संस्थाएँ कभी सफल नहीं हो सकती।

गांधीजी

गांधीजीके स्थानकी पूर्त्ति एक व्यक्तिसे नहीं हो सकती। सभी उदार, सत्यनिष्ठ एवं वीर पुरुषोंका कर्त्तव्य है कि उस रिक्त स्थानकी पूर्ति करें।

❀

मास्टर तारा सिंह

[प्रसिद्ध अकाली नेता]

महात्मा गांधीकी दुःखद मृत्युके महाशोकसे देशका प्रत्येक प्राणी क्षुब्ध और व्यथित है। यह देशका नहीं, राष्ट्रका ही नहीं, विश्वका शोक है। यह राष्ट्रकी क्षति है। बापूका जन्म मानवताकी सेवाके लिए हुआ था और उसीकी सेवामें उनका बलिदान हुआ। वे देशके सहज आधार-स्तम्भ थे। जब भी देश विपत्तिमें पड़ती थी, सभी उनकी ओर आशा-भरी दृष्टिसे पथ-प्रदर्शन और प्रकाशके लिए देखते थे। उनका प्रभाव हमारे जीवनमें इतना गंभीर और व्यापक था कि हम उन्हें अलग नहीं कर सकते।

उनकी भौत्तिक सत्ता आज भले न हो, पर उनका आध्यात्मिक अस्तित्व सदैव बना रहेगा। उनकी आत्मा अब भी जीवित है। वह अमर हैं। ईश्वर गांधी-जीकी आत्माको शांति दें।

° ° °

गांधीजीके सिद्धांतोंसे ही देश अराजकतासे बच सकता है। महात्माजीके अनुयायियोंका परम कर्त्तव्य है कि अहिंसाका विवेकसे पालन करें। सभी दलों तथा वर्गोंसे निवेदन है कि वे पूर्ण शांति तथा सहिष्णुताका व्यवहार करें।

❀

बाबा खड्ग सिंह

[प्रसिद्ध अकाली नेता]

महात्माजीकी दुःखद मृत्यु अतीव निन्दनीय है। वे जगत-प्रसिद्ध भारतीय नेता थे। उनकी क्षतिसे भारतकी अपूरणीय क्षति हुई है। सभी इस हत्याकी निन्दा करेंगे।

❀

सरदार शार्दूलसिंह कवीश्वर

[सुप्रसिद्ध सिख नेता]

त्रिकालकी महत्तम मानव-विभूति महात्मा गांधीकी मृत्यु हुई और वह शहीदकी भाँति मरे। उनके साथ जिनका व्यक्तिगत संपर्क रहा है वे इस हृदय-

विदारक शोक और पीड़ासे सदा व्यथित रहेंगे। विश्व अनाथ और अन्धकाराच्छन्न हो गया। पर हम यह कभी नहीं भूल सकते कि महात्माजीने जो प्रकाश हमें दिया है उसमें स्वर्गीय ज्योति है, वह कभी बुझ नहीं सकती; शाश्वत दीप्तिसे वह सदा आलोकित रहेगा।

❀

श्री श्रीकृष्ण गोपालदत्त

[प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता]

यदि समाजवादीका अर्थ अकिंचनोंका मित्र हो तो महात्माजी विचार तथा आचारमें अनुपम समाजवादी थे। समाजवादके निमित्त एक संप्रदाय विश्वमें प्रचलित है, पर महात्माजीका समाजवाद भारतीय जनताकी संस्कृति तथा प्रतिभाके अनुकूल था। श्रमिकोंको चाहिये कि गांधीजीके उपदेशानुसार समाजका निर्माण करें। यदि भारतने अपने राजनीतिक जीवनमें उनके सिद्धांत कार्यान्वित नहीं किये तो विश्वमें गांधीजीके सिद्धांत सफल नहीं हो सकेगें।

❀

शेख सादिक हसन

[नेता, मुस्लिम लीग : व्यवस्थापिका सभा]

महात्माजीकी हत्यासे महाशोक हुआ। इससे भारतीय हिंदू-मुसलमानों तथा मानव-समाजकी अपूरणीय क्षति हुई है।

❀

"जबतक प्रजातन्त्रका आधार हिंसापर है, वह दीन-दुर्बलोंकी रक्षा नहीं कर सकता। दुर्बलोंके लिए ऐसे राजतन्त्रमें कोई स्थान ही नहीं है। प्रजातन्त्रके अर्थसे यह समझता हूँ कि इस तन्त्रमें नीचेसे नीचे और ऊँचे से ऊँचे आदमीको आगे बढ़नेका समान अवसर मिलना चाहिये। लेकिन सिवा अहिंसाके ऐसा कभी हो ही नहीं सकता।"

—गांधीजी

असाम

मानीय सर अकबर हैदरी

[गवर्नर : असाम]

गांधीजी राष्ट्रके पिता थे। उनकी मृत्युसे सबके समान मैं भी दुःखी हूँ। उनके आदर्श और उनका महाबलिदान हमारा पथ-प्रदर्शन करें।

❀

श्री देवेश्वर शर्मा

[अध्यक्ष : व्यवस्थापिका सभा]

इस दुःखद हत्यासे हम शोकमग्न हैं। उस आदरणीय गुरुकी शिक्षाओंके अनुरूप बननेके लिए हमारा कर्त्तव्य है कि बापूके उपदेशोंका पूर्णतः पालन करनेमें प्रयत्नशील हों।

❀

श्रीमती बोनिली खाङ्माँ

[उपाध्यक्षा : व्यवस्थापिका सभा]

महात्माजीके दुःखद निधनका समाचार सुनकर अत्यंत शोक और घोर दुःख हुआ। असामके स्त्री-पुरुषोंके ही नहीं बच्चोंके भी हृदयको इस समाचारने गहरी चोट पहुँचायी है। अभी कुछ ही दिनों पूर्व स्वतंत्रताके उत्सवके अवसरपर सारे देशने सत्य और अहिंसाके इस अद्भुत पुजारीको अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की थी, क्योंकि जो सफलता-प्राप्ति भारतके लिए शस्त्रबलसे भी अत्यंत दुष्कर थी वही महात्माजी द्वारा निःशस्त्र संपन्न हुई।

असामकी महिलाएँ जिन्हें दयनीय दशासे ऊँचा उठानेमें महात्माजीने अथक प्रयत्न किया, आज श्रद्धा और भक्तिसे उस महामानवकी पुनीत स्मृतिमें नत-मस्तक हैं।

हमारे लिए यह बड़ी लज्जा और दुःखकी बात है कि महात्माजीकी मृत्यु उनके हाथों नहीं हुई जिन्हें हम उनका शत्रु समझते थे वरन अपने ही मित्रों और अपने ही देशवासीके हाथों उनकी हत्या हुई। भगवानसे हमारी प्रार्थना है कि वह बापूकी पवित्र आत्माको पूर्ण विश्राम और शांति दे तथा हमें ऐसी शक्ति दे कि हम उनके आदर्शों और उपदेशोंपर चल सकें।

❀

मानतीय गोपिनाथ बारदोलाई

[प्रधान मंत्री : असाम]

महात्मा गांधीके दुःखद निधनसे आज सारा देश शोक-मग्न है। उस पुण्यश्लोक महापुरुषकी पवित्र स्मृतिमें हम अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं। बापूके न रहनेपर आज हमारा देश एक ऐसे पथ-प्रदर्शकसे विहीन हो गया जिसमें भारतके संकट-कालमें उसकी सहायता करनेकी अद्भुत क्षमता थी। वीरताके कार्योंमें उनका स्थान ईसा मसीहके समान ही था। आजका दिन शोक मनानेका नहीं वरन् आत्मनिरीक्षण तथा तप करनेका है।

० ० ०

महात्माजीका निधन असामकी एक महती क्षति है। जब भी कभी असाम कठिनाई या संकटमें पड़ा, महात्माजीने सदा उसकी सहायता की। भावी युग ही भलीभाँति जान सकेगा कि महात्माजी मानवताके कितने महान सेवक थे।

० ० ०

बापूके बड़ेसे बड़े जिस स्मारककी स्थापना देश द्वारा हो सकती है, वह है महात्माजीके संदेशों और उपदेशोंको पूरा करना। गांधीजी जिस उद्देश्यकी साधनामें मरे उस आपसी संदेह, घृणा और द्वेषको दूर करना हमारा सबसे पहला कर्त्तव्य है। यद्यपि उन्होंने हमें राजनीतिक स्वतंत्रता प्रदान की तथापि उसकी आत्मा तबतक संतुष्ट नहीं हो पाती जबतक सांप्रदायिकताका विष समाजसे वह विनष्ट न कर देते। ईश्वरमें विश्वास ही उनका प्रधान अस्त्र था जिसके सहारे वह असत् शक्तिसे सदा लड़ते रहे। उनका दृढ़ विश्वास था कि असत्पर विजय पानेका साधन सत् ही होना चाहिये तथा ईश्वरपर सदा विश्वास रखना चाहिये। सत्य तथा अहिंसाके द्वारा संघर्ष करते हुए भारतको स्वतंत्रता दिलाकर उन्होंने अपने सिद्धांतको पूरा कर दिखाया।

जनतासे प्रार्थना है कि वह दृढ़ताके साथ गांधीजीकी शिक्षाओंका अनुसरण करे। यद्यपि शरीरतः वह हमारे बीच अब नहीं हैं तथापि उनकी आत्मा अपने स्वजनोंका आचरण सदा देखती रहेगी। गांधीजी कभी मर नहीं सकते। उनकी आत्मा अमर है। वह सबके हृदयमें रहेंगे, क्योंकि वह न केवल भारतके ही वरन समस्त विश्वके थे।

गांधीजीका मार्ग प्रकाशपूर्ण राज-पथ है; और उनके चरण-चिन्होंका अनुसरण करना हमारा कर्त्तव्य है। हमारे द्वारा महात्माजीके अस्थि-प्रवाहका संस्कार तभी पूर्ण हो सकता है जब बापूकी आत्मा अपने सिद्धांतोंको कार्यान्वित होते देखेगी।

o o o

उस महापुरुषकी अपरिमित शक्ति और असीम करुणाका ध्यान आते ही हमारा हृदय उनके प्रति श्रद्धा और सम्मानसे भर उठता है। हम विश्वास दिलाते हैं कि हम बापूके आदर्शोंको प्राप्त करनेमें अपनी समस्त शक्ति लगा देंगे।

❀

सर मुहम्मद सादुल्ला

[भूतपूर्व प्रधान मन्त्री : असाम]

गांधीजीकी मौखिक प्रशंसासे काम नहीं चलेगा। यदि सचमुच उस महान आत्माको श्रद्धाञ्जलि देनी है तो उनके कार्य हमें पूर्ण करने होंगे। हिंदू होते हुए भी महात्माजी इस्लाम धर्मके सिद्धांतों एवं आदर्शोंको मानते थे। १३०० वर्ष हुए मक्कामें अरबके पैगम्बरने सत्याग्रहका उपदेश दिया था। उसीके समानान्तर महात्माजीका सत्याग्रह था। महात्माजीकी प्रार्थनामें कुरानका भी पाठ होता था; इसीसे सिद्ध है कि वह भारतमें सभी धर्मोंका समन्वय चाहते थे।

o o o

उस महान आत्माके प्रति मौखिक श्रद्धा उपहासकी वस्तु है। हम लोगोंको चाहिये कि हम लोग मिलकर देशकी दशाको उन्नत बनानेके लिए प्रयत्न करें, साधारण जनताका स्तर ऊँचा उठावें, विभिन्न सांप्रदायोंमें एकता और सद्भावना बढ़ावें और इस भाँति शांति और सद्भावके नवयुगका प्रवर्त्तन करें।

❀

माननीय जे० जे० एम० निकोलस राय

[निर्माण-मंत्री : असाम]

बापूके लिए हम इससे बढ़कर और कोई कार्य नहीं कर सकते कि ईश्वर तथा मानवताकी सेवामें अपनेको उत्सर्ग कर दें; क्योंकि उनकी आत्माको इसीसे शांति मिलेगी। महात्माजी इसीके लिए जीवित रहे। इससे अधिक और किसी भी बातसे उनको प्रसन्नता नहीं होगी। मैं सब लोगोंसे प्रार्थना करता

हूँ, वे स्मरण रखें कि ईश्वरका अस्तित्व है, पाप तथा दुष्कृत्यके लिए दंड मिलता है, और पुण्य तथा सत्कार्यमें शांति मिलती है। इसलिए आजके स्मरणीय दिवसपर हम लोगोंको निश्चय करना चाहिये कि ईश्वरकी सहायतासे प्रेम तथा सत्कार्यके बीज हम बोयेंगे, अपने हृदयसे घृणा तथा बैरके भाव निकाल देंगे। हम ईश्वरसे प्रार्थना करें और अपने हृदयकी परीक्षा करें कि पापका बीज उसमें न उगे।

उनके मौन-दिवस इस बातके सूचक हैं कि इनसे उन्हें अपने सहकर्मियोंके साथ कार्य करनेका बल भगवानसे मिलता था। इसका वे अनुभव करते थे। मौन रहनेसे उन्हें वह शक्ति प्राप्त होती थी जिसके द्वारा पवित्रता, औचित्य, प्रेम और शांतिके शाश्वत सत्यका वास्तविक महत्त्व प्रतिष्ठित कर सकें। उनके उपवासोंका नैतिक महत्त्व हुआ करता था। उनकी प्रार्थना व्यक्त करती है कि जनताके हृदयका परिवर्त्तन वे भगवानकी सहायतासे करना चाहते थे जिसके द्वारा अशांति-ग्रस्त राष्ट्रमें ही नहीं समस्त विश्वमें सच्ची शांतिकी प्रतिष्ठा हो सके।

भारतीय राष्ट्रके बापू महात्मा गांधी अनुभव करते थे कि भारतके सभी लोग तथा सभी संप्रदाय उनसे अभिन्न हैं, वे सबके हैं और सब उनके हैं।

समस्त संसारके लिए उनके हृदयमें करुणा थी और समस्त पीड़ित मानवताके प्रति उनका अन्तस्तल ममतासे परिपूर्ण था। ईसाके समान ही महात्माजीका आचरण भी सम्पूर्ण मानवके प्रति प्रेम, औचित्य और सद्भावनासे ओत-प्रोत था।

पद-प्राप्तिकी महत्वाकांक्षा, दूसरोंके प्रति घृणा और धर्मका बिना समझे-बूझे अंधानुसरण करना कितना भीषण और जघन्य हो सकता है इसकी सूचना महात्माजीकी इस हत्यासे मिलती है। उनकी हत्या उस जातिके ही व्यक्तिने की, जिसे वे प्रेम करते थे। महात्माजीका यह बलिदान व्यर्थ न होगा; अपने लक्ष्य-साधनमें उसका प्रभाव और भी शक्तिशाली होगा। भगवानसे प्रार्थना है इस हत्या द्वारा उन लोगोंके हृदय भी प्रभावित हो जायँ जिनका हाथ इस षड्यंत्रमें रहा है। महात्माजीके समाज सुधारकी दृष्टिसे आधुनिक नैतिक जगतमें यह मृत्यु बड़ी ही शानदार रही।

मन हाथ-पैरकी अपेक्षा बहुत ज्यादा काम करता है। विचार मात्र क्रिया है विचार-रहित अहिंसा हो ही नहीं सकती।"

—गांधीजी

माननीय रामनाथ दास

[स्वास्थ्य तथा श्रम मन्त्री : असाम]

गांधीजीकी भी हत्या हो सकती है, यह हमने कभी नहीं सोचा था। यह महाबलिदान अब भी हमारी आँखें खोल दें, यही कामना है।

❀

मौलाना मुहम्मद तैयब्बुल्ला

[अध्यक्ष : प्रांतीय कांग्रेस कमेटी]

अहिंसाके देवदूत महात्मा गांधीका निधन ईसाकी भाँति हुआ। सत्य और शांतिकी स्थापनाके प्रयत्नमें वे शहीद हुए। इतना ही नहीं, इस्लामकी रक्षाके लिए उन्होंने आत्म-बलिदान किया। उनका अंतिम ऐतिहासिक उपवास मुसलमानोंकी सुरक्षाके लिए तो 'घोषणापत्र' ही था। उनका यह उपवास एक अत्युत्कृष्ट और महान प्रयास था जिसके द्वारा वे सांप्रदायिकताकी उस विनाशकारी ज्वालाको शांत और विनष्ट करना चाहते थे जो आज भारतकी आत्माको ध्वंस्त करनेमें प्रयत्नशील है। उनके दिखाये हुए मार्गपर चलकर हमें उनके लक्ष्योंकी पूर्तिके लिए प्रयत्न करना चाहिये।

❀

श्री बसन्त कुमार दास

[प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता]

भारतने अपना अनमोल रत्न खो दिया। अब वह गरीब हो गया है। गांधीजीकी हत्या इतिहासका वह कलंक है, जो तभी धुल सकता है जब हम गांधीजीके पथपर चलकर उसका प्रायश्चित्त करें।

❀

श्री वैद्यनाथ मुखर्जी

[प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता]

महात्मा गांधी हमारे राष्ट्र-पिता थे। उन्हें खोकर भारतने क्या नहीं खो दिया है? अब रोनेके सिवा हम कर ही क्या सकते हैं।

❀

मौलाना अब्दुल्ला नूरुल हक

[अध्यक्ष : असाम मुसलिम लीग]

महात्मा गांधीजीके आजीवन, अनवरत प्रयासके फलस्वरूप ही भारतको स्वतंत्रता मिल सकी है। भारतीयोंकी दशा सुधारनेके लिए व्यापक रूपसे वह सदा घोर संघर्ष करते रहे हैं। उनका आकस्मिक और असामयिक महाप्रयाण वस्तुतः समस्त मुसलमानोंकी महती क्षति है और इस घटनाने सारे संसारको शोकाभिभूत कर दिया है।

असाम सरकार

असामकी जनता और सरकार महात्माजीके महाप्रयाणपर नतमस्तक होकर अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित कर रही है। मानवताकी सेवा करते हुए वह जिये और मरे। उनकी शिक्षाओंका अनुसरण करना ही उनके प्रति सबसे बड़ी श्रद्धाञ्जलि है। उनके बलिदानसे हमें शिक्षा लेनी चाहिये।

इस हृदय-द्रावक घटनाके समाचारने सारे असामको जो चोट पहुँचायी है, विश्वकी किसी विपत्तिने वैसा आघात नहीं किया था। यह स्वाभाविक ही है कि इस निर्मम पशुतापर लोग अत्यंत क्षुब्ध हों, फिर भी सरकारको आशा है कि जनता शांतिका त्याग न करेगी और जिस भ्रातृ-प्रेमकी शिक्षा महात्माजी देते रहे तथा जिसके लिए जिये और मरे उसीका वह अनुसरण करेगी।

महात्माजीकी सेवाओंके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हुए असामकी सरकार और जनता इस भीषण विपत्तिके समय उस दिवंगत बापूके प्रति अपनी सम्मानपूर्ण श्रद्धाञ्जलि समर्पित करती है।

"जहाँ दया नहीं वहाँ अहिंसा नहीं, अतः यों कह सकते हैं कि जिसमें जितनी दया है उतनी ही अहिंसा है।

—गांधीजी

उत्कल

माननीय डाक्टर कैलाशनाथ काटजू

[गवर्नर : उत्कल]

महात्माजी ऐसे रत्न थे जो सभी ओरसे दीप्त दिखाई पड़ते हैं। जिस दृष्टिकोणसे भी हम उन्हें देखते हैं उसी ओरसे वे देदीप्यमान प्रतीत होते हैं और उनकी ज्योति आँखोंको सुखद जान पड़ती है। हमें गीताका अध्ययन करना चाहिये; क्योंकि गीता महात्माजीको बहुत प्रिय थी। साथ ही उनके बताये हुए आदर्शोंका अनुसरण करना चाहिये। बापूकी स्मृतिमें यही वास्तविक श्रद्धाञ्जलि अर्पण करना होगा।

❀

माननीय हरेकृष्ण महताब

[प्रधान मंत्री : उत्कल]

हमारे राष्ट्रके बापू चले गये। आज हमें इस दुःखद घटनापर आँसू बहाना चाहिये और आँसुओंकी इस धारामें हमें आज अपना क्रोध बहा देना चाहिये। तब उस महान बापूके आदर्शोंके अनुरूप हम अपनेको सिद्ध कर सकेंगे। अब हमें अपने कार्योंका संचालन इस भाँति करना है जिसमें विश्व हमारा उपहास न कर सके। हमें अब भी सावधान और सतर्क हो जाना चाहिये और ऐसा कुछ न करना चाहिये जिससे लक्ष्यतक पहुँचनेमें बाधा हो।

❀

माननीय नित्यानंद कानूनगो

[स्वायत्त-शासन-मंत्री : उत्कल]

गांधीजीपर भारतको ही नहीं सारे संसारको गर्व था, यह इसी बातसे प्रकट हो रहा है कि उनकी हत्यापर सारा विश्व रो रहा है। ऐसा महान व्यक्ति क्या पुनः पृथ्वीपर अवतीर्ण होगा !

❀

मानीय नवकृष्ण चौधरी

[यातायात-मंत्री : उत्कल]

इस समाचारपर विश्वास ही नहीं होता। कोई गांधीजीको भी मार सकता है, यह हमने कभी कल्पना नहीं की थी। हमें अब गांधीजीके लिए नहीं, अपने लिए रोना है। पर रोनेसे गांधीजी नहीं मिल सकते। गांधीजी जीवित हैं, और हमें तभी मिल सकते हैं जब हम उनके निर्दिष्ट पथपर चलें और उस कामको पूरा करें, जो वह हमारे लिए छोड़ गये हैं।

माननीय लिंगराज मिश्र

[स्वास्थ्य तथा शिक्षा-मंत्री : उत्कल]

यह गांधीजीकी हत्या नहीं मनुष्यताकी हत्या है। इसकी जितनी निंदा की जाय थोड़ी है। यह ऐसा पाप है, जो कभी भी धुल नहीं सकता।

श्री राधानाथ रथ

[प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता]

भारतीय राष्ट्रके पिता, भारतकी पुरातन संस्कृतिके प्रतीक, स्वतंत्रताके निर्माता, प्रेम और अहिंसाके देवदूत, सत्यके सबसे बड़े प्रवक्ता, मानवताके सबसे बड़े निःस्वार्थ तथा सच्चे सेवक और आधुनिक युगके महान दधीचि, बापू आज नहीं रहे। भगवान हमें शक्ति दे कि हम उनके पथका अनुसरण कर सकें।

श्री जी. पी. दास

[सरकारी वकील : उत्कल]

इस शोकपूर्ण परिस्थितिमें, आज समस्त उड़ीसावासियोंके साथ, हम महात्माजीके प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित कर रहे हैं। भारतके सब प्रान्तोंमें निर्धनतम होनेके कारण उत्कल, महात्माजीको सबसे अधिक प्यारा था। अतः महात्माजीके निधनसे उत्कलकी भारी क्षति हुई है। मेरे लिए तो यह हानि

व्यक्तिगत दुःख है, क्योंकि, बापूको अपने परिवारमें तीन दिनोंके लिए अतिथि बनानेका सौभाग्य हमें प्राप्त हो चुका है। बापूकी आत्मा हमें आशीर्वाद दे कि उनके बताये मार्गपर हम चल सकें।

❀

श्री महाराजा जशपूर

[उत्कल]

हम सभी बंधु महात्मा गांधीके महाप्रयाणका दुःखद समाचार सुनकर स्तब्ध हो गये हैं। यह शोक केवल हमारा ही नहीं वरन् समस्त राष्ट्रका शोक है, समस्त मानवताका शोक है। हत्यारेके इस दुष्कृत्यने भारत और हिन्दू जातिके मस्तकपर कलंकका टीका लगा दिया। पर बापू मरकर भी अमर हो गये हैं और उनका नाम सदैव देदीप्यमान रहेगा।

❀

"मैं शांति परायण मनुष्य हूँ। शांतिमें मेरा विश्वास है। लेकिन मैं चाहे जो कीमत देकर शांति नहीं खरीदना चाहता। आप पत्थरमें जो शांति पाते हैं वह मुझे नहीं चाहिये। जिसे आप कब्रमें देखते हैं वह शांति मैं नहीं चाहता। लेकिन मैं वह शांति अवश्य चाहता हूँ, जो मनुष्यके हृदयमें सन्निहित है, और सारी दुनियाँके वार करनेके लिए उद्यत होते हुए भी सर्वशक्तिमान ईश्वरकी शक्ति जिसकी रक्षा करती है।"

—गांधीजी

दिल्ली

श्री खुरशेद अहमद खाँ

[चीफ कमिश्नर : दिल्ली]

गांधीजी अपनी ७८ वर्षकी मंजिल तय करके अपने घर सिधार गये। उनका घर वहीं था जहाँ बुद्ध, ईसा, मुहम्मद और नानकका घर था। ऐसा लगता है जैसे सूरज छिप गया है ; लेकिन गांधीजी वह सूरज नहीं जो निकले और डूब जाय। यद्यपि वह हमारी आँखोंसे ओझल हो गये हैं तथापि वह वैसे ही जीवित हैं जैसे वह अपनी दुनियावी जिन्दगीमें थे। ऐसी महान आत्मा मरा नहीं करती।

फिर भी हम आदमी हैं, हमारे पास हृदय है और जब ऐसा महान मानव भी उठा लिया जाय तो दुःख कैसे न हो। हमारी आँखें उनके दर्शनके लिए तरसती हैं, हमारे कान उनकी बोली सुननेको आकुल हैं। संसारपर दुःखका आलम छा गया है। इतिहासमें उनका वर्णन ईसाकी सलीबपर हत्यासे भी ज्यादा शानसे लिखा जायगा। गांधीजी जब प्रार्थनाके लिए जा रहे थे तभी उनकी हत्या की गयी, 'खुद घरको आग लग गयी घरके चिरागसे।'

गांधीजीका अपराध क्या था ? विद्रोह नहीं, कोई और जुर्म भी नहीं, सिर्फ यह कि वह प्रेमकी शिक्षा देते थे। उनकी दृष्टिमें जाति, सम्प्रदाय तथा वर्गकी बात नहीं आती थी। उनके दिलमें हिन्दू-मुसलमान भाई-भाई बन कर रहें, इसकी आग भड़क रही थी।

स्वतंत्र होते ही हिन्दमें साम्प्रदायिक संघर्ष शुरू हुआ। इसीसे महात्मा जी बेचैन हो गये। उन्होंने नोआखालीमें गाँव-गाँव पैदल यात्रा की, कलकत्तेमें शान्ति-स्थापनाके लिए प्राणोंकी बाजी लगायी। दिल्लीने उन्हें पुकारा और 'करूँगा या मरूँगा' के विचारके साथ वह यहाँ आ गये। पिछले महीने छः दिनका उन्होंने जो उपवास किया उससे उनकी आत्मिक शक्तिका परिचय मिला। शहरमें शान्ति

हो गयी। सौभाग्यसे व्रत तोड़ते वक्त मैं भी मौजूद था। जो कुछ सुना और देखा, जीवन भर याद रहेगा। और लोगोंके साथ मेरी राय भी उसे करनेकी न थी। पर वह गये और उनके साथकी लड़कियोंने फातिहा पढ़ा। उस दिनके बाद फिर मैंने गांधीजीको जिन्दा नहीं देखा। ३० जनवरीको वह शहीद हो गये।

अन्तिम बार मैंने उन्हें दुःखी देखा, दुःख अपने लिए नहीं बल्कि मानवताके लिए, जैसा गौतम बुद्धको था। अब हम सबके आचार-व्यवहारमें उनकी याद रहनी चाहिये, उनकी शिक्षाएँ सदैव हमारे सामने रहनी चाहिये।

ऐसा मालूम होता है कि व्रतके बाद उनकी आत्मिक शक्ति और बढ़ गयी थी। जो कुछ हो, इससे बढ़कर बलिदान और हो ही क्या सकता है? हमें उनके बताये मार्गपर चलकर उनकी पूजा करनी चाहिये।

❀

सर मारिस ग्वायर

[कुलपति : दिल्ली विश्वविद्यालय] तथा

श्री आर्थर मूर

[भूतपूर्व सम्पादक : 'स्टेट्समैन']

हम दो भारतप्रवासी अंग्रेज अपने सभी देशवासियोंकी ओरसे महात्माजीके निधनपर हिन्दवासियोंके प्रति, इस दुःखद हत्यापर, सहानुभूति प्रकट करते हैं। वह भारतमाताकी सेवा करते हुए शान्ति-स्थापनके उद्योगमें शहीद हुए।

श्री जे० सी० कुमारप्पा

[प्रसिद्ध गांधीवादी अर्थ-शास्त्री]

आम जबानमें कहा जाय तो ३० जनवरीको जब गांधीजी परम पिताकी गोदमें चले गये तो दुनियाँमें एक बड़ी दुःखद घटना हुई। जिसके भी यह नश्वर देह है उसे ढाढ़स बँधाना मुश्किल है और यह समझाना कठिन है कि दिखाई देनेवाली वस्तुओंसे अनदेखी वस्तुएँ अधिक सच्ची हैं। दो हजार वर्ष पूर्व एक ऐसी ही घटना घटनेके ठीक पहले कहे गये ईसामसीहके शब्द आज भी हमारे कानोंमें गूँज पड़ते हैं। ईसाको उसीके लोगोंकी एक जमातके लीडरने,

जो ईसाके द्वारा होनेवाली उनके रस्म-रिवाजोंकी निर्भीक आलोचना नहीं सहन कर सकते थे, षड़यंत्र द्वारा सूलीपर चढ़वा दिया। उस महात्माने सूलीपर चढ़नेके कुछ समय पूर्व जो शब्द कहे थे उनमें आज भी हमारे लिए खास तत्व मालूम पड़ता है।

समय और स्थानकी सारी सीमाएँ लाँघकर गांधीजीने नश्वर देह त्याग कर सर्वव्यापी चिदात्मामें प्रवेश पा लिया है। ईश्वर हममेंसे उनको, जो उन्हें सच्चे दिलसे चाहते थे, इतनी ताकत दे और उनपर ऐसा अनुग्रह रखे कि वे गांधीजीके जीवन और कार्योंसे प्रकाशित राहपर चल सकें।

अगर हम अपनी जिंदगी गांधीजीके आदर्शोंको पानेके लिए अर्पण कर दें तो जातीय भेद-भाव, आर्थिक लालच और ताकत हथियानेकी लालसासे विदीर्ण, संसारके संदेह और घृणासे भरे वातावरणमें शांति लानेके लिए बहुत-सा कठिन काम हमारे लिए पड़ा मिलेगा। लेकिन उनके लिए, जिनका सर्वशक्तिमानमें पूरा भरोसा है, कुछ भी नामुमकिन नहीं है। क्या हम आज अपने आँसू पोंछ कर, कमर कसकर, ईश्वर और मानवमें अटल विश्वास रखकर अपने कर्त्तव्यका सामना करेंगे और अपने नेताके द्वारा शुरू किये हुए कार्यको पूरा करेंगे?

❀

श्रीमती सुचिता कृपालानी

[सुप्रसिद्ध रचनात्मक कार्यकर्त्री]

हम सभीके लिए यह घोर लज्जाकी बात है कि गांधीजीकी हत्या एक भारतीय द्वारा की गयी। जिसने भी यह कुत्सित कृत्य किया हो, पर हम जानते हैं कि यह दुष्कार्य किसी एक व्यक्तिका नहीं है। इस षड्यन्त्रके पीछे 'कुछ' लोगोंका हाथ है। हम यह स्पष्ट कह देना चाहते हैं कि यदि वे लोग समझते हैं कि वे महात्माजीके लक्ष्यको नष्ट कर देंगे तो यह उनका कोरा भ्रम है।

महात्माजी सर्वश्रेष्ठ हिन्दू थे। हिन्दू धर्मके सच्चे सिद्धान्तोंका वह अनुसरण करते थे।

o o o

वह महान आत्मा, जिसने अपना सारा जीवन मानव मात्र प्रेमकी खोजमें बिताया और आजीवन उसकी सेवा की, वही आज मानवकी हिंसाका शिकार हो गयी।...आज जो अन्तिम शक्ति गांधीजी छोड़ गये हैं वह अविनाशी है।...सचमुच बापूकी उदार भावनाओंके बिना भारतके लिए न तो कोई भविष्य है और न तो संसारके लिए सुख और शान्ति। हम भारतीय, जो उन्हें बापू कहते

और अपना मार्ग-प्रदर्शक मानते थे, यह निश्चय करें कि हम अपने सारे कार्य-क्षेत्रमें उनके बताये हुए प्रेम और अहिंसाके मार्गपर चलेंगे।...हमने उस बूढ़े शरीरको, छाले पड़े हुए पैरोंसे, नोआखलीके कीचड़ भरे मार्गपर धूप और वर्षामें भी, दुःखी तथा पीड़ितोंके लिए, प्रम और सद्भावनाका सन्देश देनेके लिए चलते देखा।

वह मृत्युके द्वारा भी अपने प्राण-प्यारे देशको बल दे जाना चाहते थे। आज उनकी आत्मा शान्त है। पर इस शहीदका खून व्यर्थ न जायगा। हम लोग अनुताप-भरे हृदयसे नत-मस्तक हों किन्तु दृढ़ताके साथ जो महान कार्य उन्होंने शुरू किया था उसे पूरा करनेमें लग जायँ। हम वर्तमान घृणा और हिंसाको मिटाकर उनके प्रति सच्चे रहें और उनकी कल्पनाके अनुरूप भारतका निर्माण करें जिससे महात्माजीकी राखपर शान्ति और प्रेमका फूल खिल उठे।

❀

सुश्री मीरा बेन

[गांधीजीकी सुविख्यात शिष्या]

मेरे लिए अबतक ईश्वर और बापू दो आराध्य थे। किंतु अब दोनों मिलकर एक हो गये हैं। इस मर्मान्तक घटनाको सुनते ही मेरे अन्तस्तलके कपाट खुल गये और वहाँ बापूकी आत्माने प्रवेश किया। उस क्षणसे मैं एक शाश्वत परमानन्दका अनुभव कर रही हूँ।

यद्यपि बापूका स्थूल शरीर वर्तमान नहीं है, तथापि उनकी पवित्र आत्मा हमारे बिलकुल सन्निकट है। एक समय बापूने कहा था—"जब इस स्थूल शरीरका नाश हो जायगा, तब मैं तुम्हारे अति निकट होकर रहूँगा; अभी तो हमारे आत्मिक मिलनमें हमारा शरीर बाधक है।" मैंने अगाध विश्वास और अटूट श्रद्धाके साथ उनका कथन सुना था, और अब उन अमर शब्दोंकी सत्यता अनुभव द्वारा स्पष्ट देख रही हूँ।

दिसम्बर मासकी एक संध्याको दिल्लीसे ऋषीकेश जानेके पहले, मैंने उनसे पूछा—'क्या आप मार्च मासमें गोशालाका उद्घाटन कर दुःखित भारतीय गायोंको अपना आशीर्वाद देंगे?' बापूने उत्तर दिया था—"मेरे आनेकी प्रतीक्षा न करना।" फिर क्षण भर बाद अपने आप कहने लगे—"शवपर आशा लगानेसे कोई लाभ नहीं।" उन भयानक शब्दोंका जिक्र मैंने किसीसे नहीं किया। मन ही मन भगवानसे सतत प्रार्थना करती रही। जब उपवास समाप्त हो गया तब मैंने अनुमान किया कि उन सांघातिक शब्दोंका संकेत, अनशन, समाप्त हो गया। किंतु मेरा अनुमान गलत निकला और मैं उन संकेतोंकी कठोर सत्यता अब अनुभव कर रही हूँ।

डाक्टर सुशीला नायर

[गांधीजीकी अनन्य भक्त]

बापूके निधनपर कुछ कहनेकी मेरी हिम्मत नहीं पड़ती थी। क्या कहूँ? कैसे कहूँ? उनकी छत्र-छायामें बड़ी हुई। पूर्व-जन्मके पुण्योंके कारण उनके निकट रहकर उनसे कुछ सीखनेका, उनकी थोड़ी-बहुत सेवा करनेका अमूल्य अवसर मिला। इतने अधिक निकट रहनेके कारण, क्या कहना चाहिये और कहाँसे शुरू करना चाहिये, यह समझमें नहीं आ रहा है।

बापू बहुत बड़े संत थे, अहिंसात्मक राजनीतिके क्षेत्रमें अद्वितीय नेता थे। पर सबसे बड़ी उनकी महत्ता यही थी कि वह सच्चे अर्थमें सच्चे बापू थे, पिता थे, मनुष्य थे। सबकी भावनाएँ समझते थे, सबकी कदर करते थे। वह सबके सच्चे मित्र थे।

बापूके पास अनेक तरहके प्रश्न आते थे। छोटी-सी छोटी बातको वह ध्यानसे सुनते थे और उनके विषयमें अपनी राय देते थे। उनके समान व्यस्त व्यक्तिको आश्रम और बाहरके छोटेसे छोटे प्रश्नको सुनने और समझनेका समय कहाँसे आता था, यह बड़े ही आश्चर्यकी बात है! किसी भी बातको पूरे ब्यौरेके साथ सुनकर समझने और उसपर विचार करनेकी क्षमता रखनेके अर्थमें वह सच्चे मनीषी थे, उनकी दृष्टिमें छोटी-बड़ी सभी बातें समान महत्व रखती थीं। वह अपनी बातोंको, अपने पत्रोंको, साथ रहनेवाले साधारण व्यक्तियों तकको सुनाते और उनपर उनकी राय पूछा करते थे।

स्त्रियोंके तो वह विशेष त्राणकर्त्ता थे। उन्हें शक्ति और शान्तिका पूरक मानते थे। बापू उन्हें मातृत्वकी मूर्त्ति समझते थे। अपनेको भी वह 'आधी स्त्री' कहा करते थे।

पर हम उस अवतारी पुरुषके योग्य नहीं रहे। हमने उनके संदेशोंको पूरा नहीं किया। उनके उपदेशोंपर चलकर हमें हिंसा और विरोधका परित्याग कर सत्य, सेवा, शान्ति, प्रेम तथा अहिंसाके पथपर चलना चाहिये। उनका स्मारक ईंट, पत्थरोंसे नहीं, उनके उपदेशोंपर चलकर ही निर्माण किया जा सकता है।

हमारी प्रार्थना है कि बापूकी अमर और दिव्य आत्मा हमें ऐसा बल दे जिससे हम उनके मार्गपर चलकर उनका निर्दिष्ट काम पूरा कर सकें।

० ० ०

कहते हैं, समुद्र-मंथनमेंसे अमृत निकला। हीरे-जवाहरात निकले और हलाहल जहर निकला। जहर इतना घातक था कि सारे जगतका नाश कर सकता था। उसे क्या किया जाय? सब इस बारेमें चिंतित थे। शिवजी आगे बढ़े और उन्होंने यह जहर पी लिया। हिंदुस्तानके समुद्र-मंथनमेंसे आजादीका अमृत निकला। साथ ही, आपसकी मारकाटका, दुश्मनीका, वैरका, हिंसाका जहर भी निकला। गांधीजीने इसके सामने अपनी आवाज बुलन्द की। लोग अपनी मूर्छासे चौंके; लेकिन जागे नहीं। पाकिस्तानके लोगोंके कानोंमें भी वह आवाज पहुँची। बापूकी आवाज अकेली गगनमें गूँज रही थी;—'इस आगको बुझाओ नहीं तो दोनों इस आगमें भस्म हो जाओगे।' उनका हृदय दिन-रात पुकारता था;—'हे ईश्वर, इस ज्वालाको शांत कर, नहीं तो मुझे इसमें भस्म होने दे। मैं इसका साक्षी नहीं बनना चाहता।'

जो बापू अनेक उपवासोंमेंसे, अनेक हमलोंसे बच निकले थे, वे अपने ही एक गुमराह पुत्रकी गोलीसे न बच सके। पुत्रके हाथसे हलाहलका प्याला लेकर वे पी गये ताकि हिंदुस्तान जिंदा रह सके। किसीने कहा—जगतने दूसरी बार ईसाका सूलीपर चढ़ना देखा है!

मुझे जब यह खबर मिली, तब मैं मुलतानमें थी। बहावलपुरियोंकी बापूको इतनी चिंता थी कि उन्होंने मुझे लेसली क्रास साहबके साथ बहावलपुर भेजा था। वहाँ डिप्टी कमिश्नरकी पत्नीने बहुत प्यारसे पूछा—'गांधीजी अब कैसे हैं? हमारे पास कब आवेंगे? मैंने कहा—'जब आपकी हुकूमत चाहेगी।'

हर जगह गरीब-अमीर मुसलमान प्यारसे गांधीजीकी तबीअतके बारेमें पूछते थे। उनके सवाल होते—'उपवासके बाद गांधीजीको ताकत आयी या नहीं? वह क्या खाते हैं?' वगैरह। उनकी मुहब्बत जाहिर थी। गांधीजी उनके दोस्त हैं, इस बारेमें उन्हें शक नहीं था। जिन्हें इस्लामका पहले नंबरका दुश्मन मुसलिम अखबारोंने कहा था, उनके बारेमें पाकिस्तानमें यह भाव देखकर मुझे खुशी हुई। मैंने हर्षसे सोचा कि बापूको यह सब सुनाऊँगी, तो उन्हें कितना अच्छा लगेगा?

और, शामको ६ बजेके करीब डिप्टी कमिश्नर साहबकी पत्नी हाँफती-हाँफती आयी और बोलीं—'दुनिया किधर जा रही है? गांधीजीको गोलीसे मार दिया!' सुनते ही मेरे हाथ-पाँव ठंढे पड़ गये। मैं सुन्न बैठ गयी। किसी दूसरेने कहा—'नहीं-नहीं, यह तो अफवाह है। हम दिल्लीको फोन करके पक्की खबर निकालेंगे। घबराइये नहीं।' मैंने कहा—'नहीं, मुझे अभी लाहौर जाना है। कोई गाड़ी दिलाइये। सच्ची खबर हो या झूठी, मैं जल्दीसे जल्दी दिल्ली पहुँचना चाहती हूं।'

डिप्टी कमिश्नरने अपनी मोटर दी। सूनसान सड़कपर मोटर पूरी रफ्तारसे चली जा रही थी। आकाशमें चाँद निकल आया था। चारों तरफ शांतिका साम्राज्य था। हृदयसे बराबर आवाज निकलती थी—'नहीं, बापू जीवित हैं।' बुद्धि कहती थी चार गोलियाँ चलीं, यह बात बनावटी नहीं हो सकती। मगर मनुष्यको निराशामें भी आशाको पकड़े रखनेकी आदत है। मैंने मनको समझा दिया—चार गोलियाँ चलीं, मगर क्या जाने, लगीं या न लगीं? शायद बापू घायल हों भी, मगर वे जीवित हैं। हृदय कहता है, वे मरे नहीं।

सुबह ३ बजे हमारी मोटर लाहौर पहुंची। किसीसे कुछ भी पूछनेकी हिम्मत न हुई। डर था, कोई कह न दे कि जो अफवाह सुनी थी, वह सच है। आखिर एक दोस्तने आकर मेरी कल्पनाका महल ढा दिया। वे आँसू बहाकर सहानुभूति बताने लगे। उनको क्या कल्पना थी कि उनकी सांत्वनाके शब्द मुझे कितनी गहरी चोट पहुंचा रहे थे। इतनेमें रेडियोपर पंडितजीकी दुःखभरी आवाज सुनी और मेरी रही-सही आशा टूट गयी। विश्वास हो गया कि बापू नहीं रहे। अभीतक जो आँसू दबे हुए थे, वे थामे न थमे। हम अनाथ बन गये!

हवाई अड्डेपर विमानके इंतजारमें क्षण-क्षण सदियों जैसा लगने लगा। वहाँ हिंदू-मुसलमान सब गमगीन थे। वहाँके अफसरोंने मेरे सुविधेका ज्यादासे ज्यादा ख्याल रखा। उन्होंने कहा—'हम खुशीसे पेशावरसे स्पेशल हवाई जहाज बुला लेते। लेकिन उससे आपके वक्तमें कोई खास बचत नहीं होगी।' लेकिन जब हवाई जहाज आ गया तो उन्होंने १० मिनटमें उसे रवाना कर दिया। पायलाट भी खूब तेजीसे लाया। हम ११। के करीब दिल्लीके वेलिंग्डन हवाई अड्डेपर पहुँच गये। मियाँ इफ्तेखारुद्दीन भी हमारे साथ आये थे। वह और मैं तुरन्त मोटरमें बैठकर बिड़ला-भवनकी तरफ चले। क्रॉस साहब सामानके लिए ठहरे। डबडबाई आँखोंसे मोटरमें मियाँ साहबने कहा—'बापूका खून हम सबके सिरपर है। हम सबके हाथ खूनसे रँगे हुए हैं।' मुझे कई ऐसी चर्चाओंका ख्याल आया, जिसमें भले लोगोंने बापूकी टीका की कि वह मुसलमानोंका पक्षपात करते हैं। अच्छे-अच्छे लोग कभी-कभी सोचते थे—'कहां तक मार खाते जायँ?' बापूका बराबर यह कहना कि बुराईका बदला भलाईसे दो, उनके गले नहीं उतरता था। मैंने सोचा, हममेंसे सबको कभी-न-कभी पाकिस्तानकी ज्यादतियोंपर गुस्सा आया था। मनमें ख़याल आया था कि लातोंके भूत बातोंसे नहीं मानते। ये सब विचार बापूका खून करनेवाले थे। इसलिए बापूका खून हम सबके सिरपर था। खूनी इससे भी आगे गया। जो इन्सान ईंटका जवाब पत्थरसे देनेसे रोक रहा था, उसे उसने हटा दिया। क्या बापूके चले जानेके बाद हिन्दू-मुसलमानोंकी आँखें खुलेंगी? बापूकी बात हम मानेंगे?

गाड़ी बिड़ला-भवनके पिछले दरवाजेसे दाखिल हुई। उधर भी बहुत भीड़ थी। दूरसे एक ऊँचा फूलका ढेर दिखा। मैं भीड़को पूरे जोरसे चीरती हुई हाँफती-हाँफती वहाँ पहुँची, जहाँ पालकी रवाना होनेके लिए तैयार थी। वहाँ सरदार अपने दिवंगत स्वामीके पाँवोंके पास उदास और गंभीर बैठे थे। उन्होंने मुझे ऊपर चढ़ाया। फूलोंमेंसे बापूका चेहरा ही दीखता था। हमेशाकी तरह मैंने अपना सिर उनकी छातीपर रख दिया। बिना सोचे अंदरसे भावना उठी, अभी बापू एक प्यारकी चपत लगा देंगे, पीठपर जोरकी एक थपकी लगा देंगे। मगर मुझे तो उनकी आखिरी थपकी बहावलपुर जाते समय ही मिली थी।

सिरके पास मनु और आभा खड़ी थीं। सुशीला बहन! सुशीला!—पुकार कर वे फूट-फूटकर रोने लगीं। आँसुओंमेंसे मैंने देखा, बापूका चेहरा पीला था; पर हमेशाकी तरह शांत था। वह गहरी नींदमें सोये दीखते थे। अपने आप मेरा हाथ उनके माथेपर चला गया। उनके चेहरेको मैंने छुआ। वह अभी भी मुझे गरम लगा, जीवित लगा। मेरा सिर फिरसे उनके चेहरेपर झुक गया। माथा उनके गालको जा लगा। किसीने पुकारा—अब सब नीचे उतरो।

नीचे सरकी ओर जवाहरलालजी खड़े थे। दुःख और गमकी गहरी रेखाएँ उनके चेहरेपर थीं। मुँह सूखा हुआ था। उन्होंने प्यारसे हम तीनोंको नीचे उतारा। पुराने जमानेमें महादेव भाई, देवदास भाई, और प्यारेलालजी तीनों बापूके साथ हुआ करते थे—त्रिमूर्ति कहलाते थे। इसी तरह कुछ महीनोंसे आभा, मनु और मैं बापूके साथ त्रिमूर्ति-सी बन गयी थी। उन तीनोंमें महादेव भाई बड़े थे, इन तीनोंमें मैं। दोनों मुझसे लिपट गयीं। एक-दूसरीको सहारा देते हुए हम आगे बढ़ीं। बापू चाहेंगे राम-धुन चले, सो राम-धुन शुरू की। लेकिन बहुत चल न सकी। मणि बहन बार-बार ध्यान दिलाती थीं कि रोना नहीं चाहिये। सिक्ख भाइयोंने गुरु ग्रंथसाहबके शब्द बोलने शुरू किये। हम सब उनके पीछे राम-नाम बोलने लगे।

कुछ देर बाद हम लोग बापूकी गाड़ीके पास आ गये। उस गाड़ीके स्पर्शमें बापूका स्पर्श था। दोनों तरफ लाखों आदमी खड़े थे। हर दरख्तकी हर टहनीपर लोग बैठे थे। महात्मा गांधीजीकी जयके नादसे गगन गूँज रहा था। जैसे जीवनमें वैसे मृत्युमें, निंदा और स्तुतिसे अलिप्त, बापू सो रहे थे। जीवनमें हम लोगोंको चुप कराते थे। जयनादसे भी उनके कानोंको तकलीफ पहुँचती थी। वह अपने कान उँगलियोंसे बंद कर लिया करते थे। कान बंद करनेको हमें साथ रूई रखनी होती थी। मगर आज उसकी जरूरत न थी। किसीको चुप करानेकी जरूरत न थी। सबकी आँखें गीली थीं। मनमें आया, क्या अपनी भावनाएँ हम आँसू बहाकर धो डालेंगे? क्या जयघोष करके ही बैठ जायेंगे? क्या ये भावनाएँ कार्यरूपमें भी परिणत होंगी?

शामको जुलूस जमुनाजीके किनारे पहुँचा। ईंटोंके एक छोटे-से चबूतरे-पर लकड़ियाँ रखी थीं। जिस तख्तेपर बापू बैठा करते थे उसीपर उनका शव था। उसे लाकर लकड़ियोंपर रखा गया। ब्राह्मणने कुछ मंत्र पढ़े। हम लोगोंने छोटी-सी प्रार्थना की। देवदास भाईने बापूके पाँवपर सिर रखकर प्रणाम किया। हृदयसे एक ही पुकार निकल रही थी—'बापू, मेरे अपराध क्षमा करना। मेरी भूलचूक, त्रुटियाँ क्षमा करना। जीवनमें कितनी बार आपको सताया. आपको मानवी पिता मानकर आपसे झगड़ा। आपके साथ दलीलें कीं। बापू, क्षमा करना! क्षमा करना!! क्षमा करना!!!'

मैं चितासे दूर हटकर बैठ गई। मैं ज्यादा देख न सकी। मनमें गीताके ये श्लोक दोहराती रही:

सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं हे कृष्ण हे यादव हे सखेति।
अजानता महिमानं तवेदं मया प्रमादात् प्रणयेन वापि॥ १॥
यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि विहारशय्यासनभोजनेषु।
एकोऽथवाप्यच्युत तत्समक्षं तत् क्षामये त्वामहमप्रमेयम्॥ २॥
पिताऽसि लोकस्य चराचरस्य त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान्।
न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभावः॥ ३॥
तस्मात् प्रणम्य प्रणिधाय कायं प्रसादये त्वामहमीशमीड्यम्।
पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः प्रियः प्रियायार्हसि देव सोढुम्॥ ४॥

बापू, आपने जो अगाध प्रेम मुझपर बरसाया, जो अगाध विश्वास जताया, हमारी भूलें क्षमा कीं, तुच्छ, अज्ञान, मतिहीनको अपनाया, सिखाया, अपनी बेटी बनाया, उसके लायक बनाया। एक बार बापूने महादेव भाईसे बातें करते हुए कहा था—'सुशीलाने सबसे आखिरमें मेरे जीवनमें प्रवेश किया, मगर वह सबसे निकट आयी, मुझमें समा गयी है।' हे प्रभु, उसी समय तूने मुझे क्यों न उठा लिया। उसके बाद सुशीला उनसे दूर चली गयी। बापूकी बातपर उसके मनमें शंका आने लगी मगर बापूने धीरजसे उसकी शंकाओंका निवारण करनेका प्रयत्न किया। उसे अपनेसे दूर न जाने दिया। एक बार कहने लगे—'तूने Hound Of Heaven की कविता पढ़ी है? तू मुझसे भाग कैसे सकती है? मैं भागने दूँ तब न?' इस नालायक बेटीके प्रति इतना प्रेम! हे प्रभु, जो योग्यता उनके जीवन-कालमें मुझमें न थी, वह उनके जानेके बाद दोगे?

शवपर चंदनकी लकड़ियाँ रखने लगे। सुगंधित सामग्री डालने लगे। मैं जाकर सरदार काकाके पास बैठ गयी। घुटनोंमें सिर रख लिया और देख न सकी। सारा जगत चक्कर खा रहा-सा लगता था। भीड़का जोरसे धक्का आया। मनु, आभा, मैं और मणि बहन पास-पास बैठी थीं। सरदारने हमें साथ लेकर उस भीड़मेंसे निकालनेकी कोशिश की। धक्केपर धक्का आता था। हम गिरते-पड़ते मुश्किलसे बाहर निकले। एक मिलिटरी ट्रकमें बैठे। सरदार काका और सरदार

बलदेव सिंहजी साथ थे। ट्रक चली। आभाने मेरा हाथ खींचा। दूरसे चिताकी ज्वालाकी लपटें आकाशको जा रही थीं। हृदय पुकार उठा—हे प्रभो! इस अग्निमें हमारे दोष, हमारी कमजोरियाँ भस्म हो जायँ, ताकि हम बापूके बताये मार्गपर दृढ़तासे आगे बढ़ सकें। जिस अग्निको शांत करनेमें उनके प्राण गये, वह इस अग्निके साथ शांत हो।' रातको बिड़ला-भवनमें जिस गद्दीपर बैठकर बापू काम किया करते थे, उसपर रखी बापूकी फोटोके सामने बैठे मनमें विचार आने लगा—कल सारी रात मोटरमें बैठे हृदयसे जो ध्वनि निकल रही थी: 'बापू जीवित हैं, वह क्या गलत थी? वह ध्वनि इतनी स्पष्ट थी, मगर क्या सब कल्पनाका ही खेल था? उत्तर मिला—नहीं, बापू जीवित हैं, सचमुच जीवित हैं। तुम्हारे एक-एक विचारको एक-एक आचारको देख रहे हैं।

दूसरे दिन क्रास साहब अँगरेजी कविताकी कुछ लाइनें लिखकर दे गये। उनमें आखरी लाइनोंका भाव कुछ ऐसा था:

"याद रखो, अब उनके हथियार सिर्फ तुम्हारे हाथ और पाँव हैं। वे देखते हैं। सँभालना किस चीजको छूते हो, कहाँपर कदम रखते हो।'

एक दफा बापूसे किसीने कहा था—'आपके अनुयायियों, रचनात्मक कार्य करनेवालोंमें कुछ बेबसी-सी पायी जाती है। उनमें वह तेज नहीं, जिससे वह आपका संदेश घर-घर, गाँव-गाँव, देश-भरमें पहुँचावें।' बापू गंभीर हो गये। कहने लगे—'हाँ, आज वे बेबस-से लगते हैं। मेरे जीवनमें दूसरा हो नहीं सकता। उन सबका व्यक्तित्व मेरे व्यक्तित्वके नीचे दबा हुआ है। वे बात-बातमें मुझे पूछते हैं। मगर मेरे बाद, मैं आशा करता हूं, उनमें वह तेज और शक्ति अपने आप आयगी। अगर मेरे संदेशमें कुछ है, तो वह मेरे जानेके बाद मर नहीं जायगा।' हम लोगोंसे एक बार कहने लगे कि वे हमसे क्या-क्या आशाएँ रखते हैं। आगा खाँ महलमें उपवासकी बातें चल रही थीं। वह न रहें, तो हमारा क्या धर्म होगा, हमें क्या करना होगा, वह हमें समझा रहे थे। हमसे वह चर्चा सहन नहीं हुई। मैं बोल उठी—'नहीं बापू, यह सब न सुनाइये। हमारी तो यही प्रार्थना है कि आपके देखते-देखते महादेव भाईकी तरह हमें भी ईश्वर उठा ले। आपके बाद कुछ भी करनेकी हमारी शक्ति नहीं।' बापू और गंभीर हो गये। बोले—'महादेवकी तरह तुम सब मुझे छोड़ते जाओगे, तो मैं कहा जाऊँगा? ऐसी बातें सोचना तुम्हें शोभा नहीं देता। और तुम लोगोंमें आज शक्ति नहीं, मगर ईसाकी मृत्युके समय उनके शिष्योंमें शक्ति थी क्या? दृढ़ विश्वाससे, सच्चे हृदयसे जो ईश्वर-परायण होकर कार्य करता है, ईश्वर उसे शक्ति अपने आप दे देता है। जो अपने आपको शून्यवत् करके सत्यकी आराधना करता है, उसका मार्गदर्शन प्रभु अपने-आप करता है।' क्या हम अपने आपको शून्यवत् कर सकेंगे?

२ फरवरीको रामलीला मैदानमें बापूको श्रद्धांजलि अर्पित करनेके लिए दिल्लीके नागरिकोंकी शोक-सभा हुई। विशाल जन-समूहके सम्मुख सरदार वल्लभभाई-पटेल भाषण कर रहे हैं। पासमें नेहरूजी भी बैठे हैं।

यमुना तटपर बापूकी चिता प्रज्वलित हुई, किन्तु गंगाका सौभाग्य कहिये या त्रिवेणीका कि उसे बापूकी पवित्र राखसे परम पुनीत होनेका गर्व और गौरव मिला। एक विशेष ट्रेन द्वारा बापूकी अस्थि दिल्लीसे प्रयाग लायी गयी और यह पुष्पहारोंसे सुसज्ज वह पुनीत ताम्र-घट है, जिसमे बापूकी अस्थियाँ रखी गयीं।

श्री के० सन्तानम्

[प्रसिद्ध लेखक और राजनीतिज्ञ]

महान पुरुषोंके बारेमें प्रसिद्ध है कि उनका व्यक्तित्व उनके संदेशोंसे कहीं महान होता है। गांधीजीके बारेमें यह उक्ति कहीं अधिक सत्य है। इस समय हम निश्चय ही उनके संदेशोंसे अधिक उनके व्यक्तित्वसे प्रभावित हैं। उनके उज्ज्वल चरित, अजेय संकल्प, अद्वितीय साहस, अपने आदर्शोंके प्रति अगाध श्रद्धा, उसूलोंके मामलेमें निर्दयतापूर्ण सख्ती और कमजोर मानवके प्रति अनंत करुणा तथा सर्वोपरि अपने शरीर, मस्तिष्क और भावनाओंपर प्रेम, अनिश्चय और भयसे प्रभावित हुए बिना अद्वितीय प्रभुत्वका कौन अन्दाजा लगा सकता है? उनके भौतिक अस्तित्वके अभावने उनकी महती कार्य-विशालता हमारे सामने और भी स्पष्ट रूपमें ला खड़ी कर दी है, ठीक वैसे ही जसे दूर खड़े होकर देखनेपर गिरिश्रृंगकी विशालता अपने दानवाकारमें दृष्टिमान हो उठती है।

फिर भी हम यह न भूलें कि पैगम्बरोंका व्यक्तित्व केवल एक विस्फोटक द्रव्य है जो उनके सन्देशोंको समय और स्थानके क्षेत्रमें फैलनेके लिए गति प्रदान करता है; ठीक उसी तरह जैसे किसी तारेकी भीषण उष्णता उसकी हल्की किरण-मालिकाओंको ब्रह्मांड भरमें फैलानेमें सहायक होती है।

गांधीजीके संदेशोंका सही विश्लेषण करना सरल नहीं है। गांधीजी हमेशा अपने आदर्शोंको निश्चित सैद्धान्तिक रूप देनेके खिलाफ थे। उनका कहना था कि मेरे जीवनके प्रत्येक कार्यको सत्यकी शोधमें, जिसका मैं हामी हूँ, एक नया कदम समझना चाहिये। गांधीजी बड़े प्रेमसे कहा करते थे कि मैं उपनिषदोंके ऋषियों, बुद्ध, शंकराचार्य, ईसा और टालस्टाय आदि विश्वके महान गुरुओंके उपदेशोंको समझने और उनपर अमल करनेका प्रयत्न करता हूँ। बहुत दूरतक उनका कहना ठीक था। फिर भी इसमें कोई संदेह नहीं है कि धर्म और नैतिकताके क्षेत्रमें उनकी अपनी देन ठीक वैसी ही विशिष्ट और अद्वितीय है जैसी शंकराचार्यकी देन भारतीयदर्शनको है, यद्यपि उसके मूल उपनिषदोंमें हैं।

गांधीजीकी मुख्य शिक्षाओंको तीन शीर्षकोंमें विभाजित किया जा सकता है—सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह।

'सत्य' शब्दमात्रसे ही गांधीजी हर्षोन्मादसे झूम जाते थे। सत्यके प्रति उनका प्रेम वैसा ही था जैसा अपनी प्रेमिकाके प्रति किसी पवित्र प्रेमीका प्रेम हो। उनके सत्यको हम यदि अपने सत्यादर्शोंके समान मान कर अथवा विज्ञानमें जिस प्रकार

सत्यकी परिभाषा की गयी है, वैसा मानकर चलें तो उन्होंने जो लिखा है उसका बहुलांश हमारे लिए दुरभिगम्य हो जायगा। उनका सत्य एक ज्वलंत धारणा है। साधारणतया वह सत्यका आधारभूत अर्थ उस नैतिक निर्णयमें लगाते थे जो किसी व्यक्तिको उसका अनुसरण करनेके लिए बाध्य करता है। इस निर्णयका रूप और इसका मूल्य प्रत्येक व्यक्तिके आत्मिक विकास और उसके जीवन तथा विचारोंकी शुद्धताके अनुरूप भिन्न होता है।

अतः स्वर्णकी ही भाँति सत्य भी कभी नितांत शुद्ध या पूर्ण नहीं होता। गांधीजी ईश्वरकी तुलना पूर्ण सत्यसे किया करते थे। प्रत्येक सत्यार्थीका यह कर्तव्य है कि वह प्रत्येक अवसरपर उस सत्यके प्रकाशमें कार्य करे जो उसे उस क्षण दिखायी पड़ता है और साथ ही, अधिक शुद्ध तथा अधिक पूर्ण सत्यकी खोजमें लगा रहे। अतः आज जो सत्य मालूम पड़ता है कल वही गलत प्रतीत हो सकता है। परंतु इससे आजकी सत्य-धारणाके अनुसार किये हुए कार्यके औचित्यपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। जिसे हम सत्यकी पूर्णता कहकर पुकार सकते हैं वही गांधीजीकी शिक्षाका सार है और वही उनके लेखोंमें प्रकट रूपसे पहेली या अनर्गल लगनेवाली बातोंकी कुंजी है।

गांधीजीकी अहिंसा भी सत्यकी ही भाँति ज्वलंत है। शारीरिक हिंसासे अलग रहना केवल छोटे दर्जेकी अहिंसा है जिसपर बहुत बड़ी संख्यामें मनुष्योंके साथ व्यवहार करते समय संतोष करना होगा। परन्तु जबतक वह उत्तरोत्तर मस्तिष्क और भावनाओंमें व्याप्त होकर पहले उन्हें समस्त स्वार्थ-प्रियता, क्रोध और घृणासे मुक्त करके अंतमें उन्हें सबसे खराब विरोधीके प्रति भी सक्रिय प्रेम और सदिच्छासे न भर दे, अहिंसा नहीं रहती। गांधीजीके इस विचारमें साधारण-जनकी नितांत शारीरिक और रूढ़ीवादी अहिंसासे लेकर बुद्ध या महावीरकी उच्चतम अहिंसाके लिए स्थान है।

गांधीजीके सत्याग्रहके आदर्शोंको उनकी शिक्षाओंका केन्द्र समझना चाहिये। मुझे विश्वास है कि उनका यह संदेश अपूर्वतम है। सत्य और अहिंसा उसके आधार हैं और यह कहा जा सकता है कि जो सत्य या अहिंसा नहीं है वह सत्याग्रह नहीं है। गांधीजीने बताया कि वह इस शब्दको एक ओर 'निष्क्रिय प्रतिरोध' तथा दूसरी ओर ईसाइयोंके 'अप्रतिरोध' से किस प्रकार अलग करते हैं। विशिष्ट और दैवी शक्ति प्राप्त व्यक्ति ब्रह्मको पहचान कर अथवा पूर्ण रूपसे ईश्वरकी भक्ति द्वारा मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं। परंतु साधारण मनुष्यका सांसारिक जीवन लाभप्रद श्रम और निरंतर संघर्षका जीवन होता है। स्वभावतः श्रीमद्भगवद्गीता उनका मुख्य प्रेरणा-स्रोत थी; परन्तु गांधीजी गीताकी भी अपने सत्यकी दृष्टिसे व्याख्या करनेमें नहीं चूकते थे। सत्य, अहिंसा और स्वेच्छापूर्वक

कष्ट स्वीकार करना सत्याग्रहके आधारभूत तत्त्व हैं। तभी तो सत्याग्रहका मूल्य सत्यकी शुद्धता, अहिंसाकी गहराई और कष्ट-सहनकी स्वीकृतिके परिणामपर अवलम्बित है।

गांधीजीके अनुसार सत्याग्रह सत्य और पूर्णताके लिए उन्मुख प्रत्येक व्यक्तिके जीवनका नियम है। उन्होंने हमें बताया है कि प्रत्येक समाजका भी वस्तुतः जो सभ्य बननेकी इच्छा रखता है, नियम सत्याग्रह ही है। दूसरे पैगम्बरोंकी भाँति गांधीजी भी अपने विश्वासोंका तत्काल ही कार्यरूपमें परिवर्तन देखना चाहते थे और उनकी ये अपेक्षाएँ न केवल उनके निकट संपर्कमें आनेवाले अनेक अनुयायियोंसे ही थी बल्कि अपने सभी देशवासियों और विश्वसे थी।

उनके स्फूर्तिदायक नेतृत्वमें प्रायः मामूली मिट्टी भी स्वर्ण बन गयी है। परंतु समाजके परिवर्तनकी गति अत्यंत मन्द हुआ करती है। इसमें कितने वर्ष और सदियाँ लगेंगी कि पर्याप्त संख्यामें लोग पूर्णरूपसे गांधीजीके आदर्शों-सत्य, अहिंसा और सत्याग्रहको स्वीकार कर लें और विश्व उनके आदर्शोंपर चलने लगे। अब जब बापू हमारे मध्य नहीं रहे, समय उनके पक्षमें है।

लाला शंकरलाल

[दिल्लीके प्रसिद्ध उद्योगपति]

राष्ट्रपिताकी पूर्व-आयोजित इस हृदयद्रावक हत्याका समाचार सुनकर मैं स्तब्ध रह गया। हिन्दू-मुसलमानोंकी एकताकी वेदीपर वह बलि हो गये। ऐसे व्यक्ति कभी मरते नहीं। मुझे पूर्ण विश्वास है उनका आदर्श चरित और उनकी शिक्षाएँ युग-युगतक समस्त मानव जातिको उत्प्रेरणा देती रहेंगी। उनका निधन बड़ा ही दुःखद और आकस्मिक रहा। इस शोकको सहन करनेकी भगवान् हमें शक्ति दे, यही प्रार्थना है।

श्री घनश्यामदास बिड़ला

[प्रसिद्ध उद्योगपति]

महात्माजीको मैंने संतके रूपमें देखा, राष्ट्रीय नेताके रूपमें देखा। मेरा विचार है कि अधिकतर लोग उन्हें संत या नेताके रूपमें जानते हैं। मैं न तो उनका राजनीतिक अनुगामी रहा और न उनके पीछे साधु बना। उनके जिस रूपने मुझे मोहित किया वह था उनका मानव-स्वरूप। नेता और संतके रूपमें गांधीजीका

परिचय तो बहुत लोगोंको है, पर मनुष्यके रूपमें उन्हें बहुत कम लोग जानते हैं। मानवके रूपमें वे सचमुच अद्भुत पुरुष थे।

उनके संपर्कमें आनेपर उनका मित्र हो जाना एक अत्यंत साधारण बात थी। दूसरी गोलमेज कांफ्रेंसके अवसरपर उनके सम्पर्कमें आते ही सर सेमुअल होर, जो उनके कट्टर विरोधी थे, घनिष्ठ मित्र हो गये। वह साहसी थे, निर्भय थे और तत्काल निर्णय करनेमें उनकी अलौकिक प्रतिभा थी। उनमें गुण अनेक थे जिनका वर्णन करना अत्यन्त कठिन है। पर इन सबके अतिरिक्त उनकी मानवीय सहृदयता थी जिसने उन्हें विशाल जनसमूहका प्रियपात्र बनाया। इतिहासमें कदाचित् ही कोई एक व्यक्ति एक साथ ही योद्धा, देवदूत, और सन्त होनेके साथ-साथ इतना नम्र और मानवतासे संपन्न रहा हो। यही उत्कृष्ट मानवता उनके पुण्य-चरितकी सबसे महती विशेषता थी।

आज सचमुच ही ज्योति बुझ गयी। एक शक्तिशाली वीर उठ गया और एक महती आत्मा मौन हो गयी।

※

डा० शौकतुल्ला अन्सारी

[सुप्रसिद्ध कांग्रेसी कार्यकर्ता]

सेवासे बढ़कर कोई दूसरा धर्म नहीं है, मानवतासे बढ़कर देवत्व नहीं। बापू मानवता और सेवाके मूर्त्तिमान प्रतीक थे। देवत्वके विरुद्ध दानवता ही हाथ उठा सकती है। भगवान् हमें शक्ति दे जिससे हम दानवतासे लड़ सकें और अपनी पावन मातृभूमिसे उसका उन्मूलन कर सकें।

※

श्री देशबन्धु गुप्त

[प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता]

बापू अब नहीं रहे, बापूका निर्वाण हो गया, बापू सदाके लिए सो गये—चारों ओरसे यही पुकार सुनकर भी हृदय विश्वास नहीं करता। यही लगता है कि कान धोखा दे रहे हैं। मन नहीं मानता कि आँखें बापूके सदा हँसते हुए चेहरेको अब नहीं देख सकेंगी। सब कुछ होगा, संसारका चक्र यथापूर्व चलता रहेगा, आसमानपर सूर्य और चाँद चमकते रहेंगे, किंतु हमारी आँखें अपने प्यारे बापूके दर्शन नहीं कर सकेंगी।

उनके पवित्र देहसे गिरी हुई रक्तकी दो बूँदें आज दिल्लीकी ही नहीं, समस्त पृथ्वीकी अनमोल निधि बन गयी हैं। मैं इसे खून नहीं कहूँगा। यह तो

वह सिंदूर है जिससे बापूने स्वयं भारतमाँका अभिषेक किया है। माताके मस्तकपर अपने रक्तका सौभाग्य-तिलक लगाकर बापूने उस सौभाग्यको सदाके लिए अमिट बना दिया है।

हमें नहीं भूलना चाहिये कि गांधीजीने राजनीति और धर्ममें कभी भेद नहीं किया। मानवमात्रके अधिकारोंकी रक्षा करना ही उनकी राजनीति थी और यही उनका धर्म था। गांधीजीकी सेवाको हम कभी नहीं भूल सकते।

काश! हत्यारेको गांधीजीसे बात करनेका धीरज होता तो वह देखता कि उसके लिए भी गांधीजीके हृदयमें प्रेम ही था। "बैरको बैरसे नहीं, प्रेमसे जीतना होगा"—यह बापूके जीवनका मूलमंत्र था। संसारको आज इसी मंत्रकी आवश्यकता है। गांधीजीके निधनके बाद संसारने उनके इस संदेशका महत्त्व पूरी तरह अनुभव किया है। यह अनुभूति यदि कुछ काल बनी रह सकेगी तो संभव है संसार उस विनाशसे बच सकेगा जो परमाणु-बमके प्रयोगसे बहुत निकट आता दिखायी दे रहा है।

दिल्लीकी भूमि गांधीजीके चरणोंसे पवित्र थी। इसी भूमिको मोक्ष-द्वार बनाकर अब बापूने दिल्लीको विश्वका तीर्थस्थान बना दिया है। यमुनातट-पर जलती हुई यह ज्योति विश्वभरको नया प्रकाश देती रहेगी। उसे प्रज्ज्वलित रखनेका दायित्व दिल्लीवासियोंपर आ गया है। मुझे आशा है, दिल्ली इस परीक्षामें पूरी उतरेगी।

ईश्वर बड़े रहस्य-भरे साधनोंसे अपने कार्य पूरे करता है। मनुष्यकी बुद्धि उसे परख ही नहीं सकती। हमारे देशकी सबसे बड़ी ज्योतिको सम्पूर्ण विश्वमें फैलानेके लिए ही शायद भगवानने उन्हें अपने पास बुला लिया है।

श्री अब्दुल मजीद खाँ

[प्रसिद्ध राष्ट्रीय मुसलमान]

महात्मा गांधीमें साहस और विनय तथा संस्कृति और मानवताका दुष्प्राप्य और अद्भुत समन्वय था। भय और घृणाके प्रति गांधीजीकी उपेक्षा युग-युग तक संसारमें उनकी कीर्ति-गाथा गाती रहेगी।

श्री फ्रैंक अन्थोनी

[सुप्रसिद्ध एंग्लो-इंडियन नेता]

महात्माजी जगत्‌के बापू थे। गांधीजीके मतको राजनीतिक क्षेत्रमें जो नहीं भी मानते थे, वे भी बापूके निधनपर क्रंदन कर रहे हैं। इसका कारण यह है कि समस्त अल्पसंख्यक समाजको उनसे महान बल प्राप्त होता था तथा पथ-भ्रान्त विश्वको विचारशीलताकी ओर उन्मुख करनेवाले वह पथ-प्रदर्शक थे।

° ° °

कलह, घृणा, संदेह और कटुतासे भरे इस संसारमें महात्मा गांधीकी वाणी निर्जनमें दीपककी तरह प्रेम, भ्रातृत्व और बंधुत्वका मार्ग दिखाया करती थी।

❀

प्रोफेसर इन्द्र विद्यावाचस्पति

[प्रसिद्ध कांग्रेसी आर्य नेता]

महात्माजी कितने महान् थे, यह आज अनुभव हो रहा है। महात्मा गांधीके विराट रूपका दर्शन साहित्यकार ही कर सकता है और उनकी सर्वतोमुखी प्रतिभा और विस्तृत कार्य-क्षेत्रको हमें देखना चाहिये।

❀

"मेरा धर्मतो मुझे यह सिखाता है कि बन्धुत्व केवल मनुष्यमात्र से नहीं, बल्कि प्राणिमात्रके साथ होना चाहिये। हम अपने दुश्मनसे भी प्रेम करनेके लिए तैयार न होंगे तो हमारा बन्धुत्व निरा ढोंग है। दूसरे शब्दोंमें कहूँ तो, जिसने बन्धुत्वकी भावनाको हृदयस्थ कर लिया वह यह नहीं कहने देगा कि उसका कोई शत्रु है।"

—गांधीजी

श्री प्यारेलाल

[गांधीजीके निजी सचिव]

जब अपार शांति, क्षमा, सहिष्णुता और दयासे भरा अचल शरीर और मुख ध्यानसे मैं देखने लगा तो मेरे दिमागमें उस समयसे लेकर जब मैं कालेजके विद्यार्थीके रूपमें चौंधियानेवाले सपनों और उज्ज्वल आशाओंसे भरा बापूके पास आकर उनके चरणोंमें बैठा था—आजतकके २८ लम्बे वर्षोंके निकटतम और अटूट संबंधका पूरा दृश्य विद्युत-गतिसे घूम गया।

जो कुछ हुआ, उसके अर्थपर मैं विचार करने लगा। पहले मैं घबराहट महसूस करने लगा, लेकिन बादमें धीरे-धीरे यह पहेली अपने आप सुलझने लगी। उस दिन जब बापूने एक आदमीको अपना फर्ज पूरी और अच्छी तरह अदा करनेके बारेमें कहा था तो मुझे ताज्जुब हुआ था कि आखिर उनके कहनेका ठीक-ठीक मतलब क्या है? उनकी मृत्युने उसका जवाब दे दिया। पहले जब गांधीजी उपवास करते तब वह दूसरोंसे देखने और प्रार्थना करनेके लिए कहते थे। वह कहा करते थे,—"जबतक पिता बच्चोंके बीच है तबतक उन्हें खेलना और खुशीसे उछलना-कूदना चाहिये। जब मैं चला जाऊँगा तब आज मैं जो कुछ कर रहा हूँ, वह सब वे करेंगे।" आगकी जो लपटें देशको निगल जानेकी धमकी दे रही हैं अगर आज उन्हें शांत करना है और बापूने जो आजादी हमारे लिए जीती है उसका फल हमें भोगना है तो उनकी मौतने हमें जो रास्ता दिखा दिया है, उसपर हमें चलना है।

श्री हरिभाऊ उपाध्याय

[प्रसिद्ध गांधीवादी साहित्यिक]

महात्माजीकी स्तुति उनके जीवन-कालमें ही इतनी हो चुकी थी और उनके अवसानके बाद तो उनके स्तुति-स्तोत्रों और लोगोंके भक्तिभावका जो प्रदर्शन तरह-तरहसे हुआ, उसमें अब और वृद्धि करना अनावश्यक है। इस विषयमें वे अब-तकके तमाम महापुरुषों तथा अवतारोंसे आगे निकल गये। वह केवल एक संस्था, एक संघटन, एक बल व प्रकाश ही नहीं, अपने-आपमें एक युग, बल्कि विश्व थे। जीवनका कोई अङ्ग नहीं, जिसे उन्होंने अपने जादुई स्पर्शसे सजीव न कर दिया हो। परन्तु उनके कोरे गुण-गानसे हमारा कर्तव्य-भार हल्का नहीं हो सकता। यह तो केवल अर्घ्य-प्रदान हुआ। उनके स्मारकके भिन्न-भिन्न आयोजन भी करना सस्ता

छुटकारा ही समझना चाहिये, यद्यपि वे मानवके भक्ति-भावकी पूर्तिके आवश्यक अङ्ग जैसे हैं। प्रश्न यह है कि अब उनके प्रति हमारी श्रद्धा-भक्ति क्या रूप ग्रहण करे? वह ज्ञान, भक्ति एवं कर्मकी त्रिवेणी थे। हमारे देखते-देखते वह नरसे नारायण हुए। सदियोंके गुलाम देशको बिना शस्त्रास्त्रके स्वतंत्र करा दिया—एक नवीन आदर्श समाजकी दागबेल डाल गये और उसका मार्ग दिखा गये। हमें इस समय अपने कर्तव्यका ठीक-ठीक ज्ञान करानेके लिए उनके ये स्मृति-चिह्न काफी हैं। इनमें पहली बात है स्वयं हमारे जीवनका निर्माण, दूसरी नव समाज-निर्माणमें उसका विनियोग। महात्माजी ऐसा समाज बनाना चाहते थे, जिसमें कोई किसीको दबाने न पावे, सब स्वतंत्र रह कर एक दूसरेके काम आवें। इसे उन्होंने 'रामराज्य' कहा है। यह तभी बन सकता है, जब हम अपना जीवन सचाईके साथ व्यतीत करते हुए दूसरेके जीवनको बनानेमें उसे लगायें। पहला सत्यकी साधनासे तथा दूसरा अहिंसाकी साधनासे हो सकता है। इसीलिए उन्होंने सत्याग्रहपर, सत्य व अहिंसाकी साधनापर इतना जोर दिया है। सच्चे प्रजातन्त्रकी नींव और लक्षण अहिंसा ही है। अतः अबसे हम अपने जीवनको सत्याग्रहकी तराजूपर तौलते रहें। यह बिना सतत जागर्तिके नहीं हो सकता। इसमें बापूका जागरूक जीवन हमारा पथ-प्रदर्शक बन सकता है। केवल व्यक्ति या व्यष्टि रूपमें हम महान या आदर्श बन जायँ, यह काफी नहीं है; समाज या समष्टिमें अपनेको मिला देना हमारे जीवनकी कृतार्थता है। व्यष्टि इकाई है। समष्टिमें समावेश उसकी परिपूर्णता है। यही मोक्ष है। व्यक्तिगत उन्नति हमारी यात्राकी आधी मंजिल है; समष्टिगत जीवन पूर्ण साधना या पूरी मंजिल है। महात्माजीने न केवल जीवनको बनाया, बल्कि उसका एक-एक क्षण देश, समाज, समष्टिके लिए अर्पण किया—इसीमें उन्होंने जीवनकी कृतार्थता मानी। यही हमारा दीप-स्तम्भ होना चाहिये।

यदि हम महात्माजीके भक्त हैं तो हमारा जीवन, प्रत्येक कार्य, उन्हींके लिए, उन्हींके प्रिय कार्य या लक्ष्यके लिए होना चाहिये, उसमें अपने व्यक्तिगत सुख-सुविधाका विचार बाधक न होने देना चाहिये।

जबतक बापू थे तबतक तो हम दौड़-दौड़कर उनके पास पथ-प्रदर्शनके लिए चले जाते थे। अब तो उनके उपदेश, आचार और गुण ही हमारे पथप्रदर्शनका काम करेंगे। इस दृष्टिसे उनके विस्तृत जीवन-चरितका संग्रह, मनन व उनके गुणोंका सतत अनुशीलन बहुत आवश्यक हो गया है। यही अब उनके प्रतिनिधि हमारे लिए रह गये हैं। शरीर तो आज या कल जाता ही; परन्तु उनका जीवन-चरित अमर है। उनके शरीरसे कहीं अधिक व्यापक क्षेत्रमें उसकी गति है। इस अमूल्य निधिके सुयोग्य वारिस बननेका हमें पूरा प्रयत्न करना चाहिये। जबतक हम ऐसा करते रहेंगे तबतक बापू हमारे अन्दर एवं हमारे बीच अमर हो रहेंगे।

❀

'देशी' रियासतें

श्री हरी सिंह

[महाराज : जम्मू काश्मीर]

गांधीजी भारतीय राष्ट्रके निर्माता थे। अपनी मातृ भूमि और पददलित जनताकी सेवा करते हुए अंततः उन्होंने आत्म बलिदान भी कर दिया।

कितने दुःख और लज्जाकी बात है कि मानवताके त्रातापर भी प्रहार हुआ। भारतको गांधीजी ऐसे महान व्यक्तिपर गर्व होना चाहिये। मुझे विश्वास है कि आनेवाली पीढ़ियाँ महात्मा गांधीके आदर्शों और उपदेशोंको कभी न भूलेंगी। गांधीजीके उद्देश्योंकी पूर्तिके लिए हम सब लोगोंको प्रतिज्ञा करनी चाहिये।

❀

श्रीमती तारा देवी

[महारानी : जम्मू-काश्मीर]

आज समस्त विश्वके लोग रो रहे हैं। अहिंसाके देवदूतने मुस्कुराते हुए हिंसाका सामना किया। गांधीजीने ही भारतके करोड़ों व्यक्तियोंको पाश-मुक्त किया। आज जब वे शरीरसे हमारे बीच नहीं हैं, हमारा कर्त्तव्य है कि उनके उच्चादर्शों और अनुपम उपदेशोंपर चलें।

गांधीजी नारी जातिके प्रति विशेष श्रद्धा रखते थे। गांधीजीने ही अपहृत और विधर्मी बनायी गयी महिलाओंका उद्धार करनेकी प्रेरणा दी। मैं समस्त नारी जातिसे अनुरोध करती हूँ कि वे गांधीजीके ध्येयको पूरा करनेमें सहयोग दें।

❀

माननीय शेख मुहम्मद अब्दुल्ला

[प्रधान मंत्री : जम्मू-काश्मीर]

यद्यपि अब गांधीजी नहीं रहे, तथापि काश्मीर उनके पथपर सदैव चलेगा। काश्मीरकी जनता आज गांधीजीके आदर्शोंके लिए ही प्राणार्पण कर रही है। जबतक एक भी काश्मीरी जिंदा रहेगा तबतक सत्य और एकताकी जो ज्योति गांधीजीने जगायी है, वह प्रज्ज्वलित होती रहेगी। जिन आदर्शोंके लिए गांधीजी मरे उनकी पूर्त्तिके लिए प्रयत्न करना ही सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करना होगा।

माननीय गुलाम मुहम्मद बक्शी

[उप प्रधान मंत्री : जम्मू-काश्मीर]

उनका नश्वर शरीर हमारे बीच नहीं रहा, पर उनके उपदेश सदा भावी पीढ़ीको स्फूर्त्ति और प्रेरणा देते रहेंगे। काश्मीर बापूके प्रति अपनी कृतज्ञताके भारको कभी नहीं भुला सकता। बापू करोड़ों भारतीयोंके ही बापू नहीं थे वरन् समस्त मानव-समाजके थे। सांप्रदायिक एकताकी पुनः स्थापनाके लिए बापूने अपना सारा जीवन लगा दिया और अपने जीवनकी आहुति दे डाली। मानवताके उत्थान और उद्धारके लिए वे सदा कार्यरत रहे। उनके अथक परिश्रम द्वारा स्वतंत्रताका फल प्राप्त होनेके इतने शीघ्र ही उनका निधन अत्यंत दुःखद घटना है। हमें पूर्ण विश्वास है कि काश्मीरका प्रत्येक व्यक्ति महात्माजीके आदर्शोंका अनुसरण करनेमें सचेष्ट रहेगा।

सर यादवेन्द्र सिंह

[महाराज : पटियाला]

भारतका सर्वश्रेष्ठ नेता हमसे छीन लिया गया। इस पागलपनके कृत्यने हमारे देशको अंधकार और शोकमें निमग्न कर दिया है। गांधीजी अब नहीं रहे, पर उनकी याद और आत्मा हमारे साथ सदैव रहेगी और हमें प्रेरणा तथा निर्देश करती रहेगी। इस युगके सर्वश्रेष्ठ पुरुषकी पुनीत स्मृतिमें हम और इस राज्यकी जनता श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

० ० ०

अहिंसाका सर्वश्रेष्ठ देवदूत भारतपर अपनी छाप छोड़ गया है और देशवासियोंके ही हृदयमें नहीं, समस्त मानवताके इतिहासमें अमर रहेगा।

❀

श्री त्रिभुवन वीरविक्रम जंगबहादुर राणा

[महाराज : नेपाल]

महात्माजीकी हत्याका समाचार सुनकर हम सब स्तब्ध रह गये। हम परमपितासे प्रार्थना करते हैं कि उनकी दिवंगतात्माको शांति प्रदान करे। हमारी हार्दिक समवेदना भारतीय जनताके साथ है।

❀

श्री जय चामराजेन्द्र वाडियार

[महाराज : मैसूर]

गांधीजीके निधनका समाचार सुनकर हार्दिक दुःख हुआ। इस संक्रमण कालमें इससे अधिक भयंकर विपत्ति नहीं हो सकती। अब हम उनके बुद्धिमत्तापूर्ण निर्देश एवं उचित परामर्शसे वंचित हो गये। किन्तु यह शहीद महात्मा अपने पीछे जीवनकी शिक्षा और अध्यात्म-विषयक जो निधि छोड़ गया है वह अनमोल है और जिसका हमें अनुसरण करना चाहिये। मैसूरको समय समयपर उनके निर्देश और आदेश प्राप्त करनेका सौभाग्य मिल चुका है। राष्ट्रके इस संकटके अवसर-पर मैं अपनी तथा राज्यकी जनताकी ओरसे महात्मा गांधीकी आत्माके प्रति सादर श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूँ।

• • •

महात्माजीसे अधिक किसी व्यक्तिने राष्ट्रीय महत्त्व और गौरवकी भावना नहीं जगायी। यह सत्य है कि वह महान् निर्माता थे; उन्होंने राष्ट्रका निर्माण किया और जनतामें आत्मविश्वास जागरित किया, जिससे राष्ट्रीयताका महत्त्व समझनेमें सफलता मिली। आध्यात्मिक क्षेत्रमें उनकी जो देन है वह न केवल भारत बल्कि समस्त विश्वके लिए अधिक उपादेय है और मानवताके चिर कल्याण और स्थायी महत्त्वकी वस्तु है। जब मानवका विकास-पथ युद्ध और युद्ध-ज्वरसे कुंठित और लक्ष्य-विहीन हो रहा था, उस समय समस्त संसारमें अकेले महात्मा गांधी शान्ति और अहिंसाका सन्देश लेकर देवदूतके रूपमें अवतरित हुए।

❀

सर आर्काट रामस्वामी मुदालियार

[दीवान : मैसूर]

इस दुर्घटनाका आघात इतना भयंकर और स्तब्धकर है कि हमपर जो विपत्ति आयी है उसका वर्णन या अनुमान करना कठिन है। हमारे राष्ट्रपिता चले गये। महात्माजी इस विश्वके लिए देवदूत ही थे।

० ० ०

गांधीजीको जो कार्य सर्वाधिक प्रिय रहा, उसीके लिए वे वस्तुतः सच्चे शहीद भी हो गये। वह संत राजनीतिज्ञ चला गया, जिसके आदेश और उपदेश हमारे लिए इस संक्रमण कालमें सर्वाधिक महत्त्व रखते।

❋

माननीय के० सी० रेड्डी

[प्रधान मंत्री : मैसूर]

इस देशपर जो भयंकर विपत्ति आयी है उसका दुःख शब्दोंमें व्यक्त करना कठिन है। राष्ट्रके पिता हमारे बापू अब न रहे। हम अनाथ हो गये, दीन हो गये, हीन हो गये। उनका संत जीवन विश्वके लिए, विशेषतः भारतके लिए सर्वाधिक महत्त्व रखता था। उनका जीवन तपस्याका जीवन था, जो सदैव मानवताको अंधकारसे प्रकाशकी ओर, असत्से सतकी ओर प्रवर्तित करनेके लिए था।

❋

श्री आई० सिद्धलिंगय्या

[अध्यक्ष : मैसूर कांग्रेस]

कितना अच्छा होता यदि हम इस मनोवैज्ञानिक अवसरका सदुपयोग साम्प्रदायिकताका अंत करने और पारस्परिक सद्भावना और मित्रताका नया अध्याय प्रस्तुत करनेमें करते।

❋

माननीय एच० सी० दासप्पा

[अर्थ तथा उद्योग-मंत्री : मैसूर]

माननीय एच० सिद्धैय्या

[माल तथा तामीरात-मंत्री : मैसूर] तथा

माननीय टी० मेरियप्पा

[गृह-मंत्री : मैसूर]

समस्त देशवासियोंके साथ, बापूकी मृत्युपर मैसूर भी अपना गंभीर शोक प्रकट करता है। प्रेम और शान्तिके दूतने एक शहीदकी मृत्यु पायी। हम आशा करते हैं कि उनका निधन मनुष्य जातिमें शान्ति, प्रेम और सद्भावनाको प्रतिष्ठित करनेमें सफल हो—जो उनके जीवनका चरम ध्येय था। हमारी सभीसे यह प्रार्थना है कि इस राष्ट्रीय संकटके समय हम अपने मतभेदोंको पूर्णतः नष्ट कर दें और महात्माजीने जो दीप प्रज्ज्वलित किया और हमारे हाथोंमें रख गये हैं उसे हम कभी बुझने न दें। आइये, आपसकी तू-तू—मैं-मैं तथा स्वार्थपरतासे ऊपर उठकर हम इस दीपकको सदा प्रकाशित रखें।

श्री रामराजा बहादुर

[महाराज : त्रावणकोर]

भारत-माताके सर्वश्रेष्ठ पुत्र महात्मा गांधीके दुःखद निधनका समाचार सुनकर स्तब्ध रह गया हूँ।

श्री केरल वर्मा

[महाराज : कोचीन]

यदि हिंदुओंमें अब भी आत्मसम्मान और गौरव लेशमात्र भी हो तो उन्हें चाहिये कि अपना शेष जीवन उस महान और सर्वश्रेष्ठ हिंदूके जीवन और उपदेशोंकी पूर्तिके लिए अर्पण कर दें। यही एक मार्ग है, जिससे हम अपने अस्तित्व और अपने धर्मकी रक्षा कर सकते हैं। मैं नेहरूजीको विश्वास दिलाता हूं

कि इस राज्यमें प्रत्येक मुसलमान सुरक्षित है और यदि किसी मुसलमानपर आघात हुआ तो दोषीको तुरंत समुचित दण्ड दिया जायेगा।

नवाब मीर उस्मान अली खान

[निजाम : हैदराबाद]

महात्मा गांधीकी हत्याका समाचार सुनकर परम दुःख हुआ। वह सत्य और अहिंसाके प्रतीक थे और उन्हींकी तपस्याके कारण अंततः भारतको स्वतंत्रता मिली। उन्होंने हिंदू-मुसलिम एकताके लिए जीवन दान कर दिया। उनके महान कार्य भारतके इतिहासमें ही नहीं, सारे संसारमें अमर रहेंगे। मुझे विश्वास है कि महात्माजीने मानवताके हितके लिए जीवन-दान देकर जो पथ दिखाया है, भारत उसपर चलेगा।

माननीय लायक अली

[प्रधान-मंत्री : हैदराबाद]

उस महात्माके प्रति हमारी सबसे उपयुक्त श्रद्धांजलि उनके निर्दिष्ट आदर्श-पथका अनुसरण करना है।

नवाब मेंहदी यार जंग

[भूतपूर्व प्रधान मन्त्री : हैदराबाद]

महात्मा गांधीकी मृत्युसे बढ़कर भारतके लिए कोई विपत्ति नहीं हो सकती। इस समय इस महान नेताकी अतीव आवश्यकता थी।

गांधीजीके चरित्र, आदर्श, प्रयत्न और सिद्धियोंको देखते हुए कहा जा सकता है कि वह बीसवीं शताब्दीके सबसे बड़े महापुरुष थे। उनकी स्मृतिका सम्मान करनेका सबसे अच्छा ढंग यह है कि दोनों संप्रदायोंमें मैत्री तथा सद्भावना स्थायी रूपसे रहे।

श्री तुकोजी राव होलकर

[महाराज : इंदौर]

महात्माजीके संबंधमें मेरा कुछ कहना उसी प्रकार है जैसा सूर्यको दीपक दिखलाना। अपने जीवन-कालमें गांधीजीने समस्त विश्वको प्रकाशमान किया है और वे अपने उपदेशों द्वारा युग-युगतक प्रकाश देते रहेंगे। उनकी आत्मा इस प्राचीन देशका पथ-प्रदर्शन करती रहे, यही मेरी हार्दिक कामना है।

❀

श्री जार्ज जियाजीराव सिंधिया

[महाराज : ग्वालियर]

हिमालयकी भाँति उच्च और रहस्यमय, गंगाकी भाँति पवित्र, सूर्यकी भाँति देदीप्यमान, ध्रुवकी भाँति अटल, सिंधुकी भाँति गंभीर और पृथ्वीकी भाँति उदार बनकर उन्होंने अपने बलिदानसे समस्त विश्वको यह दिखला दिया कि एक मनुष्य अपना कर्त्तव्य पालन करते हुए, सत्यपर दृढ़ रहकर और आदर्शोंकी रक्षा करते हुए क्या प्राप्त कर सकता है।

महात्मा गांधीकी मृत्युसे न केवल भारतमाताने अपना सर्वश्रेष्ठ पुत्र खो दिया, बल्कि विश्वसे इस युग का वह सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति चला गया जिसके जीवनका उद्देश्य था मानवताकी सेवा और शांतिकी स्थापना।

भारतमें नवजागरण तथा प्रगतिका इतिहास महात्माजीका इतिहास है। वर्तमान तथा भावी संततिका सर्वप्रथम कर्त्तव्य है कि वह उन आदर्शोंके अनुसार कार्य करे जिनके लिए गांधीजी निरंतर प्रयत्नशील रहे और अंततः उन्होंने अपनेको बलिदान कर दिया। उनकी केवल राजनीतिमें ही गति नहीं थी, वरंच राष्ट्रनिर्माणके प्रत्येक क्षेत्रमें उनका प्रवेश था।

० ० ०

इस शोकपूर्ण अवसरपर मैं अपने शासनका यह दृढ़ संकल्प बता देना चाहता हूँ कि साम्प्रदायिकताके विष-वृक्षको ग्वालियरकी पुण्यभूमिमें पनपने नहीं दिया जायगा और मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस संकल्पको सफलीभूत बनानेमें मुझे मेरी प्रिय प्रजाका पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। केवल इसी रूपमें सही अर्थोंमें हम पूज्य बापूके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं। यह हमारा पुनीत

तथा प्रथम कर्तव्य है कि हम उन आदर्शों पर चलें जिनके लिए पूज्य गांधोजी जिये तथा अपना बलिदान कर दिया।

❀

माननीय लीलाधर जोशी

[प्रधान मंत्री : ग्वालियर]

यह अत्यंत शोककी बात है कि पूज्य महात्मा गांधीके जीवनकालमें भारतवर्ष उनके बताये हुए आदर्शोंपर पूर्णतया नहीं चल सका। परन्तु अब पिछले कुछ दिनोंमें ही भारतवर्षमें एक महान हृदय-परिवर्तन हुआ है जो उसके उज्ज्वल भविष्यका द्योतक है।

❀

श्री सीताराम जाजू

[अध्यक्ष : ग्वालियर राज्य कांग्रेस]

देवदूतोंमें सर्वश्रेष्ठ राष्ट्रपिता बापूके हत्याके आकस्मिक और हृदय-विदारक समाचारने न केवल भारतको बल्कि समस्त विश्वको शोकाभिभूत कर दिया है। इस दुर्घटनाने इतिहासकी इस बातको फिरसे दुहरा दिया है कि महात्माओं और मानवताके रक्षकोंकी हत्या प्रायः उसी वर्गके व्यक्तियोंने की, जिनके लिए उन्होंने आजीवन निःस्वार्थ सेवा की, और जिन्हें उन्होंने आपत्तियोंसे बचाया। हमारी ही नहीं यह सारे संसारकी हानि हुई है। बापू ऐसे व्यक्ति हजारों वर्षमें एक बार अवतार लेते हैं। बापूकी भारतको सदैव आवश्यकता रही है, और आज जब कि समस्त विश्व पथ-भ्रष्ट होकर अंधकारमें भटक रहा है तब उनकी और भी अधिक आवश्यकता है।

❀

सर उमीद सिंह

[महाराज : जोधपुर]

इस राष्ट्रीय क्षतिपर दुःख प्रकट करनेके लिए शब्द नहीं हैं। महात्माजीके कार्य, सेवा और त्याग सभी अनुपम थे और देशमें उनकी संघटन शक्ति सर्वश्रेष्ठ थी। उनकी मृत्युसे राष्ट्र एक अनमोल जीवनसे विहीन हो गया और विश्वने सत्य, शांति और अहिंसाका सर्वश्रेष्ठ दूत खो दिया।

❀

माननीय जयनारायण व्यास

[प्रधान मंत्री : जोधपुर]

राष्ट्रपिता पूज्य बापू करोड़ोंमें एक थे। ऐसे पुरुष हजारों वर्षोंमें एक ही पैदा हुआ करते हैं। सिर्फ ईश्वर ही जानता है कि कैसे और कब विश्वमें इस रिक्त स्थानकी पूर्ति होगी।

❀

श्री सादल सिंह

[महाराज : बीकानेर]

यह महान राष्ट्रीय क्षति और हमारा दुर्भाग्य है कि देशके इतिहासमें अभूतपूर्व संकटके समय हमने एक ऐसे व्यक्तिका ज्योतिर्मय नेतृत्व और प्रेरणात्मक निर्देश खो दिया, जो न केवल मातृभूमिका श्रेष्ठ पुत्र था बल्कि राष्ट्र-पिता था और स्वतंत्र भारतका महान निर्माता भी था।

महात्माजी अपने उस पुण्य कार्य, सांप्रदायिक एकता और सद्भावनाके पुनीत कार्यके लिए शहीद हो गये जो उन्हें सर्वाधिक प्रिय था। इस कर्मयोगीकी पुण्य-स्मृतिमें श्रद्धांजलि अर्पित करनेका सर्वोत्तम ढंग यही है कि हम उनके सत्य और अहिंसाके सिद्धांतका अनुसरण करें और उस कार्यको पूरा करें, जिसके लिए वे अंतिम क्षणतक प्रयत्नशील रहे। आइये, अब भी हम लोग शांति और सद्भावनाके साथ एक होकर रहें, जिससे यह देश, जिसका नाम पिछले कुछ महीनोंकी दुर्घटनाओंके कारण कलंकित हो गया है, एक बार पुनः पूरे वैभव और महत्ताके साथ जाग उठे और विश्वमें शांति स्थापित करनेमें महत्त्वपूर्ण योगदान कर सके।

o o o

इस विकट समयमें एक महान राष्ट्रीय संकट उपस्थित हुआ है कि हम महात्माजीके प्रकाशशील तथा उत्साहवर्धक नेतृत्वसे वंचित हो गये। गांधीजी राष्ट्र-पिता थे और स्वतंत्र भारतके सच्चे निर्माता थे। वह सांप्रदायिक एकता और शांतिके लिए शहीद हो गये, उनका सबसे बड़ा समादर इस बातमें है कि हम उस कर्मयोगीके सत्य तथा अहिंसा-मार्गपर चलें।

भारतवर्षके नवजागरण तथा प्रगतिका इतिहास गांधीजीका इतिहास

है। वर्तमान एवं भावी संततिका मुख्य कर्त्तव्य है कि वह उनके उद्देश्योंकी सिद्धि करें जिनके लिए उन्होंने निरंतर प्रयत्न किया और अंतमें बलिदान हो गये।

❀

माननीय एस० वी० राममूर्त्ति

[प्रधान मंत्री : उदयपुर]

महात्मा गांधीकी दुःखद हत्याका समाचार सुनकर उदयपुरके नागरिक स्तब्ध रह गये। महात्मा गांधी भारतके ही सर्वश्रेष्ठ नेता नहीं थे, बल्कि इस युगके सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति थे। उनकी मृत्युसे भारतने ऐसा पथ-प्रदर्शक खो दिया, जिसकी इस संकटके समयमें सर्वाधिक आवश्यकता थी। उनकी मृत्यु हमारी अपूरणीय क्षति है।

❀

श्री सवाई मानसिंह

[महाराज : जयपुर]

गांधीजीके व्यक्तित्वमें हमारी जातिके सर्वोत्तम आदर्श मूर्तिमान थे। उनके निधनसे भारतकी ही नहीं सम्पूर्ण विश्वकी भयंकर क्षति हुई है। हमारा कर्त्तव्य है कि हममेंसे प्रत्येक व्यक्ति उनके उपदेशोंका पालन करते हुए उनकी पुनीत स्मृतिका सम्मान करे।

❀

माननीय वी० टी० कृष्णमाचारी

(दीवान : जयपुर]

महात्माजीकी मृत्यु भारत ही नहीं बल्कि तमाम विश्वके लिए महा दुर्भाग्य सूचक है। उनके दुबले-पतले शरीरमें अपनी जातिके उच्चतम आध्यात्मिक आदर्श व्याप्त थे। उनकी महान शिक्षाओंने हमें प्रेरणा दी और हमारी हिम्मत बढ़ाये रखी। हाल हीमें प्राप्तकी हुई हमारी आजादीको सुदृढ़ करनेके महान कार्यमें वे हमारे लिए एक प्रकाश-स्तम्भ थे। जिन परिस्थितियोंमें उनकी मृत्यु हुई है वह हम सबके लिए इस बातकी चुनौती है कि हम उनके सिद्धांतोंके प्रति सच्चे रहें और देशको संसारमें उचित स्थान दिलानेके लिए निःस्वार्थ भावसे काम करें।

❀

सैयद मुहम्मद रजा अली खां

[नवाब : रामपुर]

इस शोकसे घर-घरमें अंधकार हो गया है। बापूकी मृत्युसे भारतका महात्मा, नेता एवं उपदेशक चला गया।

❀

श्री मुहम्मद हमीदुल्ला खाँ

[नवाब : भोपाल]

आज हमारे युगके सबसे महान् सत्यता तथा शांतिके दूत बापूका अस्थि-प्रवाह पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण चारों दिशाओंमें संपन्न किया जा रहा है। इस भूमिके प्रति उनका अनन्य प्रेम था, तथा इसीके लिये उन्होंने अपना जीवनोत्सर्ग किया। आजतक विश्वके किसी भी हिस्सेमें, प्रत्येक वर्ग तथा गतिमें इतनी श्रद्धाञ्जलियां किसीको नहीं मिलीं जितनी बापूको मिली।

यदि हम यह जानना चाहते हैं कि वह किस प्रकारके आदमी थे, जिनकी विश्व मुक्त कंठसे प्रशंसा करता है, तो हमें सच्चाईके साथ उनके जीवनका अध्ययन करना चाहिये। एक बच्चेसे भोले, सत्यके प्रकाशसे देदीप्यमान, अपने सिद्धान्तोंसे जो कि पर्वतको भी डगमगा दे, अपने देशके प्रति उनमें अनन्य श्रद्धा थी। बिना कुछ पानेकी इच्छाके वे जीवन पर्यंत जो अपने पास था, वह दूसरोंको देते ही रहे। भारतने ही नहीं किन्तु समस्त विश्वने उनके अलौकिक प्रभावको स्वीकार किया है।

विश्वके समूचे नैतिक सिद्धान्तवादियोंके सदृश्य, वे अपने उदाहरण तथा प्रतिपादित सिद्धांतोंकी सफलता देखनेको नहीं रहे। यह आपका और मेरा कर्तव्य है कि हम यह देखें कि उनके कार्योंका महान परिणाम निकलता है।

सत्यता, शांति तथा प्रेमका झंडा, जो उन्होंने हमें दिया उसका हमें मान रखना है। हमें उसके लिये अनवरत कार्य करनेवाला सैनिक बनना है और उन सभी प्रतिगामी शक्तियों पर पूर्ण विजय पाना है जो हमारे देशमें उत्पन्न होगयी हैं।

हमें अविलम्ब अब वह कार्य आरंभ कर देना चाहिये जो महात्माजीने आरंभ किया था। इससे सुन्दर उनका कोई स्मारक चिन्ह नहीं बन सकता कि हम उनकी स्मृतिमें एक ऐसी संस्थाका निर्माण करें जो उनके आदर्शोंका प्रचार करें, तथा उन्हें कार्य रूपमें परिणित करे।

खम्भातके नवाब

आज हमें प्रेरणा देनेके लिये हमारे युगकी सबसे महान् आत्मा हमारे मध्य नहीं है। यह महान् तथा अपूरणिय हानि है। भ्रातृभाव, प्रेम तथा साम्प्रदायिक एकताके लिए उन्होंने अपने जीवनकी आहुति देदी।

भारत, एक असाम्प्रदायिज राज्य है। यहां हिन्दु, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई, पारसी सभीके लिये समान अधिकार हैं। मेरे विचारसे सांप्रदायिक संस्थाओंके लिये यहांके राजनीतिक जीवनमें कोई स्थान नहीं है।

हमें स्मरण रखना चाहिये कि १५ अगस्त १९४७ से, देशके विभाजनके पश्चात, परिस्थितियां पूर्णतया बदल गयी हैं। भारतके मुसलमान भारतके प्रति वफादार हैं, उनके लिये यहांका झंडा मान्य है तथा यही उनकी मातृ भूमि है।

हम सभी मुसलमानोंको सांप्रदायिक एकताके लिये पूर्ण प्रयत्न करना चाहिये।

माननीय लाला यशवन्त सिंह

[प्रधान मंत्री : रींवा]

रीवाँ राज्यके महाराज, उसकी सरकार और जनता, देश और मानवता पर, इस वज्रपातमें घोर दुःख प्रकट करती है। गांधीजी के शांति तथा सदिच्छाके सिद्धान्त मानवताको निरन्तर प्रेरणा देते रहेंगे। ईश्वर हमारे युगकी सबसे महान दिवंगत आत्माको शांति प्रदान करे।

सर प्रताप सिंह गायकवाड़

[महाराज : बड़ौदा]

महात्मा गांधीकी निर्मम हत्याका समाचार सुनकर मेरे परिवारके सदस्य और इस राज्यकी जनता स्तब्ध है। उनकी आत्माको शांति मिले, हम लोगोंकी यही कामना है।

❀

प्रमुख संस्थाएं

समाजवादी दल

समाजवादी दलकी राष्ट्रीय प्रबंध समिति महात्माजीके निधनपर अपना हार्दिक शोक प्रकट करती है और सम्मानके साथ उनकी पुण्यस्मृतिमें अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करती है।

हम सभी लोगोंके लिए, जिन्होंने भारतीय स्वातंत्र्य-संघर्षमें योगदान किया है, महात्माजीकी स्मृति सदैव राष्ट्रसेवाकी उत्प्रेरक स्रोत बनी रहेगी। सदाचारकी भित्तिपर उनके सभी कार्य आश्रित होते थे; इसी कारण विचित्र प्रणालीसे आश्चर्यजनक रूपमें उन्होंने हमारे राष्ट्रीय-जीवनके विभिन्न तत्वोंको नूतन एकतामें ग्रंथित किया। विश्व-शांतिकी उच्च सिद्धांत-भूमिके आदर्श-स्तरपर देशके स्वातंत्र्य-संग्रामको उन्होंने आश्रित किया।

स्वयं दरिद्रनारायणकी सेवामें वे समर्थ थे। दरिद्रनारायणकी सेवामें निरंतर संलग्न रहनेके कारण महात्मा गांधी, वस्तुतः एक अद्वितीय समाजवादी थे। स्वातंत्र्य-प्राप्तिके अनंतर, हिंदू-मुसलमान, ग्रामीण-नगरवासी, धनी-निर्धन आदि सभी भारतीयोंके लिए समान नागरिक अधिकारकी मांग करनेके कारण महात्माजीने सच्चे अर्थमें वास्तविक प्रजातंत्रीय समाजवादी थे।

बापूने सत्याग्रहका ऐसा अनुपम संदेश हमें दिया जो दुर्बलों और निःशस्त्रोंका आयुध है और सामाजिक पुनर्निर्माणमें उसी भाँति समर्थ है।

भारतीय राष्ट्रके बापूको समाजवादी दल द्वारा जो सर्वश्रेष्ठ श्रद्धाञ्जलि अर्पित की जा सकती है वह यही है कि जिस लक्ष्य और आदर्श, साध्य और साधनोंके अनुसरणको वे अपने सभी कार्यों और बातोंसे व्यक्त करते थे, उन्हें पूरा करनेका प्रयास करें। उस अमर स्मृतिवाले महात्माके प्रति, राष्ट्र-नेताके प्रति, यही आत्मसमर्पणकी, उनके सिद्धांतोंपर चलनेकी प्रतिज्ञा करनेकी श्रद्धांजलि, सर्वश्रेष्ठ सम्मान प्रकाशन होगा।

*

अखिल भारतीय हरिजन संघ

[प्रधान मंत्री : श्री भगत अमीचंद]

अपने परम रक्षक महात्मा गांधीकी हत्याका समाचार सुनकर भारतके हरिजन अत्यंत दुःखी हैं। आज हम अनाथ हो गये हैं और पं० जवाहरलाल नेहरूसे आशा कर रहे हैं कि वे बापूके लक्ष्योंको पूर्ण करेंगे। हम भगवानसे यह प्रार्थना करते हैं कि वे माननीय नेहरूजीको बल दें जिससे वे यह महान कष्ट सह सकें और महात्माजीके अपूर्ण कार्योंको पूरा कर सकें।

अखिल भारतीय दलित संघ

[अध्यक्ष : श्री एच० जे० खांडेकर]

महात्माजीकी मर्मघाती मृत्यु हरिजनोंके लिए एक बड़ी अपूरणीय क्षति है। उन्होंने अस्पृश्यता-निवारण, सत्य, अहिंसाके लिए जीवन अर्पण कर दिया था। यदि हिंदू-समाज उनके उपदेशोंपर चलता है तो हरिजन समझेंगे कि महात्माजी अब भी उनके साथ हैं।

परिगणित जाति-संघ

[अध्यक्ष : श्री जे० एच० सुब्बय्या]

गांधीजीकी मृत्यु राष्ट्रीय विपत्ति है। वह भारतके हृदयमें अमर रहेंगे।

❀

रचनात्मक कार्यकर्त्ता सम्मेलन, वर्धा

महात्मा गांधीके महाप्रयाणके कारण संघकी (गांधी सेवासंघ) जो क्षति हुई है उसका महत्व निर्धारण करना असंभव है। इस संघके तो बापू जीवन थे। बापूकी हत्याका जघन्य कृत्य करनेवाले दुष्कर्मीने तथा उनके पुष्ट पोषकोंने इस कुकृत्य द्वारा भारतका ही नहीं समस्त मानवताकी जो हानि की है तथा हिंदूधर्म और भारतीय संस्कृतिके मुखपर जो कालिमा पोती है, उसकी आज कोई कल्पना कर सकता है ?

विश्वके सबसे बड़े और पवित्रतम सत्पुरुषके प्रति, जो समस्त मानवताका मित्र था, अपने राष्ट्रका पिता था, और जो सबपर विश्वास करते हुए सर्वत्र ही निर्भय होकर चला जाया करता था, उस महामानवकी हत्या करनेकी प्रवृत्तिका, कलुषित असंस्कृत भावनाका, दिखायी पड़ना सभी विचारशील व्यक्तियोंके सामने यही व्यक्त करता है कि यह दुष्प्रवृत्ति अनुचित शिक्षा और संकुचित सांप्रदायिक भावनाका परिणाम था। ऐसी शिक्षा और संकुचित भावना द्वारा मनुष्य, मनुष्यमें विरोध और भेदके भाव परिपुष्ट होते हैं।

न तो प्रस्तावों द्वारा मानवताके इस कलंककी कालिमा ही धोई जा सकती है और न गांधीजी एवं गांधीजीके परिवारवाले ही शांत किये जा सकते हैं। हमारे सम्मुख गांधीजीके उपदेशोंपर चलनेका केवल एक ही मार्ग रह गया है। उनके सिद्धांतोंके अनुसार लोगोंको शिक्षित करना, उनके सिद्धांतोंका पालन करना, उनके रचनात्मक कार्योंको लोकप्रिय बनाना, राष्ट्रों, धर्मों और जातियोंमें परस्पर सहयोग और सद्भावनाका प्रचार करना तथा युद्ध, हत्या और अत्याचारके हिंसात्मक उपायोंको समाप्त कर देनेका उद्योग करना ही इस समय हमारा प्रमुख कर्त्तव्य है।

उनके समस्त अनुयायियोंका यह कर्त्तव्य है कि इस समस्यापर विचार करें और गांधीजीके सिद्धांतोंको पूरा करनेका पथ ढूंढ़ निकालें।

❀

अखिल भारतीय लिबरल फेडरेशन

[सभापति : श्री टी० आर० वेंकटरमण शास्त्री]

सर्वमान्य महात्माजीके जीवनके ऐसे अंतकी किसीने कल्पना भी नहीं की थी। किसीने उस जीवनकी सुरक्षाका प्रबंध भी नहीं किया था। अपनी जीवन-रक्षाका कोई पूर्ण प्रबंध वे स्वीकार भी न करते। सांप्रदायिक एकताकी स्थापनाके हेतु शहीदोंके समान वे मरे। उनकी हत्या भीरुतापूर्ण और मूर्खतापूर्ण थी। यदि अपराधी पश्चाताप भी करे तो भी उसका प्रायश्चित्त नहीं हो सकता। हमारे राष्ट्र और विश्व दोनोंके लिए यह महासंकट है।

❀

अखिल भारतीय सोवियत संघ बंधुगण

[श्री सैयद अब्दुल्ला बरेलवी तथा श्री हरेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय द्वारा]

एक हत्यारेके हाथों महात्माजीकी मृत्युके समाचारसे समस्त विश्व स्तब्ध है। आज जनताका दुःख और क्षोभ अपरिमित है।

तीन दशकोंसे अधिक हुआ जबसे इस देशके उत्थान और विकासके समस्त आंदोलनोंका संपर्क महात्माजीसे रहा। महात्माजीने ही इस देशकी जनताके हृदयमें देश-भावनाकी अग्नि प्रज्वलित की तथा साम्राज्यवादी विदेशी सत्ताके विरुद्ध अहिंसात्मक आंदोलनका नेतृत्व किया तथा स्वातंत्र्य आंदोलनको देशके कोने-कोनेतक फैलाया। राष्ट्रकी जनताके लिए उनकी सबसे बड़ी शिक्षा यही थी कि ब्रिटिश साम्राज्यवादके अत्याचारोंको पराजित करना तथा प्राप्त स्वतंत्रताको सुरक्षित रखना तभी हो सकता है जब देशके सभी संप्रदाय एकताके सूत्रमें आबद्ध होकर रहें। इसीके लिए वे शहीद हुए।

महात्माजीकी हत्या, इस सांप्रदायिकताके विषकी विभीषिकाके विरुद्ध गंभीर चेतावनी है। इस कायरतापूर्ण हत्याके पीछे जो सांप्रदायिक विद्वेष है वह अत्यंत भीषण है। आज हम सोवियत संघके सभी अनुयायियोंको प्रतिज्ञा करनी है कि राष्ट्रीय उन्नतिके विनष्ट करनेवाले इस विषका हम समूल उन्मूलन करेंगे।

प्रोग्रेसिव राइटर्स असोसियेशन तथा इंडियन पीपुल्स थिएट्रीकल असोसियेशन

लेखकों और कलाकारोंकी यह सभा राष्ट्र-पिताकी पवित्र स्मृतिमें अपनी श्रद्धाञ्जलि समर्पित करती है। उनके नेतृत्वमें भारतीय जनताने ब्रिटिश साम्राज्यवादके विरुद्ध अनवरत युद्ध किया। प्रतिगामिताने हमारे देशकी जीवनी शक्तिपर यह आघात किया है। पूर्ण आर्थिक स्वतंत्रताकी ओर अग्रसर होती हुई भारतीय जनताकी, सरकारसे मांग है कि वह राजों, जमींदारों और पूंजीपतियोंकी उन प्रतिगामिनी शक्तियोंके विरुद्ध, जो सांप्रदायिकताकी आड़में कार्य कर रही हैं, कठोर कार्यवायी करे। अपने सौभाग्यपर उपस्थित महासंकटको देखकर आज वे इस विचारहीन कदाचारमें प्रवृत्त हो रहे हैं। इसे दूर करनेका केवल एक उपाय है। आज भूपतियों और पूँजीपतियोंको विनष्टकर उनसे रहित समाजको बनानेकी आवश्यकता है।

समयके साथ-साथ लोगोंकी स्मृतिमें बापूकी प्रतिमा अधिक साकार होती जायगी। बुद्ध और महावीरकी भाँति भावी संतति उनका सम्मान करेगी। महामानवके समान उनका समादर होगा। जनताने भारतीय स्वातंत्र्य संग्राममें विजय प्राप्त की, उस युद्धका नेतृत्व करनेवाले महात्माजी ही थे। इस सांप्रदायिक हत्याकांडके पीछे राजाओं, जमींदारों और संपन्न सेठोंका हाथ था।

पेशवा राजकी स्थापनाके स्वप्नका विनाश अवश्यंभावी था। इस भावनाने देशकी पर्याप्त हानि की। यह कायरतापूर्ण आघात एक ऐसे पुरुषपर किया गया जो स्वतंत्रताके साथ जनतामें घूमा-फिरा करता था।

एकताकी स्थापनामें, जिसकी साधनामें महात्माजीने अपना समस्त जीवन लगा दिया, इस बलिदानसे सहायता मिली। अब आर्थिक स्वातंत्र्यके कार्यकी गति स्वयं जनता द्वारा तीव्र की जायगी, यद्यपि कुछ शक्तियाँ अब भी बाधा डालेंगी।

इम्पिरियल सिटिज़नशिप असोसियेशन

[सभापति : श्री पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास]

सन् १९१५ में जब महात्माजी भारत और दक्षिणी अफ्रिका उपनिवेशके एशियावासियोंके विरुद्ध वहाँकी पाशव शक्तियोंके प्रतिरोधार्थ अपने अभिनव अहिंसाकी शक्ति प्रकट कर चुके थे, तबसे आजतक यहाँ रहते हुए भी उन्होंने अपने पूर्व स्नेह पात्रोंसे सदा सम्पर्क बनाये रखा था। थोड़ी बहुत जो भी सुविधा ब्रिटिश उपनिवेशोंमें भारतीयोंको मिली, उसके कारण महात्माजी ही थे।

महात्माजीका अहिंसा और प्रेमका संदेश विश्वके सुदूर कोनोंतक पहुंचा और दलितों तथा पीड़ितोंके लिए आशाकी किरण बनकर यह दिखा दिया कि संघर्ष और कलहकी शांति, बल और शस्त्र-प्रयोगके बिना भी हो सकता है। उन्होंने अपना जीवन ही मानवताकी सेवा और स्वतंत्रताके लिये समर्पित किया तथा भारतकी प्रतिष्ठा और उसका सम्मान विश्वकी राष्ट्रोंकी पंक्तिमें उन्नत किया।

थियासोफिकल सोसाइटी

[अध्यक्ष : श्री सी० जिनराजदास]

विश्वके पचास राष्ट्रोंके थियासोफिस्टोंकी ओरसे उस महात्माके निधन-पर, जो समस्त मानवताका रत्न था, हम अपना हार्दिक दुःख प्रकट करते हैं। 'अपने शत्रुओंसे घृणा मत कीजिये अपितु उनसे प्रेम कीजिये' इसी प्राचीन सिद्धांतकी घोषणा करते हुए तथा उसे अपने आचरणों द्वारा सिद्ध करते हुए शहीदकी भाँति वे मरे। भारत ही नहीं वरन् समस्त मानवता उन्हें कभी न भूल सकेगी।

काशी विद्यापीठ

[निरीक्षक सभाका प्रस्ताव]

काशी विद्यापीठकी निरीक्षक सभा राष्ट्रपिता विश्वबन्ध महात्मा गांधीके देहावसानपर अपनी हार्दिक श्रद्धाञ्जलि अर्पित करती है। गांधीजीके निधनसे न केवल भारतवर्षको किन्तु सारे संसारको अपार क्षति पहुँची। विद्यापीठका अपने जन्मकालसे ही महात्माजीसे सम्बन्ध था। विद्यापीठने अपना सर्वश्रेष्ठ हितैषी खो दिया है। उनके स्थानकी पूर्ति होना सम्भव नहीं है। हम उनके बनाए मार्गका अनुसरण करके अपनी सच्ची श्रद्धाञ्जली अर्पित करेंगे।

बनस्थली विद्यापीठ जयपुर

[आचार्या : श्रीमती सवित्री भारतीया]

हमारे जो वीर अहिंसात्मक युद्धमें बलि हुए हैं, उन और जो हिंसात्मक रीतिसे स्वतंत्रताके संघर्षमें अपना योग देकर शहीद हुए हैं उन असंख्य ज्ञात और अज्ञात शहीदोंकी स्मृतिको हम सदैव स्थायी रखें और उससे भविष्यके निर्माण-की प्रेरणा ग्रहण करें। हमारे इस झण्डेमें अशोकका धर्म चक्र है, जो अहिंसाका सच्चा प्रतीक है, अतः हमारे राष्ट्रकी नीति अहिंसाकी ही रहेगी।

जमैयत-उल्-उलेमा हिन्दकी कार्यसमिति

जमैयतकी यह कार्यसमिति महात्मा गांधीके पाशविक तथा निर्मम हत्यापर हार्दिक शोक तथा दुःख प्रकट करती है।

महात्माजी ही ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने सत्य, सहिष्णुता, शांति, धैर्य, क्षमाशीलताका अनुसरण करते हुए, शांतिपूर्ण एवं अहिंसक ढंगसे, स्वातंत्र्य संग्रामको सफलतातक पहुँचायी। बन्धुत्व, प्रजातंत्रवाद तथा हिंदू मुसलिम एकताके वे दृढ़ समर्थक तथा सहायक थे। अपने उच्च आदर्शोंके लिए अनेक बार उन्होंने अपने जीवनका दाँव लगा दिया और अंतमें इसीके लिए अपने जीवनकी आहुति दे डाली।

यह कार्यसमिति महात्माजीके महान और अतुलनीय देश-सेवाको सम्मानकी दृष्टिसे देखती है और भारतके सबसे बड़े हितकर्त्ताके रूपमें उनकी प्रशंसा करती है। सभी प्रजातंत्रवादी, प्रगतिवादी एवं स्वतंत्रता प्रेमी संस्थाओंसे यह समिति अनुरोध करती है कि वे अपने प्रभेद मिटाकर इस संकटके समय एक हो जायँ तथा बंधुत्व एवं सच्चे प्रजातंत्रवादके लक्ष्यकी ओर देशको ले जानेमें नेतृत्व करें और महात्माजीके आदर्शोंकी साधनामें अपना जीवन समर्पित कर दें।

अखिल भारतीय हिन्दू महासभा

यह सभा महात्माजीके हत्याकी घोर निंदा करती है। हत्यारेके क्रूर हाथोंने महात्माजीको संसारसे हटा दिया। भारतका वह सच्चा सपूत अब नहीं रहा जिसने तीस वर्षोंतक अनुपम प्रणालीसे देशकी राजनीतिका संचालन किया तथा भारतको स्वतंत्र करनेमें सफलता प्राप्त किया। उन्हें 'भारतीय स्वतंत्रताके निर्माता' कहना उचित ही है। मानवताके इतिहासमें उनका व्यक्तित्व अतुलनीय था। राज-नीतिक नेता और संत—दोनों रूपोंमें उनका स्थान सर्वोच्च था।

उनके निधन-समाचारने समस्त देशको स्तब्ध और विक्षुब्ध कर दिया है। हमारे लिए यह लज्जा और निंदाकी बात है कि हत्यारा हिन्दू महासभासे संबद्ध था।

राजनीतिक सिद्धांतोंमें कुछ मतभेद रहनेपर भी यह महासभा महात्माजीको सम्मान और प्रशंसाकी दृष्टिसे देखती है। वे एक ऐसे नेता थे जिनका जीवन और समस्त प्रयत्न भारतको स्वतंत्र करनेमें तथा मानवताकी सेवामें ही लगा रहा। यह सभा इस कुकृत्यकी घोर निंदा करती है और एक संस्थाके रूपमें उस दुष्कृत्यसे अपने असंबंधकी घोषणा करता है।

❀

मुसलिम संघ भारत

यह सभा एक हत्यारेके द्वारा की गई महात्माजीकी हत्यापर हार्दिक दुःख प्रकट करती है। महात्माजीके निधनसे देशका एक ऐसा महान तथा गत्यात्मक व्यक्ति उठ गया जो आजीवन अनुपम उत्साह और आस्थाके साथ देशमें शांति तथा सद्भावनाके लिए प्रयत्न करता रहा।

भारतके मुसलमानों तथा अन्य संप्रदायवालोंसे यह सभा अपील करती है कि वे समस्त शक्तिके साथ शांति एवं सद्भावनाकी स्थापनाके लिए यत्न करें। यह प्रयास, महात्माजीकी स्मृतिमें सर्वश्रेष्ठ श्रद्धाञ्जलि होगी।

❀

अखिल भारतीय शिया राजनीतिक सम्मेलन

[मंत्री : श्री मिर्जा जाफर हुसेन]

इस हृदय-विदारक क्षणमें, हमें क्रोध, घृणा अथवा पूर्ण निराशाके भावको स्थान नहीं देना चाहिये। हमें भावुकताके वशीभूत होकर व्यर्थ ही अपनी शक्ति खर्च न करनी चाहिये। हमारे आँसू हमे अंधा न बना दें जिससे वास्तविकताका दर्शन करनेसे हम वंचित हो जायँ। उनके अविरत शोकमें मग्न होकर, उनके शरीरकी भौतिक हानिके कारण उन संदेशों और भावनाओंको भूल न जाना चाहिये जिसके लिए वे सदा प्रयत्नशील रहे तथा जो उन्हें प्रेरित करते रहे। गांधीजीके न रहनेपर भी गांधीवाद सदा जीवित रहेगा।

भारतकी मानवताका हम जैसा निर्माण करेंगे, उसीके अनुसार गांधीजी दुःखी या प्रसन्न होंगे। हमपर वे जो विश्वास-भार छोड़ गये हैं, हमें उसके योग्य बनना चाहिये। अपनेमें दोषों और कमियोंके रहनेपर भी उस कार्य-भारके पालनसे हमें विचलित न होना चाहिये जिसके लिए महात्माजीने अपने जीवनकी बाजी लगा दी तथा अपने निधन द्वारा जिसकी सर्वश्रेष्ठता वे सिद्ध कर गये।

महात्माजीने देश और राष्ट्रकी गत ४० वर्षोंतक सेवा की है, वे भारतीय राष्ट्रके पिता और स्वाधीनताके निर्माता थे। बिना किसी जाति-भेदके उनसे सब लोग प्रेम करते थे। हत्यारेने राष्ट्रकी ऐसी अमूल्य निधिको हमसे छीन लिया।

❀

हमारे राजदूत

मानीय श्रीप्रकाश

[पाकिस्तान स्थित भारतीय हाई कमिश्नर]

जब ३२ वर्ष पूर्व महात्मा गांधी भारत आये वे इस देशको स्वतंत्रताका संदेश देने आए, तभीसे भारतीय स्वातंत्र्यके लिए वे प्रयत्नशील रहे।

हम लोगोंको, जिन्होंने उनके नेतृत्वमें कार्य किया है। इस दुःखद समाचारपर विश्वास नहीं होता। हम सभी बातोंमें उनकी राय लिया करते थे। अपने देशकी राजनीतिक समस्याओंपर ही नहीं व्यक्तिगत समस्याएँ आ पड़नेपर भी हम उनसे उपदेश लिया करते थे। अब हम किसके पास जायँगे?

० ० ०

अब तो हमें गांधीजीका उपदेश ग्रहण करना चाहिये और उनके द्वारा प्रवर्तित कार्योंको शुद्ध हृदयसे पूरा करना चाहिये। हिन्दू-मुस्लिम एकता महात्माजीके जीवनका लक्ष्य था, उनका कार्य केवल भारत तथा पाकिस्तानके लिए ही न था बल्कि समस्त विश्वके लिए था। हम पीछे न हटकर उनके संदेशोंको कार्यान्वित करेंगे। अभी उनका उद्देश्य परिपूर्ण नहीं हुआ। हमें अभी सच्ची स्वतंत्रता नहीं मिली है। सच्ची स्वतंत्रता गांधीजीके सिद्धांत, सत्य एवं अहिंसा तथा हिन्दू-मुस्लिम एकता द्वारा ही प्राप्त होगी।

गांधीजी केवल हिंदुओंके ही नहीं, मुसलमान, सिख, ईसाई, यहूदी सबके थे। वे विश्वके समस्त शांतिप्रिय लोगोंके मित्र थे। वे शांति तथा एकताके इच्छुक थे। हम अपना हृदय टटोलें। उनकी स्मृति स्थायी बनानेकी या उनके प्रति श्रद्धाञ्जलिका सबसे अच्छा ढंग यह है कि हम उनके आदर्शोंपर चलें।

❀

माननीय कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी

[हैदराबाद स्थित भारतीय सरकारके प्रतिनिधि]

गांधीजीके बारेमें कुछ कहनेकी मेरी इच्छा नहीं होती। गांधीजीको उनके अंतिम क्षणोंमें देखकर मुझे जो प्रथम आघात पहुंचा, उसके बादसे मैंने अपनेमें उसे सहन करनेकी शक्ति पैदा कर ली है। मुझे अबतक उनकी मृत्युपर विश्वास नहीं होता। मैं जानता हूँ कि वे मर गए हैं, लेकिन फिर भी मैं यह अनुभव नहीं कर सकता कि वे अब नहीं रहे। मुझे रह-रहकर निरंतर यही ख्याल आता है कि अगर अब भी मैं बिड़ला-भवनकी छतसे अपने कमरेमेंसे निकलकर बापूके कमरेमें जाऊँ तो मुझे उनकी वही प्रिय मुस्कान मिलेगी जिसे मैंने बृहस्पतिवारकी संध्याको देखा था।

मैंने सायंकाल ४ बजे उनसे बिदाई ली और मुझे आशा थी कि मैं अगले दिन उनसे फिर मिलूंगा। लेकिन अगले दिन सायंकाल ५—२५ पर जबमैं भारत सरकारके रियासती विभागमें था तो बिड़लाजीके एक ड्राइवरने आकर यह समाचार दिया कि गांधीजी गोलीके शिकार हुए हैं। मुझे इसपर विश्वास न हुआ। शांतिके इस देवताको मारनेका साहस कौन कर सकता था ?

मैं तुरंत टेलीफोन करने दौड़ा। समाचारकी पुष्टि हो गई। मैं सन्न रह गया। कारमें बैठकर मैं एकदम बिड़ला-भवनकी ओर भागा। मेरा सिर चकरा रहा था।

मैं झटसे उनके कमरेके भीतर पहुंच गया। वे अपनी सदाकी शय्या-पर लेटे हुए थे। उनके चेहरेपर मृत्युकी शांति छाई हुई थी। मनु, आभा और दूसरी लड़कियां उनके सिरहाने थीं। सरदार वल्लभभाई शोकग्रस्त मुद्रामें लेकिन धैर्य-पूर्वक बैठे थे और उनकी एक बांह पंडित जवाहरलालजीकी कमरमें, जो सुबक रहे थे, पड़ी हुई थी। मैंने कर्नल भार्गवकी ओर देखा जो वहां खड़े थे। उन्होंने मूकवत् सिर हिलाकर जवाब दिया। मृत्यु वहां खड़ी थी, भयंकर और निष्ठुर मुद्रामें और गांधीजी उसके निर्मम चंगुलमें फंसे हुए थे। गांधीजी अब नहीं रहे। मैं अनाथ हो गया। एक और डाक्टर आया। उसने गांधीजीके सीनेपर अपना स्टेथस्कोप लगायी और उनके ऊपरसे कपड़ा हटाया। मैंने तीन घाव देखे, जिनमेंसे खून बह रहा था। मेरी व्यथित आत्मा सिसकने लगी।

मनु भगवद्गीता पढ़ने लगी। एक-एक अक्षरपर उसका गला भर आता था। मणिबेन, प्यारेलाल और मैं, सभी मिलकर मनुके साथ गीता पढ़ने लगे। जब

हम गीताके श्लोक पढ़ रहे थे तो मेरी आंखोंके सामने एक चित्र खिंच गया। श्रीकृष्णकी मृत्यु बाणसे हुई। सुकरातको जहर दिया गया। ईसाको सूलीपर लटकाया गया। गांधीजी गोलीके शिकार हुए। इन चारों महापुरुषोंकी मृत्यु अस्वाभाविक रूपसे हुई। परंतु शायद एक महान जीवनका यह उचित पटाक्षेप था। इनमेंसे सुकरात और ईसाके प्रति अपराधियों जैसा व्यवहार किया गया और उनकी मृत्यु क्रुद्ध समाजके हाथ हुई। श्रीकृष्णकी मृत्यु अज्ञात व्याधके हाथ हुई। गांधीजीकी मृत्यु शांतिके एक शत्रुके हाथों हुई और इसलिए हम कह सकते हैं कि यह मानवके भविष्यका भी शत्रु था।

उन्होंने भारतको एक राष्ट्रके रूपमें संगठित किया। उन्होंने उसे एक राष्ट्रभाषा दी। उन्होंने उसे एक नयी परंपरा दी। उन्होंने एक नयी शासन प्रणालीकी नींव रखी। उन्होंने स्वाधीनता संग्राममें राष्ट्रका नेतृत्व किया। उसकी स्वाधीनता प्राप्तिके समय भी उन्होंने उसका नेतृत्व किया। जब उनका स्वर्गारोहण हुआ तो उन्हें देशका पूर्ण सम्मान प्राप्त हुआ। जब उनका देहावसान हुआ तो वे एक सम्राटके समान थे। उनके एक ही शब्दसे भारतकी शक्तिशाली सरकार कांप उठती थी। उन्हें यह सब सफलता एक सच्चे प्रजातंत्रवादीके रूपमें प्राप्त हुई। उनकी सफलताका रहस्य उनकी वाणी और लेखनी है और यह सफलता उन्हें अपने शत्रुका बाल-बांका किये बिना ही मिल गई।

लेकिन यद्यपि इन राजनीतिक सफलताओंके कारण उन्हें संसारके राजनीतिक उद्धारकोंमें अग्रणी कहा जाता है, फिर भी उनकी नैतिक सफलताकी तुलनामें इनका कोई मूल्य नहीं। उन्होंने परतंत्रताकी शृङ्खलाओंमें जकड़े हुए मानवकी आत्माको मुक्ति दिलायी। उन्होंने भारतकी नारी-समाजको स्वतंत्रता दिलायी। उन्होंने अस्पृश्यताको दूर किया। उन्होंने लौह-शृंखलाओंसे जकड़े हुए हमारे समाजको मुक्ति दिलायी। उन्होंने परलोकके मायाजालमें फंसे हुए भारतका उद्धार किया। पिछले नौ सौ वर्षके विदेशी प्रभुत्वके कारण हमारे अंदर जो हीनभाव आ गया था, उसके अभिशापसे उन्होंने हमें मुक्त कराया। उन्होंने भारतियोंको फिरसे अपनी संस्कृतिपर गौरव अनुभव करना और अपनी शक्तिमें विश्वास रखना सिखलाया, जिसे वे खो चुके थे। इतना ही नहीं, उन्होंने भारतीयोंकी सोई हुई आत्मामें फिरसे नवजीवनका संचार किया। उन्होंने भारतकी अमर संस्कृतिके बिखरे हुए मोतियोंको पुनः एक लड़ीमें पिरोकर उसे विश्वविजयके पथपर अग्रसर किया। वे एक नवजीवनके संदेश-वाहक थे।

लेकिन इतना ही नहीं। उन्होंने अपने जीवनमें आर्य-संस्कृतिके मूलभूत सिद्धांतोंको कार्यान्वित करनेकी चेष्टा की और उन्हें पुनरुज्जीवित किया। उन्होंने अपने दीर्घकालीन जीवनमें मोह, माया, भय और क्रोधपर विजय प्राप्त करनेकी चेष्टा की। उनका जीवन नैतिक शक्तिका सजीव चित्र था। उन्होंने अपनेको

अहिंसाकी कसौटीपर खरा उतारा जिससे शत्रु स्वयं ही उनके पास प्रेमपूर्वक खिंच आये। उन्होंने सत्यकी खोजमें ही अपना सारा जीवन लगा दिया और उन्हें इसमें सफलता भी मिली। उन्होंने आसक्तिसे अपना कोई संबंध न रखा। वे विरक्त हो गये थे। वे जीवन भर पूरी शक्तिके साथ अपने कार्यमें जुटे रहे। उन्हें ऐश्वर्यका मोह न था और वे जिस उद्देश्यसे प्रेरित होकर अपना काम कर रहे थे, उसके लिए उन्हें बिना मांगे धन-दौलत मिल जाती थी। उन्हें धन-धान्य और ऐश्वर्यसे मोह न था और वे जीवनका वास्तविक अर्थ और उद्देश्य खूब समझते थे। वे ईश्वरमें लीन रहते थे। उनमें परमात्माका वास था।

जन्मसे लेकर अंतिम क्षणतक जितना समय वे जीवित रहे, केवल ईश्वरके साधनके रूपमें ही जीवित रहे। उनके जीवनका एक-एक क्षण ईश्वरकी पूजा और उपासनासे परिपूर्ण रहा और जब वे अपने कार्य कर चुके तो ईश्वरकी इच्छासे ही उनकी इहलोक लीला भी समाप्त हो गई। उनका अंत भी बड़ा चमत्कारपूर्ण और महान् था, क्योंकि समस्त राष्ट्र घोर निराशाके सागरमें डूब गया। संसार शोक और व्यथासे स्तब्ध रह गया तथा समयकी गति भी उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करनेके लिए रुक गयी।

वे सम्राट, देवता और योगी थे। मेरे लिए तो वे पिता और पथ-प्रदर्शक थे। हजारों ही दूसरे व्यक्तियोंकी भांति उनके बिना मुझे जीवन नीरस और अभावपूर्ण प्रतीत होता है।

❀

माननीय डाक्टर एम० ए० रऊफ

[बर्मा स्थित भारतीय राजदूत]

महात्मा गांधीकी दुःखांत मृत्युसे न केवल भारतवासियोंको बल्कि संसारके सभी शांति प्रेमी लोगोंको गहरा धक्का लगा है। आपकी बर्मा सरकार तथा बर्मी जनताके प्रति मैं बहुत ही कृतज्ञ हूं, क्योंकि आप लोगोंने हमारी भारी क्षतिके प्रति हार्दिक समवेदना एवं सहानुभूति प्रकट की है।

❀

बर्माके सभी भारतीय इस महान क्षतिपर शोक प्रकट कर रहे हैं। अन्य संप्रदाय तथा बर्मी सरकार भी शोक मना रही है। सभी झंडे नीचे कर दिये गये हैं। सभी संप्रदाय शोकाकुल हैं। हम प्रार्थना करते हैं कि जिस सांप्रदायिक घृणा और कटुताके फलस्वरूप हमारे महान नेताकी मृत्यु हुई है, भारत उसके प्रभावका अनुभव करे और हमारा देश सदाके लिए घृणाके इस मार्गको छोड़ दे। परमात्मा करे हमारा देश सद्भावना उत्पन्न करनेके प्रयत्नमें सफल हो।

विंग कमाण्डर माननीय रूपचंद

[अफगानिस्तान स्थित भारतीय राजदूत]

महात्मा गांधीके ही नेतृत्वमें भारत स्वतंत्र हुआ और उन्होंने इस देशमें शांति, सहनशीलता और भ्रातृभावके प्रति प्रगाढ़ श्रद्धा रखनेका उपदेश दिया है। स्वतंत्र भारतको एक सुदृढ़, लौकिक तथा प्रजातांत्रिक राष्ट्र बनानेके लिए तथा भारत-विभाजनके बाद होनेवाली घटनाओंका प्रायश्चित करनेके हेतु हमें महात्मा गांधीके मार्ग-प्रदीपके प्रकाशमें चलना है। धर्मको राजनीतिसे दूर रखकर संकुचित धर्मान्धता और धार्मिक पक्षपातको उखाड़ फेंक देना चाहिये।

माननीय सरदार के० एम० पनिक्कर

[चीन स्थित भारतीय राजदूत]

देशके स्वतंत्र होते ही हमारे राष्ट्रपर विपत्तियां और संकट छा गये थे। किंतु राष्ट्र-पिता बापूके बलिदानस्वरूप हत्याकांडकी दुर्घटनाने उस भयंकर युगको समाप्त कर दिया। उनके हत्याकांडने हमें तूफानोंसे बचा लिया और अब हम बापूके आदर्शानुसार अपने स्वतंत्र राष्ट्रके उज्ज्वल भविष्यकी आशा कर रहे हैं।

> "मेरा धर्म-सिद्धान्त है ईश्वरकी, और इसलिए मनुष्य जातिकी, सेवा। पर एक भारतवासीके नाते मैं भारतकी और एक हिन्दूके नाते भारतीय मुसलमानोंकी सेवा न करूँ तो न ईश्वरकी सेवा कर सकता हूँ, न मनुष्य जाति की। ऐच्छिक सेवाका अर्थ है शुद्ध प्रेम।"
>
> —गांधीजी

मान्नीय भगवत दयाल

[श्याम स्थित भारतीय विशेष प्रतिनिधि]

महात्मा गांधीका जीवन और उनके आदर्श भव्य, उज्ज्वल, पवित्र और श्रद्धेय थे। भारतके नेताओंने महात्मा गांधीसे जो ज्योति प्राप्त की है उसे कभी बुझने नहीं देना चाहिये। हमारे नेता उसे बुझने न देंगे। समस्त संसारके लिए महात्माजीके शांति और स्वतंत्रताके उद्देश्यसे हमारे नेता कभी विचलित न होंगे।

※

माननीय सैयद हुसेन

[मिश्र स्थित भारतीय राजदूत]

महात्मा गांधीके महाप्रयाणसे समस्त विश्वमें शोक और प्रशंसाके ऐसे भाव जग पड़े हैं, जिसकी तुलना और पूर्वघटना इतिहासमें उपलब्ध नहीं है। अध्यक्ष ट्रूमैन के पास जब यह शोक समाचार पहुँचा, उस समय मैं अमेरिकामें ही था। उदारताके देवदूत और महान नेताके प्रति वहाँ व्यापक और हार्दिक शोक प्रदर्शित किया गया। यह शोक तो समस्त विश्वमें ही व्याप्त था, महात्माजीका जीवन, कार्य और व्यक्तित्व तीनोंने मानव जातिकी चेतनापर ऐसी गहरी छाप डाली है, जिसकी स्मृति, स्फूर्ति और प्रेरणा युग-युगतक स्थायी रूपसे उत्तराधिकार-रूपी देन सी बनी रहेगी।

गांधीवादी साहित्य आज भी हजारों पुस्तकोंके रूपमें प्रकाशित होकर चारों ओर फैला हुआ है। आजके बादसे जीवनी लेखक और इतिहासकार महात्माजीके अद्भुत, अलौकिक, उच्च और बहुमुखी जीवन धारापर न जाने कितनी रचनाएँ करेगें। धर्म और आध्यात्मवादके इतिहासकारोंके लिए गांधीजीके आध्यात्मिक और धार्मिक जीवनका महत्व तथा उसका अध्ययन सदैव अक्षय और बहुमूल्य लेख्य सामग्री देता रहेगा। यह सर्वमान्य बात है कि मानवताके इतिहासमें बापूका व्यक्तित्व अत्यंत ऊँचा है। यह अवसर उनकी प्रशंसा करने और उनके व्यक्तित्वके चिरस्मरणीय महत्त्वोंको बतानेका नहीं है। ऐसे अवसरपर कोई भी व्यक्ति केवल श्रद्धाञ्जलि ही अर्पित कर सकता है।

महात्मा गांधीका बलिदान हिंदू-मुसलमानोंकी एकताकी वेदीपर हुआ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह बलिदान व्यर्थ न होगा। भारतीय एकता आदर्शकी धारणा

को उन्होंने अपने रक्तदानसे पवित्र रूपमें सर्वमान्य बना दिया। इस एकताके बिना न तो राष्ट्रमें शांति हो सकती है, न राष्ट्र सम्मान भाजन हो सकता है और न वहाँ वास्तविक स्वतंत्रता ही रह सकती है। तीस वर्षोंतक निरंतर महात्माजी राष्ट्रकी स्वतंत्रता और एकताके लिए कार्य करते रहे। स्वतंत्रता तो प्राप्त हुई, पर एकता अब भी प्राप्त करनी है, आज हमारा कर्तव्य है कि बापूके उस अपूर्ण लक्ष्यको पूरा करनेके लिए, उनके संदेशको कार्यान्वित करनेके लिए मातृभूमिकी सेवामें अपने जीवन समर्पित कर दें। जिस आदर्शको अपने शक्तिपूर्ण आचरण द्वारा गाँधीजीने जीवनमें व्यवहृत किया, उसका हमें अनुसरण करना चाहिये। यही उनके आदर्शोंके प्रति उनकी स्मृति और श्रद्धामें हमारा कर्तव्य होना चाहिये।

हजरत मूसा और महात्माजीके जीवनमें अद्भुत समानता है। हजरत साहबका भी विनाश उन्हींके अनुयायियों द्वारा तब किया गया, जब वे अपने लोगोंको जंगली कठिनाइयों और लम्बी-लम्बी विपत्तियोंसे पार ले जा चुके थे। इसी प्रकार परतंत्रताके बंधनसे मुक्त कर चुकनेपर बापूकी हत्या भी उन्हींके एक व्यक्ति द्वारा हुई। गुरू नानकके साथ भी उनकी एक रोचक समता है, उनकी मृत्युके बाद जिस प्रकार सभीने उन्हें अपने संप्रदायका घोषित किया और उनकी अधि-दैहिक क्रिया अपनी अपनी परम्पराके अनुसार की उसी प्रकार गांधीजीकी स्मृतिमें सभी धर्मवालोंने उनके प्रति अपने अपने मतके अनुसार श्रद्धाञ्जलि अर्पित की तथा भगवानसे प्रार्थना की।

महात्माजीमें देवदूत, उद्धारक और शहीद तीनोंकी चारित्रिक विशेषता एकीभूत थी। वे इतिहासमें चिरकालतक अमर रहेंगे। हम आशा करते हैं कि यह बलिदान भारत-वासियोंको निष्कलुष करते हुए पतनसे बचा लेगा और हमें विश्वास है कि उनकी आत्मा उस भारतकी सेवाके लिए, जिसे वे इतना प्यार करते थे और जिसके लिए उन्होंने सब कुछ समर्पित कर दिया, हमें सदा प्रेरणा देती और पथ-प्रदर्शन करती रहेगी।

बापू ईश्वरकी गोदमें विश्राम ले रहे हैं, वह मरे नहीं, उनकी अमर-आत्मा हममें लीन है—किंतु उनकी सद्भावनाएँ अब भी हमारी ओर हैं। याद रहे, हमारे हाथों कोई ऐसा काम न हो, जो उनकी आत्माको दुःख पहुँचाये।

❀

"जो सत्य और अहिंसाका उपासक है, भारत और जीवमात्र-की सेवा करना चाहता है वह सुस्त नहीं रह सकता। जो समयका नाश करता है वह सत्य, अहिंसा और सेवाका भी नाश करता है।"

—गांधीजी

❀

माननीय दीवान चमनलाल

[तुर्की स्थित भारतीय राजदूत]

लकुटिया लेकर चलनेवाला वह छोटासा व्यक्ति, जो शांति और भ्रातृत्वका संदेश प्रचारित करता था जिसकी प्रतीक्षा यह पीड़ित संसार बहुत दिनोंसे कर रहा था, चला गया। इस राष्ट्रको महान और शक्तिशाली बनानेमें उसने अपनी आहुति दे डाली। हममेंसे प्रत्येक छोटा बड़ा व्यक्ति दुःखी बालककी भाँति अपनी शिकायतें लेकर प्रेमपूर्ण पथ-प्रदर्शनके लिए उनके पास जा सकता था। उन्होंने किसीको निराश नहीं किया और न राष्ट्रको निराश किया। उन्होंने हमें स्वतंत्र मनुष्यकी दृष्टिसे देखना सिखाया। यह देश और इसका प्रत्येक व्यक्ति बापूका चिरऋणी रहेगा।

माननीय वी० के० कृष्ण मेनन

[इंगलैंड स्थित भारतीय हाई कमिश्नर]

सिद्धांतोंको माननेमें जिनके लिए महात्मा गांधी जिये और मरे, अपना जीवन खपा देना ही उनके लिए हमारी सबसे बड़ी श्रद्धाञ्जलि होगी।

माननीय आसफ अली

[अमेरिका स्थित भारतीय राजदूत]

भारतीय इतिहासकी दुर्घटनाओंमें महात्माजीका जो विश्वके सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति थे, निधन भीषणतम घटना है। यह विश्वके सबसे बड़े और सबसे श्रेष्ठ सत्पुरुषका उठ जाना है। सत्य, प्रेम और अहिंसाके हमारे युगमें वे सबसे अधिक देदीप्यमान प्रतीक थे। उनकी आत्मा अमर है तथा युग-युगतक पथ-भ्रष्ट मानवताके अंधकाराच्छन्न पथ वह ज्योति विकीर्ण करती रहेगी।

आजीवन उनके साथ रहनेके कारण, व्यक्तिगत रूपसे, इस असह्य शोकसे मैं स्तब्ध हो गया हूं। हमारा यह कर्त्तव्य हो गया है कि उस संदेश और कार्यकी पूर्तिमें अपने जीवनका अर्पण कर दें जिसके लिए वे जिये और मरे। उनकी स्मृतिमें यही सच्ची श्रद्धांजलि हो सकती है।

गांधोजीका संदेश था—सावधानी और अविचल लगनके साथ सद्विचार, सत्कर्म और सद्वाणीकी साधनामें निरंतर प्रयत्न करते रहना तथा समस्त मानवताके लिए शांतिपूर्ण उपायों द्वारा शांतिस्थापना करना। युग-युगसे मानवता जिस आदर्शके लिए तृषित और क्षुधित थी, जिस आकांक्षाके लिए न जाने कबसे मानव उत्सुक था, महात्माजीने उसे साकार कर दिया। मानवमें जो कुछ सत और श्रेष्ठ है, सबके वे मूर्तिमान प्रतीक थे। उनके जीवनका उदाहरण और उनके शब्दों द्वारा विवेक और चारित्रिक पवित्रता भावी युगके ज्ञानकोशको संपन्न करेगा। विश्वके समस्त अतीत धर्मगुरुओं और उपदेशकोंकी वाणीके साथ मिलकर चिरकालतक उनके शब्द प्रतिध्वनित होते रहेंगे और कोने-कोनेमें गूँजते रहेंगे।

❀

माननीया विजायलक्ष्मी पंडित

[सोवियत रूस स्थित भारतीय राजदूत]

बापू हम लोगोंके इतने निकट थे कि उनकी मृत्युका समाचार सुनकर मैं हतबुद्धि हो गयी हूँ। कुछ कहते नहीं बनता। हमारे संकट की गुत्थियां कौन सुलझायेगा। यों तो उनकी मृत्युसे संसारका महानतम व्यक्ति खो गया किन्तु मुझे तो ऐसा जान पड़ रहा है कि किसीने मुझे प्राण विहीन कर दिया। मैं इतना ही कह सकती हूँ कि जिस ध्येयके लिये उनका बलिदान हुआ उसे हमारे देशवासी पूरा करेंगे।

"मैं मानसिक पहलूको ज्यादा महत्त्व देता हूँ। आदमी जैसा सोचता है वैसा बनता है। विचार जबतक आचरणके रूपमें प्रकट नही होता वह कभी पूर्ण नहीं बनता। आचरण आदमीके विचारको मर्यादित करता है। जहाँ विचार और आचारके बीच पूरा पूरा मेल होता है वहीं जीवन भी पूर्ण और स्वाभाविक बनता है।

—गांधीजी

❀

विधि-निर्मित शुक्रवार

२९ जनवरीको सारे दिन गांधीजीको इतना ज्यादा काम रहा कि दिनके आखिरमें उन्हें खूब थकान मालूम होने लगी। कांग्रेस-विधानके मसविदेकी तरफ इशारा करते हुए, जिसे तैयार करनेकी जिम्मेदारी उन्होंने ली थी, उन्होंने आभासे कहा—"मेरा सिर घूम रहा है। फिर भी मुझे इसे पूरा करना ही होगा। मुझे डर है कि रातको देरतक जगना होगा।"

आखिरकार वे ९। बजे रातको सोनेके लिए उठे। एक लड़कीने उन्हें याद दिलाया कि आपने हमेशाकी कसरत नहीं की है। "अच्छा, तुम कहती हो, तो मैं कसरत करूँगा"—गांधीजीने कहा और वे दोनों लड़कियोंके कंधोंपर, जिमनाशियमके पेरेलल-बारकी तरह, शरीरको तीन बार उठानेकी कसरत करनेके लिए बढ़े।

हमेशाकी तरह काम

बिस्तरपर लेटनेके बाद गांधीजी आम तौरपर अपने हाथ-पाँव और दूसरे अंग सेवा करनेवालोंसे दबवाते थे। ऐसा करवानेमें उन्हें अपना नहीं बल्कि सेवा करनेवालोंकी भावनाओंका ही ज्यादा ख्याल रहता था। मनसे तो उन्होंने अपने आपको इस बातसे एक अरसेसे उदासीन बना लिया था, हालांकि मैं जानता हूँ कि उनके शरीरको इन छोटी-मोटी सेवाओंकी जरूरत थी। इससे उन्हें दिनभरके कुचल डालनेवाले कामके बोझके बाद मनको हलका करनेवाली बातचीत और हँसी-मज़ाकका थोड़ा मौका मिलता था। अपने मजाकमें भी वे हिदायतें जोड़ देते थे। गुरुवारकी रातको वे आश्रमकी एक महिलासे बातचीत करने लगे, जो संयोगसे मिलने आ गयी थी। उन्होंने उसकी तन्दुरुस्ती अच्छी न होनेके कारण उसे डाँटा और कहा कि अगर रामनाम तुम्हारे मन-मंदिरमें प्रतिष्ठित होता तो तुम बीमार नहीं पड़तीं। उन्होंने आगे कहा—"लेकिन उसके लिए श्रद्धाकी जरूरत है।"

उसी शामको प्रार्थनाके बाद प्रार्थना-सभामें आये हुए लोगोंमेंसे एक भाई उनके पास दौड़ता हुआ आया और कहने लगा कि आप २ फरवरीको वर्धा जा रहे हैं, इसलिए मुझे अपने हस्ताक्षर दे दीजिये। गांधीजीने पूछा—"यह कौन

कहता है ?" हस्ताक्षर मांगनेवाले हठी भाईने कहा—"अखबारोंमें यह छपा है।" गांधीजीने हँसते हुए कहा:—"मैंने भी गांधीके बारेमें वह खबर देखी है। लेकिन मैं नहीं जानता, वह 'गांधी' कौन है।"

एक दूसरे आश्रमवासी भाईसे बात करते हुए गांधीजीने वह राय फिर दोहरायी जो उन्होंने प्रार्थनाके बाद अपने भाषणमें कही थी—"मुझे गड़बड़ीके बीच शांति, अँधेरेमें प्रकाश और निराशामें आशा पैदा करनी होगी।" बातचीतके दौरानमें "चलती लकड़ियों" का जिक्र आनेपर गांधीजीने कहा—"मैं लड़कियोंको मेरी चलती लकड़ियाँ बनने देता हूँ, लेकिन दरअसल मुझे उनकी जरूरत नहीं है। मैंने लम्बे समयसे अपने आपको इस बातका आदी बना लिया है कि किसी बातके लिए किसीपर निर्भर न रहा जाय। लड़कियाँ अपना पिता समझकर मेरे पास आती हैं और मुझे घेर लेती हैं। मुझे यह अच्छा लगता है। लेकिन सच पूछा जाय, तो मैं इस बारेमें बिलकुल उदासीन हूँ।" इस तरह यह छोटी-सी बातचीत तबतक चलती रही, जबतक गांधीजी सो न गये।

३० जनवरीको सुबह गांधीजी हमेशाकी तरह ३॥ बजे प्रातः स्मरणीय प्रार्थनाके लिए उठे। प्रार्थनाके बाद वे काम करने बैठे और थोड़ी देर बाद दूसरी बार थोड़ीसी नींद लेनेके लिए लेटे।

आठ बजे उनका मालिशका वक्त था। मेरे कमरेमें से गुजरते हुए उन्होंने कांग्रेसके नये विधानका मसविदा मुझे दिया, जो देशके लिए उनका आखिरी वसीयतनामा था। इसका कुछ हिस्सा उन्होंने पिछली रातको तैयार किया था। मुझसे उन्होंने कहा कि इसे "पूरी तरह" दोहरा लो। इसमें कोई विचार छूट गया हो, तो उसे लिख डालो, क्योंकि मैंने इसे बहुत थकावटकी हालतमें लिखा है।"

मालिशके बाद मेरे कमरेमेंसे निकलते हुए उन्होंने पूछा कि तुमने उसे पूरा पढ़ लिया या नहीं। और फिर कहा कि नोआखालीके अपने अनुभव और प्रयोगके आधारपर तुम इस विषयमें एक टिप्पणी लिखो कि मद्रासके सिरपर झूमते हुए अन्न-संकटका किस तरह सामना किया जा सकता है। उन्होंने कहा—"वहाँका खाद्य-विभाग हिम्मत छोड़ रहा है। मगर मेरा खयाल है कि मद्रास जैसे प्रांतमें, जिसे प्रकृतिने नारियल, ताड़, मूँगफली और केला इतनी ज्यादा तादादमें दिये हैं— कई किस्मकी जड़ों और कन्दोंकी तो बात ही जाने दो—अगर लोग सिर्फ अपनी खाद्य सामग्रीका सँभालकर उपयोग करना जानें तो उन्हें भूखों मरनेकी जरूरत नहीं है।" मैंने उनकी इच्छाके अनुसार टिप्पणी लिखनेका वचन दिया। इसके बाद वे नहाने चले गये। जब वे नहाकर लौटे, तब उनके बदनपर काफी ताजगी नजर आती थी। पिछली रातकी थकावट मिट गयी थी और हमेशाकी तरह प्रसन्नता

उनके चेहरेपर चमक रही थी। उन्होंने आश्रमकी लड़कियोंको उनकी कमजोर शारीरिक बनावटके लिए डाँटा। जब किसीने उनसे कहा कि वाहन न मिलनेके कारण अमुक जगह नहीं गयी, तो उन्होंने तुरंत कड़ाईसे कहा—"तुम पैदल क्यों न चली गयी ?" गांधीजीकी यह कड़ाई कोरी कड़ाई ही नहीं थी। क्योंकि, मुझे याद है कि एक बार जब आंध्र देशके अपने एक दौरेमें हमें ले जानेवाली मोटरोंका पेट्रोल खत्म हो गया, तो उन्होंने सारे कागजात और लकड़ीकी हलकी नांद लेकर वहाँसे १३ मील दूर दूसरे स्टेशनतक पैदल चलनेके लिए तैयार होनेको हमसे कहा था।

उनका आखिरी वसीयतनामा

बंगाली लिखनेका अपना रोजानाका अभ्यास पूरा करनेके बाद गांधीजीने साढ़े नौ बजे अपना सबेरेका भोजन किया। अपनी पार्टीको तितर-बितर करनेके बाद जब वे पूर्व-बंगालके गाँवोंमें अपनी "करो या मरो" की प्रतिज्ञा पूरी करनेके लिए नंगे पाँवों श्रीरामपुर गये, तबसे वह नियमित रूपसे बंगालीका अभ्यास करते रहे हैं। जब मैं विधानके मसविदेको दोहरानेके बाद उनके पास ले गया, तब वे भोजन कर ही रहे थे। उनके भोजनमें ये चीजें शामिल थीं—बकरीका दूध, पकायी हुई और कच्ची भाजियाँ, संतरे और अदरखका काढ़ा, खट्टे नीबू और 'घृत कुमारी'। उन्होंने अपनी विशेष सतर्कतासे मसविदेमें बढ़ायी हुई और बदली हुई बातोंको एक-एक करके देखा और पंचायती नेताओंकी संख्याके बारेमें जो गलती रह गयी थी, उसे सुधारा।*

इसके बाद मैंने गांधीजीको डॉ० राजेन्द्र प्रसादसे हुई अपनी मुलाकातकी विस्तृत रिपोर्ट दी। डॉ० राजेन्द्रप्रसादकी तबीयत अच्छी नहीं थी। इसलिए गांधीजीने कल उनके स्वास्थ्यके बारेमें पूछनेके लिए मुझे उनके पास भेजा था। मैंने गांधीजीको पूर्व-बंगालके बारेमें ताजा से ताजा खबर भी सुनायी, जो मुझे डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जीने कल शामको मिलनेपर बतायी थी। इस परसे नोआखालीके बारेमें चर्चा चली। मैंने उनके सामने व्यवस्थित रीतिसे नोआखाली छोड़नेकी बात रखी। लेकिन गांधीजीका दृष्टिकोण साफ और मजबूत था। उन्होंने कहा—"जैसे हम कार्यकर्त्ताओंको 'करना या मरना' है, उसी तरह हमें अपने लोगोंको भी आत्म-सम्मान, इज्जत और मजहबी आजादीके हकको बचानेके लिए 'करने या मरने' को तैयार करना है। हो सकता है कि आखिरमें थोड़े ही लोग बचें। लेकिन कमजोरीमेंसे ताकत पैदा करनेका इसके सिवा दूसरा कोई रास्ता नहीं है। क्या हथियारोंकी लड़ाईमें भी बलवा करनेवाले या कमजोर सिपाहियोंकी कतारें मार नहीं दी जातीं ? तब अहिंसक लड़ाईमें इससे दूसरा कैसे हो सकता है ?" उन्होंने आगे कहा—"तुम नोआखालीमें जो कुछ कर रहे हो, वही सही रास्ता है। तुमने मौतका डर भगा दिया है और लोगोंके दिलोंमें अपना स्थान बनाकर

उनका प्यार पा लिया है। प्यार और परिश्रमके साथ ज्ञानको जोड़ना जरूरी है। तुमने यही किया है। अगर तुम अकेले भी अपना काम पूरी तरह और अच्छी तरह करो, तो तुम्हीं सबके लिए काफी हो। तुम जानते हो कि यहाँ मुझे तुम्हारी बड़ी जरूरत है। मुझपर कामका इतना बोझ है। और मैं बहुत कुछ दुनियाको भी देना चाहता हूँ। लेकिन तुम्हारे बाहर रहनेसे मैं ऐसा नहीं कर सकता। लेकिन मैंने अपने आपको इसके लिए कड़ा बना लिया है। नोआखालीका तुम्हारा काम इससे ज्यादा महत्वका है।" इसके बाद उन्होंने मुझे बताया कि अगर सरकार अपना फर्ज पूरा करनेमें चूके, तो गुण्डोंके साथ कैसे निपटना चाहिये।

उनकी अन्तिम चिन्ता

दोपहरको थोड़ी झपकी लेनेके बाद गांधीजी श्री सुधीर घोषसे मिले। श्री घोषने अन्य बातोंके अलावा 'लंदन टाइम्स' की कतरन और एक अंग्रेज मित्रके खतके कुछ हिस्से पढ़कर उन्हें सुनाये। इनमें लिखा था कि किस तरह कुछ लोग बड़ी तत्परताके साथ पंडित नेहरू और सरदार पटेलके बीच फूट डालनेकी कोशिश कर रहे हैं। वे सरदार पटेलपर सम्प्रदायवादी होनेका दोष लगाते हैं और पण्डित नेहरूकी तारीफ करनेका दिखावा करते हैं। गांधीजीने कहा कि मैं इस तरहकी हलचलसे वाकिफ हूँ और उसपर गहराईसे विचार कर रहा हूं। वह बोले कि अपनी प्रार्थना-सभाके एक भाषणमें मैं पहले ही इसके बारेमें कह चुका हूँ, जो 'हरिजन'में छप गया है। मगर मुझे लगता है कि इसके लिए कुछ और ज्यादा करनेकी जरूरत है। मगर सोच रहा हूँ कि मुझे क्या करना चाहिये।

सारे दिन लोग लगातार मुलाकात करनेके लिए आते रहे। उनमें दिल्लीके मौलाना लोग भी थे। उन्होंने गांधीजीके वर्धा जानेके बारेमें अपनी सम्मति दे दी। गांधीजीने उनसे कहा कि मैं सिर्फ थोड़े दिनोंके लिए ही यहाँसे गैरहाजिर रहूंगा और अगर भगवानकी कुछ और ही मर्जी न हुई और कोई आकस्मिक घटना न घटी,तो ११ तारीखको वर्धामें स्वर्गीय सेठ जमनालालजीकी पुण्य-तिथि मनानेके बाद बहुत करके १२ वीं तारीखको मैं लौट आऊँगा।

एक बात और थी, जिसके बारेमें मुझे गांधीजीसे सलाह लेनी थी। मैंने उनसे पूछा—"बापू, मुसलमान औरतोंमें अपने कामको आसानीसे चलानेके लिए अगर ज्यादा नहीं, तो थोड़े ही वक्तके लिए...को नोआखाली ले जाऊँ? जरूरी छुट्टीके लिए मैं...से प्रार्थना करूँगा।" "खुशीसे"—उन्होंने जवाब दिया। ये आखिरी शब्द थे, जो मुझे सुनने थे।

साढ़े चार बजे आभा उनका शामका खाना लायी। इस धरतीपर उनका यह आखिरी भोजन था, जिसमें करीब करीब सबेरेकी ही सब चीजें

शामिल थीं। उनकी आखिरी बैठक सरदार पटेलके साथ हुई। जिन विषयोंपर चर्चा हुई, उनमेंसे एक मंत्रिमंडलकी एकताको तोड़नेके लिए सरदारके खिलाफ किया जानेवाला गन्दा प्रचार था। गांधीजीकी यह साफ राय थी कि हिंदुस्तानके इतिहासमें ऐसे नाजुक मौकेपर मंत्रिमंडलमें किसी तरहकी फूट पदा होना बड़ी दुःखपूर्ण बात होगी। सरदारसे उन्होंने कहा कि आज मैं इसीको अपनी प्रार्थना-सभाके भाषणका विषय बनाऊँगा। प्रार्थनाके बाद पण्डितजी मुझसे मिलेंगे; मैं उनसे भी इसके बारेमें चर्चा करूँगा। आगे चलकर उन्होंने कहा कि अगर जरूरी हुआ तो मैं २ तारीखको अपना वर्धा जाना मुल्तवी कर दूँगा और तबतक दिल्ली नहीं छोड़ूँगा, जबतक दोनोंके बीच फूट डालनेकी कोशिशके इस भूतका पूरी तरह खात्मा न कर दूं।

प्रार्थना-सभाको

और इस तरह चर्चा चलती रही। बेचारी आभा अभी भी बाधा देनेका साहस नहीं कर रही थी, इस बातको जानते हुए कि बापू वक्तकी पाबन्दीको, और खासकर प्रार्थनाके बारेमें उसकी पाबन्दीको, कितना महत्त्व देते हैं। उसने आखिरमें निराश होकर उनकी घड़ी उठायी और जैसे इस बातका इशारा करते हुए उनके सामने रख दी कि प्रार्थनाको देर हो रही है।

प्रार्थना-मैदानमें जानेके पहले ज्योंही गांधीजी गुसलखानेमें जानेके लिए उठे, वे बोले—"अब मुझे आपसे अलग होना पड़ेगा।" रास्तेमें वे उस शामको अपनी "चलती लकड़ियों" आभा और मनुके साथ तबतक हँसते और मजाक करते रहे जबतक वे उठकर प्रार्थना-मैदानकी सीढ़ियोंपर नहीं पहुंच गये।

दिनमें जब दोपहरके पहले आभा गांधीजीके लिए कच्चे गाजरोंका रस लायी, तब उन्होंने उलाहना देते हुए कहा—"तो तुम मुझे ढोरोंका खाना खिलाती हो?" आभाने जवाब दिया—"बा तो इसे घोड़ोंकी खुराक कहती थीं।" उन्होंने पूछा—"जिस चीजको दूसरा पूछेगा भी नहीं, उसे स्वादसे खाना क्या मेरे लिए बड़ी बात नहीं है?" और हँसने लगे।

आभाने कहा—"बापू, आपकी घड़ीको जरूर यह लगता होगा कि आप उसकी परवाह नहीं करते। आप उसकी तरफ देखते भी नहीं।" गांधीजीने तुरंत जवाब दिया—"मैं क्यों देखूँ, जब तुम दोनों मुझे ठीक समय बता देती हो?" लड़कियोंमेंसे एकने पूछा—"लेकिन आप तो टाइम बतानेवाली लड़कियोंकी तरफ नहीं देखते।" बापू फिर हँसने लगे। पाँव साफ करते हुए उन्होंने आखिरी बात कही "मैं आज १० मिनट देरसे पहुंचा हूं। देरसे आनेमें मुझे नफरत होती है। मैं प्रार्थनाकी जगहपर ठीक पाँच बजे पहुंचना पसंद करता हूं।" यहाँ बातचीत खतम हो गयी। क्योंकि "चलती लकड़ियों" के साथ गांधीजीकी यह शर्त थी कि प्रार्थना मैदानके

अहातेमें पहुंचते ही सारा मजाक और बातचीत बंद हो जानी चाहिये—मनमें प्रार्थनाके विचारोंके सिवा दूसरी कोई चीज नहीं होनी चाहिये। मन प्रार्थनामय हो जाना चाहिये।

"राम ! राम !"

जब गांधीजी प्रार्थना-सभाके बीचसे रस्सियोंसे घिरे रास्तेमें चलने लगे, उन्होंने प्रार्थनामें शामिल होनेवाले लोगोंके नमस्कारोंका जवाब देनेके लिए लड़कियोंके कंधोंपरसे अपने हाथ उठा लिये। एकाएक भीड़मेंसे कोई दाहिनी ओरसे भीड़को चीरता हुआ उस रास्तेपर आया। छोटी मनुने यह सोचा कि वह आदमी बापूके पाँव छूनेको आगे बढ़ रहा है। इसलिए उसने उसको ऐसा करनेके लिए झिड़का, क्योंकि प्रार्थनाको पहले ही काफी देर हो चुकी थी। उसने रास्तेमें आनेवाले आदमीका हाथ पकड़कर उसे रोकनेकी कोशिश की, लेकिन उसने जोरसे मनुको धक्का दिया, जिससे उसके हाथकी आश्रम-भजनावली, माला और बापूका पीकदान नीचे गिर गये। ज्योंही वह बिखरी हुई चीजोंको उठानेके लिए झुकी, वह आदमी बापूके सामने खड़ा हो गया—इतना नजदीक खड़ा था कि पिस्तोलसे निकली हुई गोलीका खोल बादमें बापूके कपड़ोंकी पर्तमें उलझा हुआ मिला। सात कारतूसोंवाली ऑटोमेटिक पिस्तोलसे जल्दी जल्दी तीन गोलियाँ छूटीं। पहली गोली नाभीसे ढाई इंच ऊपर और मध्य-रेखासे साढ़े तीन इंच दाहिनी तरफ पेटकी दाहिनी बाजूमें लगी। दूसरी गोली मध्य-रेखासे एक इंचकी दूरीपर दाहिनी तरफ घुसी और तीसरी गोली छातीकी दाहिनी तरफ लगी। पहली और दूसरी गोली शरीरको पारकर पीठसे बाहर निकल आयी। तीसरी गोली उनके फेफड़ेमें ही रुकी रही। पहले वारमें उनका पाँव जो गोली लगनेके वक्त आगे बढ़ रहा था, नीचे आ गया। दूसरी गोली छोड़ी गयी तबतक वह अपने पाँवोंपर ही खड़े थे और उसके बाद वह गिर गये। उनके मुँहसे आखिरी शब्द "राम-राम" निकले। उनका चेहरा राखकी तरह सफेद पड़ गया। उनके सफेद कपड़ोंपर गहरा सुर्ख धब्बा फैलता हुआ दिखायी पड़ा। उनके हाथ जो सभाको नमस्कार करनेके लिए उठे थे, धीरे धीरे नीचे आ गये, एक हाथ आभाके गलेमें अपनी स्वाभाविक जगहपर गिरा। उनका लड़खड़ाता हुआ शरीर धीरेसे ढुलक गया। और सिर्फ तभी घबरायी हुई मनु और आभाने महसूस किया कि क्या हो गया है।

मैं दूसरे दिन नोआखाली जानेकी अपनी तैयारी पूरी करनेके लिए शहर गया था और वहाँसे तुरत ही लौटा था। प्रार्थना-सभाके मैदानतक बनी हुई पत्थरकी कमानीके नीचे भी मैं नहीं पहुँच पाया था कि श्री चन्द्वानी सामनेसे दौड़ते हुए आये। उन्होंने चिल्लाकर कहा—"डाक्टरको फोन करो। बापूको गोली मार दी गयी है।" मैं पत्थरकी तरह जहाँका तहाँ खड़ा रह गया, जैसे

कोई बुरा सपना देखा हो। मशीनकी तरह मैंने किसीके द्वारा डाक्टरको फोन करवाया।

अवसान

हर एकको इस घटनासे एक धक्का लगा। डा० राज सब्बरवालने, जो उनके पीछे आयी, गांधीजीके सिरको धीरेसे अपनी गोदमें रख लिया। उनका काँपता हुआ शरीर डाक्टरके सामने औंधा लिटा हुआ था और आँखें अधमुँदी थीं। हत्यारेको बिड़ला-भवनके मालीने मजबूतीसे पकड़ लिया था। दूसरोंने भी उसका साथ दिया और थोड़ी खींचतानके बाद उसे काबूमें कर लिया गया। बापूका शांत और ढीला पड़ा हुआ शरीर दोस्तोंके द्वारा अंदर लाया गया और उस चटाईपर रखा गया, जिसपर बैठकर वे काम किया करते थे। मगर कुछ इलाज करनेसे पहले ही घड़ीकी आवाज बंद हो चुकी थी। उन्हें भीतर लानेके बाद उनको जो छोटे चम्मच भर शहद और गरम पानी पिलाया गया, उसे भी वे पूरी तरह निगल न सके। करीब करीब फौरन ही उनका अवसान हो गया।

डाक्टर सुशीला बहावलपुर गयी हुई थीं, जहां बापूने उसे दयाके मिशनपर भेजा था। डाक्टर भार्गव, जिन्हें बुलावा भेजा था, आये और 'एड्रेनलिन' के लिए डाक्टर सुशीलाकी संकटके समय काममें आनेवाली दवाइयोंकी संदूकको पागलकी तरह तलाश करने लगे। मैंने उनसे दलील की कि वह उस दवाईको ढूँढनेकी मेहनत न उठायें, क्योंकि गांधीजीने कई बार हमसे कहा है कि उनकी जान बचानेके लिए भी कोई निषिद्ध दवाई उनको न दी जाय। जैसे जैसे बरस बीतते गये, उन्हें ज्यादा विश्वास होता गया कि सिर्फ राम-नाम ही उनकी और दूसरोंकी सारी बीमारियोंको दूर कर सकता है। थोड़े ही दिनों पहले अपने उपवासके दरमियान उन्होंने यह सवाल पूछकर साइंसकी कमियोंके बारेमें अपना मत पक्का कर दिया था कि गीतामें जो यह कहा गया है कि 'एकांशेन स्थितो जगत्'—उसके एक अंशसे सारा संसार टिका हुआ है—का क्या मतलब है? रामनामकी सब बीमारियोंको दूर करनेकी शक्तिपर अपने विश्वासके बारेमें बोलते हुए एक आहके साथ गांधीजीने घनश्यामदासजीसे कहा था—"अगर मैं उसे अपने जीते जी साबित नहीं कर सकता, तो वह मेरी मौतके साथ ही खत्म हो जायगा।" जैसा आखिरमें हुआ। डाक्टर सुशीलाकी संकटकालीन दवाईयोंकी पेटीमें एड्रेनलिन नहीं मिला, संयोगिक एड्रेनलिनकी जो एकमात्र शीशी सुशीलाने कभी ली थी, वह नोआखालीके काजीरखिल कैम्पमें छूट गयी थी। गांधीजी उसकी इतनी कम परवाह करते थे।

उनके साथियोंमें सबसे पहले सरदार वल्लभभाई पटेल आये। वह गांधीजीके पास बैठे और नाड़ी देखकर उन्होंने ख्याल कर लिया कि वह अभी

भी धीरे धीरे चल रही है। डा० जीवराज मेहता कुछ मिनट बाद पहुँचे। उन्होंने नाड़ी और आँखोंकी परीक्षा की और उदास और दुःखी होकर सिर हिलाया। लड़कियाँ सिसक उठीं। लेकिन उन्होंने तुरंत दिलको कड़ा किया और रामनाम बोलने लगीं। मृत शरीरके पास सरदार चट्टानकी तरह अचल बैठे। उनका चेहरा उदास और पीला पड़ गया था। इसके बाद पंडित नेहरू आये और बापूके कपड़ोंमें अपना मुँह छिपाकर बच्चोंकी तरह सिसकने लगे। इसके बाद देवदास और डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद आये। तब बापूके पुराने रक्षकोंमेंसे बचे हुए श्री जयरामदास, राजकुमारी अमृतकुँवर और आचार्य कृपालानी आये। जब कुछ देर बाद लार्ड माउण्टबेटन आये, उस समय बाहर लोगोंकी भीड़ इतनी बढ़ गयी थी कि वह बड़ी मुश्किलसे अन्दर आ सके। कड़े दिलके योद्धा होनेके कारण उन्होंने एक पल भी नहीं गँवाया, और वे पंडित नेहरू और मौलाना आजाद साहबको दूसरे कमरेमें ले गये और महान दुर्घटनासे पैदा होनेवाली समस्याओंपर अपने राजनीतिक दिमागसे विचार करने लगे। एक सुझाव यह रखा गया कि मृत शरीरको मसाला देकर कुछ समयके लिए सुरक्षित रखा जाय। लेकिन इस बारेमें गांधीजीके विचार इतने साफ और मजबूत थे कि बीचमें पड़ना मेरे लिए जरूरी और पवित्र फर्ज हो गया। मैंने उनसे कहा कि बापू मरनेके बाद पार्थिव शरीरको पूजनेका कड़ा विरोध करते थे। उन्होंने मुझसे कई बार कहा था : "अगर तुम मेरे बारेमें ऐसा होने दोगे, तो मैं मौतमें भी तुम्हें कोसूँगा। मैं जहाँ कहीं मरूँ मेरी यह इच्छा है कि बिना किसी दिखावे या झमेलेके मेरा दाह-संस्कार किया जाय।" डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद, श्री जयरामदास और डॉ० जीवराज मेहताने मेरी बातका समर्थन किया। इसलिए मृत शरीरको मसाला देकर रखनेका विचार छोड़ दिया गया। बाकी रातमें गीताके श्लोक और सुखमणि साहबके भजन मीठे रागमें गाये जाते रहे और बाहर दुःखसे पागल बने लोगोंकी भीड़ दर्शनके लिए कमरेके चारों तरफ इकट्ठी होती रही। आखिरकार मृत शरीरको ऊपर ले जाकर बिड़ला-भवनके छज्जेपर रखना पड़ा, ताकि सब लोग दर्शन कर सकें।

अलविदा !

सुबह जल्दी ही शरीरको हिंदू विधिके अनुसार नहलाया गया और कमरेके बीच फूलोंसे ढककर रख दिया गया। विदेशी राजदूत सुबह थोड़ी देर बाद आये और उन्होंने बापूके चरणोंपर फूलकी मालाएं रखकर अपनी मौन श्रद्धांजलि अर्पण की।

अवसानके दो दिन पहले ही गांधीजीने कहा था : "मेरे लिए इससे प्यारी चीज क्या हो सकती है, कि मैं हँसते-हँसते गोलियोंकी बौछारका सामना कर सकूँ ?" और मालूम होता है, भगवानने उन्हें यह वरदान दे दिया।

११ बजे दिनको हमारे सबके अंतिम प्रणाम करनेके बाद मृत शरीर अर्थीपर रखा गया। उस समयतक रामदास गांधी हवाई जहाजमें नागपुरसे आ पहुंचे थे। डॉ० सुशीला नय्यर सबसे आखिरमें पहुंची, जब अर्थी रवाना ही होनेवाली थी। उसे इस बातका बड़ा दुःख था कि बापूके आखिरी समयमें वह उनके पास नहीं रह सकी। लेकिन इस बातके लिए उसने ईश्वरको धन्यवाद दिया कि वह अंतिम दर्शनके समय पहुंच गयी।

उस रात डॉ० सुशीला बार-बार बहुत दुःखी होकर चिल्लाती रही: "आखिर मुझे यह सजा क्यों?" देवदासने उसे आश्वासन देनेकी कोशिश की: "यह सजा नहीं है। बापूके आखिरी मिशनको पूरा करनेमें जुटे रहना बड़े गौरवकी बात है—यह बापूका किसीको सौंपा हुआ आखिरी काम था।" यह बापूकी एक विशेषता थी कि जिन्हें उन्होंने बहुत दिया था, उनसे वे ज्यादा और ज्यादाकी आशा रखते थे।

जब मैं बापूकी अपार शांति, क्षमा और सहिष्णु दयासे भरा अचल और उदास चेहरा ध्यानसे देखने लगा, तब मेरे दिमागमें उस समयसे लेकर—जब मैं कालेजके विद्यार्थीके रूपमें चौंधियानेवाले सपनों और उज्ज्वल आशाओंसे भरा बापूके पास आकर उनके चरणोंमें बैठा था—आजतकके २८ लम्बे बरसोंके निकटतम और अटूट संबंधका पूरा दृश्य बिजलीकी गतिसे घूम गया। और वे बरस कामके बोझसे कितने लदे हुए थे।

जो कुछ हुआ था, उसके अर्थपर मैं विचार करने लगा। पहले मैं घबराहट महसूस करने लगा, लेकिन बादमें धीरे-धीरे यह पहेली अपने आप सुलझने लगी। उस दिन जब बापूने एक आदमीके भी अपना फर्ज पूरी और अच्छी तरह अदा करनेके बारेमें कहा था, तो मुझे ताज्जुब हुआ था कि आखिर उनके कहनेका ठीक-ठीक मतलब क्या है? उनकी मृत्युने उसका जवाब दे दिया। पहले जब गांधीजी उपवास करते, तो वे दूसरोंसे देखने और प्रार्थना करनेके लिए कहते थे। वे कहा करते थे: "जबतक पिता बच्चोंके बीच है, तबतक उन्हें और खुशीसे उछलना कूदना चाहिये। जब मैं चला जाऊँगा, तब आज मैं जो कुछ कर रहा हूँ, वह सब वे करेंगे।" अगर आज जो आगकी लपटें देशको निगल जानेकी धमकी दे रही हैं उन्हें शांत करना है, और बापूने जो आजादी हमारे लिए जीती है उसका फल हमें भोगना है, तो उनकी मौतने हमें वह रास्ता दिखा दिया है, जिस पर हमें चलना है।

—प्यारेलाल

❀

अनुक्रमणिका